जगतविनोद।

कवि पद्माकर रचित ।

मनमोहनतन, घन सघन रमनि राधिका मोर
श्रीराधामुखचन्द को गोकुलचन्द चकोर ॥

जिसको डुमराँवनिवासी नकछेदी
तिवारी ने अति परिश्रम से
शोध कर मुद्रित कराया।

यह पुस्तक बाबू रामकृष्ण वर्म्मा सम्पादक
भारतजीवन बनारस के पास मिलेगी।

॥ काशी ॥
भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ।

सन् १९०२ ई०।

दूसरी बार १०००   मूल्य ॥)
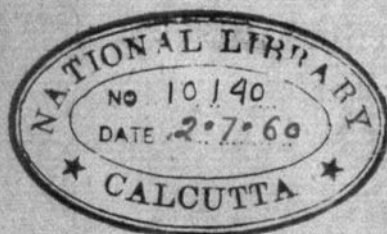
श्रीगणेशाय नम ।

दोहा ।

सिद्धिसदन सुन्दरबदन नन्दनँदन मुदमूल ।
रसिकशिरोमणि साँवरे सदा रहो अनुकूल ॥१॥
जै जै शक्ति शिलामई जै जै गढ़ आमेर ।
जै जैपुर सुरपुर सदृश जो जाहिर चहुँ फेर ॥२॥
जय जगजाहिर जगतपति जगतसिंह नरनाह ।
श्रीप्रतापनन्दन बली रविवंशी कछवाह ॥ ३ ॥
जगतसिंह नरनाह को समुझि सबन को ईस ।
कवि पद्माकर देत है कवित बनाइ असीस ॥४॥

कवित्त ।

छत्रिन के छत्र छत्रधारिन के छत्रपति छाजत छटान छिति छेम के छवैया हो। कहै पद्माकर प्रभाव के प्रभाकर दया के दरियाव हिन्द हद्द के रखैया हो ॥ जागते जगतसिंह साहिब सवाई श्रीप्रताप नृपनन्द कुलचन्द रघुरैया हो । आछे

रहौ राजराज राजन के महाराज कच्छकुलकलस हमारे तो कन्हैया हौ ॥ ५ ॥

आप जगदीश्वर ह्वै जग में विराजमान हौहूँ तो कवीश्वर ह्वै राजते रहत हौं। कहै पद्माकर ज्यों जोरत सुजस आप हौहूँ त्यों तिहारो जस जोर उमहत हौं ॥ श्रीजगतसिंह महाराज मान-सिंहावत बात यह साँची कछू काची ना कहत हौं। आप ज्यों चाहत मेरी कविता दराज त्यों मैं उमिर दराज राज ! रावरी चहत हौं ॥ ६ ॥

दोहा।

जगतसिंह नृप जगत हित हरष हिये निधि नेहु।
कवि पद्माकर सों कह्यो सरस ग्रन्थ रचि देहु ॥
जगतसिंह नृप हुकुम तें पाइ महा मनमोद ।
पद्माकर जाहिर करत जग हित जगतविनोद ॥
नव रस में शृङ्गार रस सिरे कहत सब कोइ ।
सुरस नायिका नायकहिं आलम्बित ह्वै होइ॥८॥
तामें प्रथमहिं नायिका नायक कहत बनाइ ।
जुगति यथामति आपनी सुकविन कों सिरनाइ ॥

अथ नायिका लक्षण।

रससिंगार को भाव उर उपजत जाहि निहारि।
ताही को कवि नायिका बरनत बिबिध विचारि॥

नायिका को उदाहरण।

कवित्त।

सुन्दर सुरङ्ग नैन सोभित अनङ्ग रङ्ग अङ्ग अङ्ग फैलत तरङ्ग परिमल के। बारन के भार सुकुमारि को लचत लङ्क राजै परजङ्क पर भीतर महल के॥ कहै पद्माकर विलोकि जन रीझैं जाहि अम्बर अमल के सकल जल थल के। कोमल कमल के गुलावन के दल के सुजात गड़ि पायन बिछौना मखमल के॥ १२॥

सवैया।

जाहिरै जागत सी जमुना जब बूड़े बहै उमहै वह बेनी। त्यों पद्माकर हीर के हारन गङ्ग तरङ्गन कों सुखदेनी॥ पायन के रँग सों रँगि जात सी भाँतिही भाँति सरस्वति सेनी। पैरै ज-हाँई जहाँ वह बाल तहाँ तहाँ ताल में होत त्रिबेनी॥ १३॥

कवित्त ।

आई खेलि होरी घरै नवलकिशोरी कहूँ बोरी गई रङ्ग में सुगन्धन भकोरे है। कहै पदमाकर इकन्त चलि चौकी चढ़ि हारन के वारन ते फन्द बन्द छोरे है॥ घाँघरे की घूमन सुऊरुन दुबीचै दाबि आँगी हू उतारि सुकुमारि मुख मोरे है। दन्तन अधर दाबि दूनरि भई सी चापि चौवर पचौवर कै चूनर निचोरे है॥ १४॥

दोहा ।

सहजसहेलिनसोंजुतियबिहँसिबिहँसिबतराति ।
सरद चन्द की चाँदनी मन्द परति सौजाति १५॥
कही त्रिविध सों नायिका प्रथम स्वकीया नाम।
पुनि परकीया दूसरो गनिका तीजो वाम ॥१६॥

स्वकीया लक्षण ।

निज पतिही के प्रेममय जाको मन वच काय ।
कहत स्वकीया ताहि सों लज्जा शील सुभाय॥

स्वकीया यथा—कवित्त ।

शोभित स्वकीयागन गुन गनती में तहाँ तेरे नामहीं को एक रेखा रेखियतु है। कहै पदमा-

कर पगी यों पति प्रेमही मैं पदुमिनि तोसी तिया तूही पेखियतु है ॥ सुबरन रूप जैसो तैसो सील सौरभ है याही तें तिहारो तन धन्य लेखियतु है। सोनो मैं सुगन्ध न सुगन्ध मै सुन्यो री सोनो सोनो औ सुगन्ध तोमै दोनो देखियतु है ॥ १८ ॥

दोहा ।

खान पान पीछू करति सोवति पिछिले छोर ।
प्रानपियारे तें प्रथम जगति भावती भोर ॥१९॥
एक स्वकीया की कही कविन अवस्था तीन ।
मुग्धा इक मध्या बहुरि पुनि प्रौढ़ा परवीन ॥२०॥
झलकत आवै तरुणाई नई आसु अँग अङ्ग ।
मुग्धा तासों कहत हैं जे प्रवीन रसरङ्ग ॥ २१ ॥

मुग्धा लक्षण ।

ये अलि या बलि के अधरानि में आनि चढ़ी कछु माधुरई सी । ज्यों पदमाकर माधुरी त्यों कुच दोउन की चढ़ती उनई सी ॥ ज्यों कुच त्योंही नितम्ब चढ़े कछु ज्योंही नितम्ब त्यों चा-

तुरई सी। जानि न ऐसो चढ़ाचढ़ मे किहि धौं कटि बीचही लूट लई सी॥ २२॥

दोहा।

कछु गजगति के आहटनि छिन छिन छीजत सेर।
विधुविकास विकसत कमल कछू दिनन के फेर॥
पल पल पर पलटन लगे जाके अङ्ग अनूप।
ऐसो इक ब्रजबाल को को कहि सकत सरूप॥
यह अनुमांन प्रमानियतु तिय तन जोबन जोति।
ज्यों मेहँदी के पात में अलख ललाई होति॥२५॥
मुग्धा द्विविध बखानहीं प्रथम कही अज्ञात।
ज्ञातयौवना दूसरी भाषत मति-अवदात॥२६॥
जब जोबन को आगमन जानि परत नहिं जाहि।
सो अज्ञातजोबन तिया भाषत सुकवि सराहि॥

अज्ञातयौवना यथा—कवित्त।

ये अलि हमैं तो बात गात की न जानि परै बूझति न काहे यामै कौन कठिनाई है। कहै पद्माकर क्यों अङ्ग न समाति आँगी लागी काह तोहि जागी उर में उचाई है॥ तौऽब तजि पा-

यन चलो है चञ्चलाई किते बावरी बिलोके क्यों न आँखिन में आई है । मेरी कटि मेरी भटू कौन धौं चुराई तेरे कुचन चुराई के नितम्बन चुराई है ॥ २८ ॥

पुनर्यथा सवैया ।

खेद को भेद न कोऊ कहै ब्रत आँखिनहूँ अँसुवान को धारो । त्यों पद्माकर देखती हौ तनको तन कम्प न जात सँभारो ॥ ह्वै धौं कहा को कहा गयो यों दिन है कहि तैं कछु ख्याल हमारो । कानन मै बसी बाँसुरी की धुनि प्रानन मैं बस्यो बँसुरी वारो ॥ २९ ॥

दोहा ।

काह कहौं दुख कौन सों मौन गहौं किहि भाँति ।
घरी घरी यह घाँघरो परत ढोलियै जाति ॥ ३० ॥
उर उकसोहैं उरज लखि धरति क्यों न धनि धीर ।
इनहिं बिलोकि विलोकियतु सौतिन के उर पीर ॥
तन में यौवन आगमन जाहिर जब जिहि होत ।
ज्ञातयौवनानायिका ताहि कहत कविगोत ॥ ३२ ॥

ज्ञातयौवना यथा — सवैया ।

चौक में चौकी जराय-जरी तिहि पै खरी बार बगरत सौंधे। छोरि धरी हरी कञ्चुकी न्हान कों अङ्गन तें जगी जोति के कौंधे॥ छाई उरोजन कीछबि यों पद्माकर देखतही चकचौंधे। भाजि गई लरिकाई मनों लरिकै करिकै दुहुँ दुन्दुभी औंधे ॥ ३३ ॥

पुनर्यथा - सवैया ।

ये वृषभानकिशोरी भई इतै ह्वां वह नन्द-किशोर कहावै। त्यों पद्माकर दोउन पैं नवरङ्ग तरङ्ग अनङ्ग की छावै ॥ दौरैं दुहूँ दुरि देखिवे कों दुति देह दुहूँ की दुहून को भावै। ह्यां इन के रसभीने बड़े दृग ह्वां उनके मसि भींजत आवै ॥ ३४ ॥ दोहा ।

आज कालि दिन द्वैक तें भई औरही भाँति ।
उरज उचौहैं दै उरू तन तकि तिया अन्हाति ॥

नवोढ़ा लक्षण ।

अति डर तें अति लाज तें जो न चहै रति बाम।
तेहि मुग्धा कों कहत हैं सुकवि नवोढ़ा नाम ॥

नवोढ़ा यथा सवैया ।

राजि रही उलही छवि सों दुलही दुरि देखत ही फुलवारी । त्यों पद्माकर बोलै हँसे हुलसै बिलसै मुखचन्द उँज्यारी ॥ ऐसे समै कहुँ चातक को धुनि कान परी डरपी वह प्यारी । चौंकि चकी चमकी चितमें चुप ह्वै रही चञ्चल अञ्चल-वारी ॥ ३९ ॥

दोहा ।

तिय देख्यो पिय स्वप्न में गहत आपनी बाँह ।
नहीं २ कहि जगि भजी जदपि नहीं ढिग नाह॥
पति की कछु परतीत उर धरै नवोढ़ा नारि ।
सो विश्रब्धनवोढ़ तिय बरनत बिबुध विचारि ॥

विश्रब्धनवोढ़ा यथा सवैया ।

जाहि न चाह कहूँ रति की सु कछू पति को पतियान लगी है । त्यों पद्माकर आनन मै रुचि कानन भौंह कमान लगी है ॥ देति पिया न छुवै छतियाँ बतियाँन मै तो मुसुक्यान लगी है । प्रीतमै पान खवाइबे को परजङ्क के पास लौं जान लगी है ॥ ४० ॥

दोहा।

दूरहि तें दृग दै रहति कहति कछू नहिं बात।
छिनक छबीले कों सुतिय कुवन देति क्यों गात॥

मध्या को लक्षण।

इक समान जब ह्वै रहत लाज मदन ये दोइ।
जा तिय के तन में तबहिँ मध्या कहिये सोइ॥

मध्या यथा सवैया।

आई जु चालि गुपाल घरै ब्रजबाल विशाल मृनाल सी बाँहीं। त्यों पद्माकर सूरति मै रति छ्वै न सकै कितहूँ परछाँहीं॥ शोभित शम्भु मनो उर ऊपर मौज मनोभव की मनमाँहीं। लाज विराज रही अँखियाँन में प्रान मै कान्ह जुबान मै नाहीं॥ ४२॥

दोहा।

मदन लाज बस तिय नयन देखत बनत इकन्त।
इँचे खिँचे इत उत फिरत ज्यों दुनारि के कन्त॥

प्रौढ़ा को लक्षण।

ललित लाज कछु मदन बहु सकल केलि की खान
प्रौढ़ा ताही सों कहत सुकविन की मति मानि॥

प्रौढ़ा यथा कवित्त ।

रति विपरीत रची दम्पति गुपति अति मेरे जानि मानि भय मनमथ नेजे तें। कहै पद्माकर पगी यों रसरङ्ग जामें खुलिगे सु अङ्ग सब रङ्गन अमेजे तें ॥ नीलमणि जटित सुबेंदा उच्च कुच पै पस्यो है टूटि ललित ललाट के मजेजे तें । मानो गिस्यो हेमगिरि-शृङ्ग पै सुकेलि करि काढ़ि कै कलङ्क कलानिधि के करेजे तें ॥ ४६ ॥

दोहा ।

तिय तन लाज मनोज की यों अब दशा दिखाति ।
ज्यों हिमन्तऋतु मे सदा घटत बढ़त दिनराति ॥
प्रौढ़ा द्विविध बखानहीं रति-प्रीता इक बाम ।
आनँद अति सम्मोहिता लक्षण इनके नाम ॥

रति-प्रीता यथा सवैया ।

लै पट पीतम के पहिरै पहिराइ पियै चुनि चूनरी खासी । त्यो पद्माकर साँझही तें सिगरी निसि केलि कला परगासी ॥ फूलत फूल गुलाबन के चटकाहट चौंकि चली चपला सी ।

कान्ह के कानन आँगुरी नाइ रही लपटाइ लवङ्गलता सी ॥ ४९ ॥

दोहा।

करति केलि पिय हिय लगी कोककलनि अवरेखि।
विमुद कुमुद लौं ह्वै रही चन्द मन्ददुति देखि ॥

आनँदसम्मोहा यथा सवैया।

रीति रची विपरीत रची रति प्रीतम सङ्ग अनङ्ग भरी मैं। त्यों पदमाकर टूटे हरा ते सरासर सेज परे सिगरी मैं ॥ यों करि केलि विमोहित ह्वै रही आनँद की सुघरी उघरी में। नीवी औ बार सम्हारिबे की सु भई सुधि नारि कों चारि घरी मैं ॥ ५१ ॥

दोहा।

भई मगन यों नागरी सुलहि सुरति-आनन्द ।
अँग अँगोछि भूषन बसन पहिरावत नँदनन्द ॥
मान समै मध्या त्रिबिध त्रिधा कहत प्रौढ़ाहिं।
धीरा बहुरि अधीर गनि धीराधीरा ताहिं॥५३॥
कोप जनावै व्यंग्य सों तजै न पति-सनमान ।
मध्या धीरा कहत हैं ताकों सुकवि सुजान ॥५४॥

मध्या धीरा को उदाहरण—कवित्त ।

पीतम के सङ्गही उमगि उड़ि जैवे को न एती अङ्ग अङ्गन परन्द पखियाँ दई । कहै पद्माकर जे आरती उतारैं चौंर ढारैं श्रम हारैं पै न ऐसो सखियाँ दई ॥ देखि दृग द्वैही सों न नेकहु अघैये इन ऐसे भुकाभुक मै भपाक भखियाँ दई । कीजे कहा राम स्यामआनन विलोकिवे कों विरचि विरञ्चि ना अनन्त अँखियाँ दई ॥ ५५ ॥

पुनर्यथा सवैया ।

भाल पै लाल गुलाल गुलाब सौं गेरि गरै गजरा अलबेलौ । यों वनि बानिक सों पद्माकर आये जु खेलन फाग तौ खेलौ ॥ पै इक या छवि देखिबे के लिये मो विनती कै न भोरिन भेलौ । राउरे रंग रँगी अँखियान में ए बलवीर अबीर न मेलौ॥ ५६ ॥

दोहा ।

जो जिय मै सो जीभ मै रमन रावरे ठौर ।
आज काल्हि कै नरन के जीभ कछू जिय और ॥

करै अनादर कन्त को प्रगट जनावै कोप ।
मध्य अधीरा नायिका ताहि कहत करि चोप ॥

मध्या अधीरा को उदाहरण—कवित्त ।

भूलि से भ्रमे से काहि सोचत श्रमे से अकु-लाने से बिकाने से ठगे से ठौक ठाये हौ। कहै पद्माकर सुगोरे रंग बोरे दृग थोरे थोरे अजब कुसुम्भी करि ल्याये हौ ॥ आगे को धरत पर पीछे कों परत पग भारहो तें आज कछु ओरै छबि छाये हौ। कहाँ आये तेरे धाम कौन काम घर जानि तहाँ जाउ कहाँ जहाँ मन धरि आये हौ ॥ ५८ ॥

दोहा ।

दाहक नाहक नाह मुहि करिहौ कहा मनाइ।
सुबस भये जा तीय के ताके परसो पाइ ॥६०॥
धीर बचन कहि कै जो तिय रोइ जनावै रोस।
मध्या धीराधीर तिय ताहि कहत निरदोस ॥६१॥

मध्या धीराधीरा को उदाहरण—कवित्त ।

ए बलि कहौ हो किन का कहत कन्त अरी रोस तज रोस कै कियो मैं का अचाहै कौ। कहै

पद्माकर यहै तो दुख टूरि करी दोस न कछू है तुम्हे नेह निरबाहे की ॥ तो पै इत रोवति कहा हौ कहो कौन आगे मेरेई जु आगे किये आँसुन उमाहे की । को हौं मैं तिहारी तूँ तौ मेरी प्रानप्यारी अजू छाती जो पियारी तब रोती कहो काहे की ॥ ६२ ॥

दोहा ।

करि आदर तिय पीय को देखि दृगन अलसानि ।
सुमुख मोरि बरसन लगी लै उसास अँसुआनि॥
उर उदास रति तै रहै अति आदर की खानि ।
प्रौढ़ा धीरा नायिका ताहि लीजिये जानि॥६४॥

प्रौढ़ा धीरा को उदाहरण—कवित्त ।

जगर मगर दुति दूनी केलि-मन्दिर मैं बगर बगर धूप अगर बगार्‌यौ तू । कहै पद्माकर त्यों चन्द तें चटकदार चुम्बन मैं चारु मुख चन्द अनु-सार्‌यो तू ॥ नैनन म बैनन मै सखी चौर सैनन मै जहाँ देखौ तहाँ प्रेम पूरण पसार्‌यो तू । छपत छपाये तऊ छल न छबीली अब उर लगिबे को बार हार न उतार्‌यो तू ॥ ६५ ॥

दोहा ।

दरस दौरि पिय-पग परसि आदर कियो अछेह ।
तेह गेहपति जानिगो निरखि चौगुनो नेह ॥६६॥
कछु तरजन ताड़न कछू करि जु जनावै रोस ।
प्रौढ़ अधीरा नायिका निरखि नाह को दोस ॥

प्रौढ़ा अधीरा को उदाहरण—कवित्त ।

रोस करि पकरि परोस तैं लियाई घरै पी को प्राणप्यारी भुज-लतनि भरै भरै । कहै पद्माकर ए ऐसो दोस कीजै फेर सखिन समीप यों सुनावति खरै खरै ॥ त्यों छल छपावै बात हँसि बहरावै तिय गदगद कण्ठ दृग आँसुन भरै भरै, ऐसी धन धन्य धनी धन्य है सु ऐसो जाहि फूल की छरी सों खरी हनति हरै हरै ॥ ६८ ॥

दोहा ।

तेह तरेरे दृगनही राखति क्यों न अँगोट ।
छैल छबीले पै कहा करति कमल की चोट ॥६९॥
रति तैं रुखीं ह्वै जहाँ डर जु दिखावै बाम ।
प्रौढ़ा धीर अधीर तिय ताहि कहत रसधाम॥७०॥

प्रौढ़ा धोरा अधीरा को उदाहरण—कवित्त ।

छवि छलकन भरी पीक पलकन त्योंही श्रम जल-कन अलकन अधिकाने ज्वै। कहै पदमाकर सुजान रूपखानि तिया ताकि ताकि रही ताहि आपुहि अजाने ह्वै ॥ परसत गात मनभावन के भावती की गई चढ़ि भौंहें रही ऐसी उपमाने छै। मानो अरबिन्दन पै चन्द को चढ़ाय दीनी मान कमनैत बिन रोदा की कमाने है ॥ ७१ ॥

दोहा ।

अनत रमे पति की सुरति गहिगहि गहकि गुनाह।
दृग मरोरि मुख मोरि तिय छुवन देति नहिं छाँह॥
बरनत जेठ कनिष्ठिका जहँ व्याही तिय दोइ ।
पिय प्यारी जेठा कहो अतिप्यारी लघु सोइ ॥७३॥

अथ ज्येष्ठा कनिष्ठा को उदाहरण - कवित्त ।

दोऊ छवि छाजती छबीली मिलि आसन पे जिनहिं बिलोकि रह्यो जात न जिते जिते । कहै पदमाकर पिछौंहैं आइ आदर सों छलिया छ-बीलो छैल बासर बिते बिते ॥ मूँदे तहाँ एक अलबेली के अनोखि दृग सु दृग-मिचाउनी के

ख्यालन हितै हितै । गेसुक नवाइ ग्रीवा धन्य धन्य दूसरी को औचक अचूक मुख चूमत चितै चितै ॥ ७५ ॥

जल बिहार पिय प्यारि को देखति क्यों न सहेलि।
लै चुभकी तजि एक तिय करत एकसों केलि॥७६॥

इति स्वकीया ।

अथ परकीया लक्षण—दोहा ।

होइ जु तिय परपुरुषरत परकीया सो बाम ।
ऊढ़ा प्रथम बखानहीं बहुरि अनूढ़ा नाम ॥ ७७ ॥
जो व्याही तिय और की करत और सों प्रीति ।
ऊढ़ा ताकों कहत हैं हिये राखि रस-रीति ॥७८॥

ऊढ़ा को उदाहरण—कवित्त ।

गोकुल के कुल के गली के गोप गाँउन के जौ लगि कछू को कछू भारत भनैं नहीं । कहै पद्माकर परोस पिछवारन ते द्वारन ते दौरि गुन औगुन गनैं नहीं ॥ तौलौं चलि चातुर सहेली याइ कोऊ कहूं नीके कै निचोरै ताहि करत मनै नहीं । हौं तो स्याम रंग मैं चुराइ चित चोरा चोरी बोरत तौ बोरयो पै निचोरत बनै नहीं ॥७९॥

दोहा।

चढ़ो हिंडोरे हरषि हिय सजि तिय बसन सुरङ्ग।
तन झूलत पिय-संग मै मन झूलत हरि-संग ८०॥
अनव्याही तिय होत जहँ सरस पुरुष रस-लीन।
ताहिँ अनूढ़ा कहत हैं कवि पण्डित परवीन॥८१॥

अनूढ़ा को उदाहरण—सवैया।

जाँव नहीं कुल गोकुल मै अरु दूनी दुहूं दिस दीपति जागै। त्यों पदमाकर जोई सुनै जहाँ सो तहँ आनँद मैं अनुरागै॥ ए दई ऐसो कछू कर ब्यौंत जु देखैं अदेखिन के दृग दागैं। जामै निसङ्क ह्वै मोहन को भरियै निज अङ्क कलङ्क न लागै॥ ८२॥

दोहा।

कुशल करै करतार तो सकल शङ्क सियराय।
यार क्वाँरपन को जु पै कहूं ब्याह लै जाय॥८३॥
इक परकीया के कहैं षट् विधि भेद बखानि।
प्रथमहिँ गुप्ता जानियै बहुरि विदग्धा मानि॥८४॥
लच्छित लच्छिता तीसरी चौथी कुलटा होइ।
पँचई मुदिता षष्टई है अनुसयना सोइ॥८५॥

कही जु गुप्ता तीन बिधि सु कविनहूं समुझाइ।
भूतसुरतिसंगोपना प्रथम भेद यह आइ ॥ ८६ ॥
वर्त्तमान रतिगोपना भेद दूसरो जान ।
पुनि भविष्यरतिगोपना लच्छन नाम प्रमान॥८७॥

भूतिसुरतिसंगोपना को उदाहरण—कवित्त ।

आली हौं गई ही अज भूलि बरसाने कहूं तापै तू परै है पदमाकर तनैनी क्यौं । ब्रज बनिता वै बनितान पै रची है फाग तिनमैं मै जु ऊधमिनि राधा मृगनैनी यौं॥ घोरि डारी केसर सुबेसर बिलोरि डारी बोरि डारी चूनरि चुचात रंग रैनी ज्यौं । मोहि झकझोरि डारी कञ्चुकी मरोरि डारी तोरि डारी कसनि बिथोरि डारी बेनी त्यौं ॥ ८८ ॥

दोहा ।

कुटत कम्पनहिंरैनदिन विदित बिदारनि काय।
अति शीतल हेमन्त की अरी जरी यह बाय ॥८९॥

वर्त्तमानसुरतिगोपना -- सवैया ।

ऊधम ऐसो मचो ब्रज मैं सबै रंग तरंग उमंगनि सीचैं । त्यौं पदमाकर छज्जनि छातनि छ्वै

छिति छाजती केसर कीचैं ॥ दै पिचकी भजी भीजी तहाँ परे पीछे गोपाल गुलाल उलीचैं । एकही संग इहां रपटे सखी ए भये ऊपर हौं भई नीचैं ॥ ९० ॥

दोहा ।

चढ़त घाट विचल्यौ सुपग भरी आन इन अङ्क ।
ताहि कहा तुम तक रहीं यामें कौन कलङ्क ?

अथ भविष्यसुरतिगोपना—कवित्त ।

आज तें न जैहों दधि बेचन दुहाई खाँउँ भैया की कन्हैया उत ठाढ़ाई रहत है । कहै पदमाकर त्यों साँकरी गली है अति इत उत भाजिबे कों दाँउ ना लहत है ॥ दौरि दधि-दान काज ऐसो अमनेक तहाँ आली बनमाली आइ बहियाँ गहत है । भादों सुदी चौथ को लख्योरी मृगअङ्क यातें झूठहू कलङ्क मोहि लागिबो च-हत है ॥ ९२ ॥

दोहा ।

कोऊ कछु अब काहू पै मति लगाइये दोष ।
होन लग्यो व्रज गलिन मे हुरिहारिन को घोष॥

द्विविध विदग्धा जानिये वचन विदग्धा एक ।
क्रियाविदग्धा दूसरी भाषत विदित विवेक ॥९४॥
वचनन की रचनानि सों जो साधै निज काज ।
वचनविदग्धा नायिका ताहि कहत कविराज ॥

वचनविदग्धा को उदाहरण—सवैया ।

जब लौं घर को धनी आवै घरै तब लौं तौ काहू चित दैवो करौ। पद्माकर ये बछरा अपने बछरान के संग चरैवो करौ। अरु औरन के घर तें हम सों तुम दूनी दुहावनी लैवो करौ। नित साँझ सवेर हमारी हहा हरि गैया भला दुहि जैवो करौ ॥ ९६ ॥

पुनर्यथा ।

पिय पागे परोसिन के रस मैं बस मै न कहूं बस मेरे रहैं । पद्माकर पाहुनी सी ननदी न नदी तजे पै अवसेरे रहैं ॥ दुख और यों का सों कहौं को सुनै ब्रज की बनिता दृग फेरे रहैं। न सखी घर साँझ सवेरे रहैं घनस्याम घरी घरी घेरे रहैं ॥ ९७ ॥

दोहा।

कल करील को कुञ्ज मैं रह्यो अरुझि मो चीर।
ये बलबीर अहीर के हरत क्यों न यह पीर॥९८॥
कनकलता श्रीफल फरी रही विजन बन फूलि।
ताहि तजत क्यों बावरे अरे मधुप मतिभूलि॥
जो तिय साधै काज निज करि कछु क्रियासुजान।
क्रियाविदग्धा नायिका ताहि लीजिये जान॥१००॥

क्रियाविदग्धा को उदाहरण—कवित्त।

वञ्जुल निकुञ्जन मैं मञ्जुल महल-मध्य मोतिन को झालरें किनारिन में कुरविन्द। आइगे तहाँई पदमाकर पियारे कान्ह आनि जुरि गये त्यों चबाइन के नीके बृन्द॥ बैठी फिरि पूतरी अनूतरी फिरंग कैसो पीठ दै प्रवीनी दृग दृगन मिलै अनिन्द। जाके अवलोकि रही आयै रसमन्दिर मैं इंदीवर-सुन्दर गुविन्द को मुखारबिन्द॥ १०१॥

दोहा।

करि गुलाल सों धूंधुरित सकल ग्वालिनी ग्वाल।
रोरी मोहन की सु मिस गोरी गह्यो गोपाल१०२

जा तियको जिय आनरत जानि कहै तिय आन।
ताहि लच्छिता कहत हैं जे कवि कलानिधान॥

लच्छिता को उदाहरण – सवैया।

ब्रजमण्डली देख सबै पदमाकर ह्वै रही यों चुप चापरी है। मनमोहन की बहियां मै छुटी उपटी यह बेनी दिखा परी है॥ मकराकृत कुण्डल की झलकं इतहूं भुज मूल पै छापरी है। इनको उनसे जो लगी अँखिया कहिये तो हमै कछू का परी है॥ १०४॥

पुनर्यथा।

बीतिवै हो मु तौ बीत चुकी अब आँजती हौ किहिँ काज लुकंजन। त्यौं पदमाकर हाल कहै मति लाल करौ दृग ख्याल के खंजन॥ देखत कंचुकी कँचुकी के बिच होत छिपाये कहा कुच॥ कंजन। तोहि कलंक लगाइबे को लग्यो कान्हहिं के अधरान में अंजन॥ १०५॥

दोहा।

घर न कन्त हेमन्त रितु राति जागती जात।
द्वकि द्योस सोवन लगी भली नहीं यह बात॥

है बहु लोगन सों जु तिय राखति रति की चाह।
कुलटा ताहि बखानहीं जे कबीन के नाह॥१०७

कुलटा को उदाहरण—सवैया।

यौ अलवेली अकेली कहूं सुकुमार सिंगारन कै चलै कै चलै। त्यों पद्माकर एकन के उर में रसबीजनि ह्वै चलै ह्वै चलै॥ एकन सों बतराइ कछू छिन एकन को मन लै चलै लै चलै। एकन कों तकि घूंघट में मुख मोरि कनैखिन दै चलै दै चलै॥ १०८॥

दोहा।

बिपिन बाग बीथी जहां प्रबल पुरुष मय ग्राम।
कामकलित बलि काम कों तहां तनिक बिश्राम॥
सुनत लखत चितचाह की बात घात अभिराम।
मुदित होइ जो नायिका ताको मुदिता नाम॥

मुदिता को उदाहरण—कवित्त।

ब्रन्दाबन बीथिन बिलोकन गई ही जहां राजत रसाल बन ताल रु तमाल को। कहै पद्माकर निहारत बन्योई तहां नेहिन को नेह प्रेम अद्भुत ख्याल को॥ दूनो दूनो बाढ़त सुपूनौ

को निसा मै अहो आनँद अनूप रूप काहू ब्रज-बाल को। कुंज तैं कहूं को सुनि कान्त को गमन लखि आगमन तैसो मनहरन गोपाल को॥

दोहा।

परखि प्रेम बस परपुरुष हरषि रही मति मैन।
तब लगि झुकि आई घटा अधिक अँधेरी रैन॥
कही सुअनुसयना त्रिविध प्रथम भेद यह जानि।
बर्तमान संकेत के विघटन ते सुखहानि॥११३॥

पहिली अनुसयना को उदाहरण—कबित्त।

सूने घर परम परोसी के सुजान तिया आई सुनि सुनि कै परोसिन मनो अराति। कहै पद्माकर सु कंचनलता सी लचि ऊँची लेति सांस यों हिये में त्यों नहीं समाति॥ जाइ आइ जहां तहां बैठि उठि जैसे तैसे दिन तो बितायो बधू बीतति है कैसे राति। ताप सरसानी देखैं अति अकुलानी जऊ पति उर आनी तऊ सेज में बिलानी जाति॥ ११४॥

दोहा।

सौति-सँजोग न रोग कछु नहिं वियोग बलवंत।

ननद होत क्यों दूबरी लागत ललित बसंत ॥ *
होनहार संकेत को धरि अभाव उर माहिं।
दुखित होत जो दूसरी कहु अनुसयना ताहिं॥११६॥

दूसरी अनुसयना को उदाहरण—कवित्त ॥

चालौ सुनि चन्दमुखी चित मैं सुचैन करि तित बन बागन घनेरे अलि घूमि रहे। कहै पद्माकर मयूर मंजु नाचत हैं चाइ सौं चकोरिन चकोर चूमि चूमि रहे॥ कदम अनार आम अगर असोक थोक लतन समेत लोने लोने लगि भूमि रहे। फूल रहे फल रहे फैलि रहे फबि रहे झपि रहे झूलि रहे झुकि रहे झूमि रहे॥ ११७॥

दोहा।

निघटत फूल गुलाबके धरति क्यों न धन धीर।
अमल कमल फूलन लगे बिमल सरोवर-नीर॥
जो तिय सुरत-सँकेत को रमन-गमन अनुमान।
व्याकुल होति सु तीसरी अनुसयना पहिचान॥

तीसरी अनुसयना को उदाहरण—सवैया।

चारिहूं ओर तें पौन झकोर झकोरनि घोर

* बसंत में पतझर होने से संकेतस्थान नष्ट हुआ।

घटा घहरानी। ऐसी समै पद्माकर काहु की आवत पीत पटी फहरानी॥ गुंज की माल गोपाल गरे व्रजबाल विलोकि थकी थहरानी। नीरज ते कढ़ि नीर-नदी छबिछीजत छीरज पै छहरानी।

दोहा।

कल करील की कुंज तें उठत अतर की बोइ।
भयो तोहि भाभी कहा उठी अचानक रोइ॥१२१॥

इति परकीया निरूपणं॥ अथ गनिका लक्षणं॥

दोहा।

करै और सों रति रमनि इक धन हीं के हेत।
गनिका ताहिं बखानहीं जे कवि सुमति-निकेत॥

गनिका को उदाहरण—कवित्त।

आरस सों आरत सम्हारत न सीसपट गजब गुजारत गरीबन की धार पर। कहै पद्माकर सुगन्ध सरसावै सुचि बिथुरि बिराजैं बार हीरन के हार पर॥ छाजति छबीली छिति छहरि छरा की छोर भोर उठि आई केलिमंदिर के द्वार पर। एक पग भीतर सु एक देहरी पै धरे एक कर कंज एक कर है किवार पर॥ १२३॥

दोहा।

तन सुबरन सुबरन बसन सुबरन उकति उछाह।
धनि सुबरन मै ह्वै रही सुबरन ही को चाह॥
प्रथम कही जे नायिका ते सब त्रिविधि बिचार।
अन्यसुरति दुखिता मुदृक मानवती पुनि नारि॥
फिरि वक्रोकति गर्विता इहिं विधि भिन्न प्रकार।
तिन के लच्छण लच्य सब भाषत मति अनुसार॥
प्रीतम प्रीति प्रतीति जो और तिया तन पाइ।
दुखित होइ सो जानिये अन्यसुरतदुखिताइ॥

अन्यसुरतदुखिता को उदाहरण—कबित्त।

बोलति न काहे एरी ? पूछे बिन बोलौं कहा, पूछति हौं कहा भई खेद अधिकाई है ?। कहै पद्माकर सु मारग के गये आये, साँची कहु मोसों आज कहाँ गई आई है ? ॥ गई आई हौं तो पास साँवरे के, कौन काज ? तेरे लिये ल्यावन सु तेरिये दुहाई है। काहे ते न ल्याई फिरि मोहन बिहारी जू कों ? कैसे वाहि ल्याऊँ ? जैसे वाको मन ल्याई है॥ १२८॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

धोइ गई केसर कपोल कुच गोलन की पीक लीक अधर अमोलन लगाई है। कहै पद्माकर त्यौं नैनहूं निरंजन भे तजत न कंप देह पुलकन छाई है॥ बाद मति ठाने झूठवादिन भईरी अब दूतिपनो छोड़ धूतपन मे सुहाई है। आई तोहि पीर न पराई महा-पापिन तूं पापी लौं गई न कहूं बापी न्हाय आई है॥ १२९॥

दोहा।

खान पान शय्या शयन जासु भरोसे आइ ।
करै सो छल अलि आपु सौं तासौं कहा बसाइ॥
पिय सौं करै जु मान तिय वहै मानिनी जान।
ताको कहत उदाहरण दोहा कबित बखान॥१३१

मानिनी को उदाहरण—सवैया।

मोहि तुम्हैं न उन्हैं न इन्हैं मनभावती कौं सु मनावन ऐहै। त्यौं पद्माकर मोरन को सुनि सोर कहो नहिँ को अकुलैहै॥ धीर धरो किन मेरे गुबिन्द घरोक में जो या घटा घहरैहै। आपुहिँ तें तजि मान तिया हरुवै हरुवै गरुवै लगि जैहै॥ १३२॥

दोहा ।

और तजे तौरहु तजी भूषन अमल अमोल ।
तजन कह्यो न सुहाग मैं अंजन तिलक तमोल ॥
वह वक्रोकति गर्विता द्विविध कहत रसधाम ।
प्रेमगर्विता एक पुनि रूपगर्विता नाम ॥ १३४ ॥
करै प्रेम को गर्व जो प्रेमगर्विता नारि ।
रूपगर्विता होत वह रूप गर्व को धारि ॥ १३५ ॥

प्रेमगर्विता को उदाहरण—सवैया ।

मो बिन माइ न खाइ कछू पदमाकर त्यौं भई भाभी अचेत है । बीरन आये लिवाइवे कों तिनकी मृदुबानि हूं मानि न लेत है ॥ प्रीतम को समुझावति क्यौं नहीं ये सखी तूं जु पै राखति हेत है । और तौ मोहि सबै सुख री दुखरी यहै माइके जान न देत है ॥ १३६ ॥

पुनर्यथा ।

हौं अलि आज बड़े तरके भरिकै घट गोरस को पग धारो । त्यौं कब को धौं खरो री हुतौ पदमाकर मो हित मोहनीवारी ॥ साँकरी खोर मे काँकरी की करि चोट चलो फिर लौट नि-

हारौ । ता छिन तैं इन आँखिन तैं न कढ़्यो वह माखन चाखनहारौ ॥ १३७ ॥

दोहा ।

कछु न खाति अनखाति अति बिरहबरी बिललाति।
अरी सयानी सौति की बिपति कही नहिं जात ॥

रूपगर्बिता को उदाहरण—सवैया ।

है नहिं माइकौ मेरी भटू यह सासुरो है सब की सहिबो करौ । त्यों पद्माकर पाइ सोहाग सदाँ सखियानहुँ को चहिबौ करौ ॥ नेहभरी बतियाँ कहिकै नित सौतिन की छतियाँ दहिबौ करौ ॥ चन्द्रमुखी कहैं होती दुखी तौ न कोऊ कहैगो सुखी रहिबो करौ ॥ १३९ ॥

दोहा ।

निरखि नैन मृग मीन से उठी सबै मिलि भाखि ।
परघर जाइ गँवाइ रिस हौं आई रस राखि ॥

अथ दशविधिनायिका कथनम्—दोहा ।

प्रोषितपतिका खण्डिता कलहान्तरिता होइ ।
विप्रलब्ध उत्कण्ठिता वासकसज्या जोइ ॥१४१॥
स्वाधिनपतिकाहू कहत अभिसारिका बखानि ।

प्रगट प्रवत्स्यत्प्रेयसी आगतपतिका जानि ॥१४२॥
ये सब दसविध नायिका कविन कही निरधारि।
तिनके लच्छण लच्छ सब क्रम तें कहत बिचारि॥
पिय जाको परदेस मैं प्रोषितपतिका सोइ।
उदित उद्दीपन तें जु तन सन्तापित अति होइ।

मुग्धा प्रोषितपतिका—कवित्त।

मँागि सिख नौ दिन की न्यौते गे गोविन्द तिय सौं दिन समान छिन मान अकुलाव है। कहै पद्माकर छपाकर छपाकर तैं बदन छपाकर मलीन मुरझावै है॥ बूझत जू कोऊ कै कहा री भयो तोहिँ तब औरही को औरै कछू बेदन बतावै है। आँसू सकै मोचि न सकोच बस आलिन मैं उलही बिरह-बेलि दुलही दुरावै है॥ १४५॥

पुनर्यथा—सवैया।

बालम के बिछुरे ब्रजबाल को हाल कह्यो न परै कछु छांहो। चूसी गई दिन तीन ही मै तब पोधि लौं क्यौं बचिहै छबि छाहीं॥ तीर

सों धीर समीर लगै पद्माकर बूझि हूँ बोलत नाहीं। चन्द उदै लखि चन्दमुखी मुखमन्द ह्वै पैठति मन्दिर माहीं ॥ १४६ ॥

दोहा।

भरति उसासन दृग भरति करति गेह के काज।
पल, पल पर पीरी परति परी लाज के राज॥ १४७॥

मध्याप्रोषितपतिका—सवैया ।

अब ह्वै है कहा अरविन्द सों आनन इन्दु के हाय हवाले पर्यो। पद्माकर भाषै न भाषै बनै जिय ऐसे कछूक कसाले पर्यो ॥ इक मीन बिचारो बिध्यो बनसी पुनि जाल के जाइ दुमाले पर्यो। मन तो मनमोहन के सँग गो तन लाज मनोज के पाले पर्यो ॥ १४८ ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

ऊबत हौ डूबत हौ डगत हौ डोलत हौ बोलत न काहे प्रीति रीतिन रितै चलै। कहै पद्माकर त्यों उससि उसासनि सो आँसू वे अपार आइ आँखिन इतै चलै॥ औधिही के आगम लौं रहत बनै तो रहौ बीचही क्यों बैरी बन्ध

बेदनि बितै चलै। ये रे मेरे प्रान कान्ह प्यारे के चलाचल मै तब तौ चले न अब चाहत कितै चलै ॥ १४९ ॥

दोहा।

रमन आगमन औधि लौं क्यों जिवाइयतु याहि।
रहतकण्ठगतआधियैआधीनिकरतिआहि॥१५०॥

प्रौढ़ाप्रोषितपतिका—कवित्त।

लागत बसन्त के सु पाती लिखी प्रीतम को प्यारी परवीन है हमारी सुधि आनवी । कहै पद्माकर इहाँ को यों हवाल बिरहानल को ज्वाल सो दवानल तें मानवी॥ जब को उसासन को पूरो परगास सो तो निपट उसास पौनहूँ तै पहिचानवी। नैनन को ढङ्ग सो अनङ्ग पिचकारिन तैंगातन कोरङ्ग पीरे पातन तैं जानवी॥

दोहा।

बरसत मेह अछेह अति अवनि रही जल पूरि।
पथिक तऊ तुव गेह तें उठत भभूरन धूरि॥१५२॥

परकीयाप्रोषितपतिका—सवैया।

न्यौते गये नँदलाल कहूँ सुनि बाल बिहाल

वियोग की घेरो । ऊतरु कौनहू के पद्माकर दै फिरै कुञ्ज गलीन मै फेरी ॥ पावै न चैन सु मैन के बाननि छोत छिनैछिन छीन घनेरी । बूझै जु कन्त कहै तो यहै तिय पीउ पिराति है पाँसुरी मेरी ॥ १५३ ॥

दोहा ।

विथित वियोगिनि एक तू यों दुख सहत न काइ ।
ननद तिहारे कन्त को पन्थ विलोकत जाइ ॥

अथ गनिकाप्रोषितपतिका ।

बीर अबीर अभीरन को दुख भाषै बनै न बनै बिन भाषैं । त्यों पद्माकर मोहन मीत के पाये सँदेस न आठये पाखैं ॥ आये न आप न पाती लिखी मन की मनही में रही अभिलाखैं । सीत के अन्त बसन्त लग्यो अब कौन के आगे बसन्त लै राखैं ॥ १५५ ॥

दोहा ।

पग अङ्कुस करमै कमल करि जु दियो करतार ।
सु सखि सफल ह्वै है तबहिं जब ऐहैं घर यार ॥

खण्डिता का लक्षण।

अनत रमै रति चिन्ह लखि पीतम के सुभ गात।
दुखित होइ सो खण्डिता बरनत मति-अवदात॥

मुग्धाखण्डिता कवित्त।

बैठी परजङ्क पै नवेली निरसङ्क जहाँ जागी जोति जाहिर जवाहिर की जागै ज्यों। कहै पद्‌माकर कहूं तैं नन्द नन्दनहूं औचकही आइ अलसाय प्रेम पागै यों॥ झपकौंहैं पलनि पिया के पीक-लीक लखि झुकि झहराइहूं न नेक अनुरागै त्यों। वैसही मयङ्कमुखी लागत न अङ्क हुतो देखि के कलङ्क अब एरी अङ्क लागै क्यों॥

दोहा।

बिन गुन माल गोपाल उर क्यों पहिरी परभात।
चकित चित्त चुप ह्वै रही निरखि अनोखी बात॥

मध्या खण्डिता को उदाहरण—कवित्त।

ख्याल मन भाये कहूं करिकै गोपाल घरै आये अति आलस मढ़ेई बड़े तरकै। कहै पद्‌माकर निहारि गजगामिनी के गजमुकतान के हिये पै हार दरकै॥ एतै पै न आनन ह्वै नि-

कसे बधू के बैन अधर उराहनै, सु दीबै काज फरके। कन्धन तें कञ्चुकी भुजान तें सु बाजूबन्द पौंचन तें कङ्कन हरेई हरे सरके ॥ १६० ॥

दोहा।

रसिकराज आलस भरे खरे दृगन की ओर ।
कछुक कोप आदर कछू करत भावती भोर ॥

प्रौढ़ा खण्डिता को उदाहरण—कवित्त।

खाये पान बीरी सी बिलोचन बिराजैं आज अञ्जन अँजाये अधरा धरा अमी के हैं कहै पद्माकर गुनाकर गुबिन्द देखौ आरसी लै अमल कपोल किन पीके हैं॥ ऐसो अवलोकबेई लायक मुखारबिन्द जाहिं लखि चन्द अरबिन्द होत फीके हैं। प्रेमरस पागि जागि आये अनुरागि यातैं अब हम जानो के हमारे भाग नीके हैं ॥१६२॥

दोहा।

ताकि रहति छिन और तिय लेत और को नाउँ।
ये बलि ऐसे बलम का बिबिध भाँति बलिजाउँ ॥

परकीया खंडिता—कबित्त।

एहो ब्रजठाकुर ठगोरी डार कीन्ही तब बौरी बिन काज अब ताकी लाज मरिये। कहै

पद्माकर हूते पै ये रँगीलो रूप देखि बिन देखे कहो कैसे धीर धरियै ॥ अंकहू न लागो पै कलङ्किनि कहाई यातैं अरज हमारी एक याको अनुसरियै । सांझ के सवेरे दिन हमयें दिवारी फाग कबहूं भलै जु भलै आइबो तो करियै॥१६४॥

पुनर्यथा—सवैया ।

सीख न मानी सयानी सखीन कों यौं पद्माकर कीअ मनै को ॥ प्रीति करी तुम सों बजि कै सु बिसारि करो तुम प्रीति घनै की ॥ रावरी रीति लखी इमि सांवरे होति है संपति ज्यों सपने की । सांचहू ताको न हात भला जा न मानत है कही चार जनै को ॥ १६५ ॥

पुनर्यथा—कवित्त ।

साहसहूं न कहू रुख आपनी माखें बनै न बनै बिन भाखैं । त्यों पद्माकर यों मग में रँग देखतिहौं कब को रुख राखैं ॥ बा बिधि सांवरे रावरे को न मिलै मरजी न मजा न मजाखैं । बोलनि वा न बिलोकनि प्रीति की बो मन बे न रहो अब आंखैं ॥ १६६ ॥

दोहा ।

गयो न गोकुल कुंज घनो रमन रावरे हेत ।
सु तुम चोरि चित चोर लौं भोर दिखाई देत ॥

गनिका खंडिता—कवित्त ।

गोस पेच कुण्डल कलङ्गी सिरपेंच पेंच पेंचन तें खैंचि बिन बेंचे वारि आए हो । कहै पदमाकर कहां वा मूरि जीवन की जाको पग धूरि पगरी पै धारि आए हो ॥ वे गुन के सार ऐसे बेगुन के हार अब मेरी मनुहार को वृथा हीं धरि आए हो । पासा सार खेलि कित कौन मनुहारिन सों जीत मनुहारिन मनु हारि हरि आए हो ॥१६८॥

दोहा ।

बड़े साह लखि हम करी तुमसों प्रीति बिचारि ।
कहा जानि तुम करत हो हमैं और की नारि ॥

कलहांतरिता लच्छण—दोहा ।

प्रथम कछू अपमान करि पियको फिरि पछिताइ ।
कलहांतरिता नायिका ताहि कहत कविराइ ॥

मुग्धा कलहांतरिता—सवैया ।

बारी बहू मुरझानी बिलोकि जिठानी करै उपचार किताको । त्यों पदमाकर ऊँचो उसास

लखै मुख सास को ह्वै रह्यो फीको ॥ एकै कहै इन्हैं डीठि लगी पर भेद न कोऊ लहै दुलही को । ह्वै कै अजान जो कान्ह सों कीन्हो गुमान भयो वहै ज्यानही जी को ॥ १७१ ॥

दोहा ।

प्रथम केलि तिय कलह को कथा न कछु कहि जाइ।
अतन ताप तनही सहै मनही मन अकुलाइ॥ १७२॥

मध्या कलहांतरिता - कवित्त ।

झालरनदार झुकि झूमत बितान बिछे गहब गलीचा अरु गुलगुली गिलमैं । अगर मगर पदमाकर सु दीपन की फैली जगा ज्योति केलिमन्दिर अखिल मैं ॥ आवत तहाँई मनमोहन को लाज मैन जैसी कछू करी तैसी दिल ही को दिल मैं । हरि हरि बिलमै न लीन्हो हिल मिल मै रही हौं हाइ मिल मैं प्रभा की झिलमिल मै ॥ १७३ ॥

दोहा ।

ल्यावो पियहि मनाइ यह कह्यो चहति रहि जाति।
कलह कहर की लहर मैं परी तिया पछिताति ॥

प्रौढ़ा कलहांतरिता—कवित्त।

ए अलि हूकन्त पाइ पाइन परे है आइ हौं न तब हेरी या गुमान बजमारे सों। कहै पद्माकर वे रूठिगे सु ऐसी भई नैनन तें नींद गई हाइ के दवारे सों॥ रैन दिन चैन है न मैन है हमारे बस ऐन मुख सूखत उसास अनुसारे सों। प्रानन की हान सौ दिखान सी लगी है हाइ कौन गुन जानि मान कीन्हो प्रानप्यारे सों॥

दोहा।

घन गुमगड पावस निसा सरवर लग्यो सुखान।
परखि प्रानपति जानि गो तज्यो मानिनी मान॥

परकीया कलहांतरिता सवैया।

कासों कहा मै कहौं दुख यों मुख सूखतई है पियूष पिये तें। त्यों पद्माकर या उपहाँस को त्रास मिटै न उसास लिये तें॥ व्यापी बिथा यह जानि परी मनमोहन मीत सौं मान किये तें। भूलिहू चूक परे जो काहू तिहि चूक की हूक न जात हिये तें॥ १७७॥

दोहा।

मोहन मीत सभीत गो लखि तेरो सनमान ।
अब सु दगा दै तूं चल्यो अरे मुहई मान ॥ १७८ ॥

गनिका कलहांतरिता—सवैया।

हीर के हार हजारन को धन देत हते सुख सों सरसाने । हौं न लयो पद्माकर त्यौं अरु बोली न बोल सुधारस साने ॥ वे चलि छांते गये अनतै अब का हम आपनी बात बखाने । आपने हाथ सों आपने पांइ पै पाथर पारि पर्यो पछिताने ॥ १७९ ॥

दोहा।

कहा देखि दुख दाहिये कुमति कछू जो कीन ।
छैल छगूनी छोर तैं छला न लीनो छीन॥१८०॥

विप्रलब्धा को लक्षण—दोहा।

पियबिहीनसंकेतलखि जो तिय अति अकुलाइ।
ताहि विप्रलब्धा कहत सु कविन के समुदाई ॥

मुग्धा विप्रलब्धा को उदाहरण—कवित्त।

खेल को बहानो कै सहेलिन के संग चलि आई केलिमन्दिर लौं सुन्दर मजेज पर। कहै

पद्माकर तहां न पिय पायो तिय त्यौंही तन ते रही तमीपति के तेज पर ॥ बाढ़त बिथाकी कथा काहू सों कछू ना कही लचकि लता लौं गई लाजही की लेज पर । बौरी परी बिथरि कपोल पर पौरी परो धौरी परी धाय गिरी सौरी परी सेज पर ॥ १८२ ॥

दोहा ।

नवल गूजरी ऊ जरी निरखि ऊजरी सेज ।
उदित उजेरी रैन की कहि न सकत कछु तेज ॥

मध्या विप्रलब्धा—कवित्त

पूर अँसुवान को रह्यौ जो पूरि आंखिन में चाहत बह्यो पै बढ़ि बाहिरै बहै नहीं । कहै पद्माकर सुधोखिह्न तमाल तरु चाहत गह्यो पै हूं गहब गहै नही ॥ कांपि कदली लौं या अली को अवलम्ब कहूं चाहत लह्यो पै लोक लाजनि लहै नहीं । कन्त न मिले को दुख दारुन अनन्त पाय चाहति कह्यो पै कछू काहू सों कहै नहीं ॥ १८४ ॥

दोहा।

सजन बिछौनी सेज पर परे पेखि मुकतान।
तबहि तियाको तन भयो मनहु अधपक्यो पान॥

प्रौढ़ा बिप्रलब्धा—कबित्त।

आई फाग खेलन गुबिन्द सों अनन्द भरी जाको लसै लंक मंजु मखतूल ताग सो। कहै पदमाकर तहां न ताहि मिल्यो स्याम छिन मैं छबीलो कौ अनंग दह्यो दाग सों॥ कौन करै होरी काज गोरी समझावै कहा नागरी कों राग लग्यो बिष सों बिराग सो। कहर सी केसर कपूर लग्यो काल सम गाज सों गुलाब लग्यो अरगजा आग सों॥१८६॥

दोहा।

निरखि सेज रँग रँग भरी लगी उसासैं लैन।
कछु न चैन चित मै रह्यो चढ़त चाँदनी रैन॥

परकीया बिप्रलब्धा—कबित्त।

गंजन मृगुंज लग्यो तैसो पौन पुंज लग्यो दोस मनि कुंज लग्यो गुंजन सों गजि कै। कहै पदमाकर न खोल लग्यो ख्यालन को चालन

मनोज लग्यो बीर तीर सजि कै ॥ सूखन सुबिंब लग्यो दूखन कदंब लग्यो मोहि न बिलंब लग्यो आई गेह तजि कै । मींजन मयंक लग्यो मीतहूं न अङ्क लग्यो पंक लग्यो पायन कलंक लग्यो बजि कै ॥ १८८ ॥

दोहा ।

लखि संकेत सूनो सुमुखि बोली बिकल सभीति ।
कहीकहाकिहिसुखलह्यो करि कुमीत सों प्रीति ॥

गनिका विप्रलब्धा—कबित्त ।

निसि अँधियारी तऊ प्यारी परबीन चढ़ि माल कै मनोरथ कै रथ पै चली गई । कहै पद्माकर तहां न मनमोहन सों भेंट भई सटकि सहेट तें अली गई ॥ चन्दन सों चांदनी सों चन्द सों चमेलिन सों और बनबेलिन के दलनि दली गई । आई हुती छैल के छलै को छल छन्दनि सों छैल तो छल्यौ न आपु छैल सों छली गई ॥ १९० ॥

दोहा ।

हुत न मैन मूरति मिल्यो परत कौन बिधि चैन ।
धन की भई न धाम की गई ऐसही रैन॥१९१॥

उत्कंठिता को लक्षण—दोहा ।

लहि संकेत मोचै जुतिय रमन आगमन हेत ।
ताही को उतकंठिता बरनत सुकवि सचेत ॥

मुग्धा उतकंठिता को उदाहरण—सवैया ।

सोच अनागम कारन कन्त को मोचै उसासन आँसहू मोचै । मोचै न हेरि हरा हिय को पद्माकर मोच सकै न सँकोचै ॥ को चैत कैं हूह चांदनी तें अलि याहि निबाहि बिथा अबलोचै । लोचे परी सियरी परजंक पैं बीती घरी न खरी खरा सोचै ॥ १८३ ॥

दोहा ।

अरे सुमा मन बावरे हूतहि कहा अकुलात ।
अटकिअटाकितपतिरह्यो तितहिक्योंनचलिजात॥

मध्या उत्का—सवैया ।

आये न कन्त कहां धौं रहे भयो भोर चहै निसि जाति सिरानी । यौं पद्माकर बूझ्यो चहै पर बूझ सकै न सँकोच की मानी ॥ धारि सकै न उतारि सकै गुनि हारि सिंगार हिये हहरानी । सूल से फूल लगे फार पै तिय फूल छरी सो परी मुरझानी ॥ १८५ ॥

दोहा।

अनत रमि रहे कन्त क्यों यह बूझन के चाइ।
मुसुकि सखी के श्रवन सों मुख लगाइ रहि जाइ।

प्रौढ़ा उत्का—कवित्त।

सौतिन के त्रास तें रहे धौं और बास तें न आये कौन गास तें प्यौ कछु सौ तलास तें। कहै पद्‌माकर सुबास तें जवास तें मुफलन की रास तें जगी है महा सास तें॥ चांदनी विकास तें सुधाकर प्रकास तें न राखत हुलास तें न लाउ खसखास तें। पौंन कछु आसतें न जाउ उठि बास तें अरो गुलाबपास तें उठाउ आस पास तें॥ १९७॥

दोहा।

कियहु न मैं कबहूं कलह गह्यो न कबहूं मौन।
पिय अबलौं आयो न कत भयो सुकारन कौन॥

परकीया उत्का कवित्त।

फागुन मैं का गुन विचारि ना दिखाई देत एती बार लाई उन कानन में नाइ आउ। कहै पद्‌माकर हितू जो है हमारी तौ हमारे कहै

बीर वहि धाम लगि धाइ आउ ॥ जोरि जो धरो है वेदरद दुआरे होरी मेरी बिरहाग की उलूकनि लौं लाइ आउ । एरी इन नैनन के नीर मै अबीर घोरि बोरि पिचकारी चितचोर पै चलाइ आउ ॥ १६६ ॥

दोहा ।

तजत गेह अरु गेहपति मोहि न लगी बिलंब ।
हरि विलंब लाई मुकत क्यौं नहि कहत कदंब ॥

गनिका उक्ता सवैया ।

काहू कियो धौं कहै बस भावतो काहू कहूं धौं कछू छल छायो । त्यौं पदमाकर तान तरंगनि काहू किधौं रचि रंग रिझायो ॥ जानि परै न कछू गति आज की जा हित एतो विलम्ब लगायो । मोहन मो मन मोहिबे कौं किधौं मो मन को मनिहारन पायो ॥ २०१ ॥

दोहा ।

कहत सखिनसों शशिमुखी सजि २ सकल सिँगार।
मो मन अटक्यो हार मैं अटकि रह्यो कित यार॥

वासकसज्जा लक्षण दोहा।

साजहि सेज सिँगार तिय पियमिलाप के काज।
वासकसज्जा नायिका ताहि कहत कविराज॥

मुग्धा वासकसज्जा—कवित्त।

सोरह सिँगार कै नवेली को सहेलिन हूं कीन्ही केलिमन्दिर मैं कलपित केरे हैं। कहै पद्माकर सु पास ही गुलाबपास खासे खस-खास खुसबोइन की ढेरे हैं॥ त्यों गुलाब नीरन सों हीरन के हौज भरे दम्पति मिलाप हित आरती उजेरे हैं। चाखी चांदनी में बिछी चौसर चमेलिन के चन्दन की चौकी चारु चाँदी के चँगेरे हैं॥ २०४॥

दोहा

साजि सेन भूषन वसन सब को नजर बचाइ।
रही पौढ़ि मिसि नींद के दृग दुवार से लाइ॥

मध्या वासकसज्जा—कवित्त।

सजि ब्रजबाल नन्दलाल सो मिलै के लिये लगनि लगालगि मै लमकि लमकि उठै। कहै पद्माकर चिराग ऐसी चाँदनी सी चाखो ओर

चौकनि मैं चमकि चमकि उठै। झुकि झुकि झूमि झूमि झिल झिल झल झल झरहरी झापन में झमकि झमकि उठै। दर दर देखौ दरीखानन में दौरि दौरि दुरि दुरि दामिनी सी दमकि दमकि उठै॥ २०६॥

दोहा।

शुभ सिँगार साजे सबै दै सखीन कौं पीठ।
चली अधखुले द्वार लौं खुली अधखुली डीठ॥

प्रौढ़ा वासकसज्जा—कवित्त।

चहचही चहल चहूँवाँ चारु चन्दन की चन्द्रक चुनीन चौक चौकन चढ़ी है आब। कहै पद्माकर फराकत फरसबन्द फहरि फुहारन की फरस फबी है फाब॥ मोद मदमाती मनमोहन मिलै के काज साजि मनि मन्दिर मनोज कैसी महताब। गाल गुल गादी गुल गिलमै गुलाब गुल गजक गुलाबी गुल गिन्दुक गुलै गुलाब॥ २०८॥

दोहा।

यौं सिँगार साजे सुतिय कौ करि सकत बखान।
रह्यो न कछु उपमान को तिहूंलोक मैं आन॥

परकीया वासकसज्जा—कवित्त ।

सोसनी दुकूलनि दुराये रूप रोसनी है बूटेदार घाँघरी की घूमनि घुमाइ कै । कहै पदमाकर त्यों उन्नत उरोजन पैं तंग अँगिया है तनी तनिन तनाइ कै ॥ छज्जन की छाँह छकि छैल के मिलै के हेत छाजति छपा मैं यों छबीली छबि छाइ कै । ह्वै रही खरी है छरी फूल की छरी सी छपि साँकरी गली मैं फूल-पाँखुरी बिछाइ कै ॥ २१० ॥

दोहा ।

फूल बिनन मिसि कुंज मैं पहिरि गुंज को हार ।
मग निरखत नँदलाल को सुबलि बारहीं बार ॥

गनिका वासकसज्जा—सवैया ।

नीर के तीर उसीर के मन्दिर धीर समीर जुड़ावत जौरे । त्यों पदमाकर पंकज पुंज पुरैन के पात परे जनु पौरे ॥ ग्रीषम की क्यों गनै गरमी गज गौहर चाह गुलाब गँभीरे । बैठी बधू बनि बाग बिहार मैं वार बगारि सिवार से सौरे ॥ २१२ ॥

दोहा ।

अमल अमोलिक लालमय पहिरि बिभूषनभार ।
हरषि हिये पर तिय धर्यो सुरुख सीप को हार ॥

स्वाधीनपतिका लच्छण—दोहा ।

जा तिय के आधीन ह्वै पीतम रहै हमेस ।
सुस्वाधीनपतिका कही कबिन नायिका बेस ॥

मुग्धा स्वाधीनपतिका कवित्त ।

चाह भयो चञ्चल हमारो चित नील बधू तेरी चाल चञ्चल चितौनि में बसत है । कहै पद्माकर चञ्चल सु चितौनि हू ते औझकि उझकि झझकनि में फसत है ॥ औझक उझकि झझकनि तें मुरझि बेस बाहीं की गहनि माहिं आइ बिलमत है । बाहीं की गहनि तें सु नाहीं की कहनि आयो नाहीं की कहनि तें सु नाहीं निकसत है ॥ २१५ ॥

पुनर्यथा—सवैया ।

कबहूं फिर पाँउ न देहौ यहाँ भजि जैहौं तहाँ जहां सूधी सही । पद्माकर देहरी द्वार किवार लगे ललचैहौ न ऐसी चही ॥ बहियाँ को कहा छहियाँ न कहूं छुवै पावहुगे लला लाज लही ॥

चित चाहै कहौ न कहौ बतियां उतही रही हा हा हमै न गहौ ॥ २१६ ॥

पुनर्यथा ।

सतरैबो करौ बतरैबो करो इतरैबो करौ करौ जोई चहौ । पद्माकर आनँद दीबो करौ रस लीबो करौ मुख सौ उमहौ ॥ कछु अंतर राखौ न राखौ चहो पर या बिनती इक मेरी गहौ । अब ज्यौं हिय मैं नित बैठी रहौ त्यौं दया करि कै ढिग बैठी रहौ ॥ ११७ ॥

दोहा ।

तुव अयानपन लखि भटू लटू भये नँदलाल ।
जब सयानपन पेखिहैं तब धौं कहा हवाल॥२१८॥

मध्या स्वाधीनपतिका—सवैया ।

ता छिन तैं रहै औरनि भूलि सु भूली कदंबन की परछाँहीं । त्यौं पद्माकर संग सखान.की भूलि भुलाइ कला अवगाहीं ॥ जा छिन तें तूं वशीकर मंत्र सी मेलो सु कान्ह के कानन मांहीं । दै गलबांही जु नाहीं करी वह नाहीं गुपाल कों भूलत नाहीं ॥ २१९ ॥

दोहा ।

आधे आधे दृगनि रति आधे दृगनि सु लाज ।
राधे आधे बचन कहि सु बस किये ब्रजराज॥२२०

प्रौढ़ा स्वाधीनपतिका—सवैया ।

मो मुख बीरी दई सु दई सु रही रचि साधि सुगन्ध घनेरी । त्यौं पदमाकर केसरि खौर करी तौ करी सो सुहाग है मेरी ॥ बेनी गुही तो गुही मनभावते मोतिन माँग सँवारि सबेरी । और सिँगार सजे तौ सजो इक हार हहा हियरै मति गेरी ॥ २२१ ॥

दोहा ।

अंगराग औरै अँगन करत कछू बरजौ न ।
पै मेहदी न दिया इहौं तुम सों पगन प्रबीन ॥

परकीया स्वाधीनपति का—कवित्त ।

उझकि झरोखा ह्वै झमकि झुकि झाँकी बाम स्याम को बिसरि गई खबर तमासा की । कहै पदमाकर चहूंघां चैत चाँदनी सी फैल रही तैसियै सुगंध शुभ श्वासा की ॥ तैसी छबि तकत तमोर की तरौनन की वैसी छबि बसन

की बारन की बासा की। मोतिन की माँग की मुखौ की मुसुक्यानहू की नैननि की नथ की निहारिबे की नासा की ॥ २२३ ॥

पुनर्यथा कवित्त।

ईस की दुहाई सीसफूल तैं लटकि लट लट तैं लटकि लट कन्ध पैं ठहरिगो। कहै पद्माकर सु मन्द चलि कन्धहू तैं भमि भमि भाई सी भुजा मै त्यौं भभरिगो॥ भाई सी भुजा तैं भमि आयो गोरी गोरी बाँह गोरी बांहहू तैं चपि चूरिन मै अरिगो। हियो हरे हरें हरी चूरिन तैं चाह्यौ जौ लौं तौलौं मन मैरो दौरि तेरे हाथ परिगो ॥ २२४ ॥

दोहा।

मैं तरुनी तुम तरुन तम चुगुल चबाई गाँउँ।
मुरली लै न बजाइये कबहुं हमारो नाउँ ॥२२५॥

गनिका स्वाधीनपतिका सवैया।

छाक छकी छतिया धरकै दरकै अँगिया उचकै कुच नीके। त्यौं पद्माकर छूटत बारहू टूटत हार सिँगार जे ही के॥ संग तिहारे न

झूलहुंगो फिर रंग हिंडोरे सु जीवन जी के।
यौं मिचकी मचकौ न हहा लचकै करिहाँ मचकै मिचकी के ॥ २२६ ॥

दोहा।

या जग में धनि धन्य तू सहज सलोने गात।
धरनीधर जो बस कियो कहा और की बात ॥

अभिसारिका लक्षण—दोहा।

बोलि पठावै पियहि कै पिय पै आपुहि जाइ।
ताही को अभिसारिका बरनत कवि समुदाइ ॥

मुग्धा अभिसारिका—सवैया।

किङ्किनी छोरि छपाई कहूं कहूं बाजनी पायल पाइ तें नाई। त्यों पदमाकर पातहु के खरकै कहूं कांपि उठै छबि छाई ॥ लाजहि तें गड़ि जात कहूं अड़िजात कहूं गज की गति भाई। बैस की थोरी किशोरी हरे हरे या बिधि नन्दकिशोर पैं आई ॥ २२८ ॥

दोहा।

केलिभवन नव बेलि सी दुलही उलहि दुकन्त।
बैठि रही चुप चन्द लखि तुमहि बुलावति कन्त ॥

मध्या अभिसारिका—सवैया।

झूले झूले पर मैन महावत लाज के आँदू परे गथि पाइन। त्यों पद्माकर कौन कहै गति माते मतंगनि की दुखदाइन॥ ये अँग अंग की रोसनी मैं शुभ मोसनी चीर चुभ्यो चितचाइन। जाति चली ब्रजठाकुर पै ठमका ठुमकी ठमकी ठकुराइन॥ २३१॥

दोहा।

इक पग धरति सुमन्द मग इक पग धरति अमन्द
चलीजाति इहिविध सखी मन २ करत अनन्द॥

प्रौढ़ा अभिसारिका सवैया।

कौन है तू कित जाति चली बलि बीती निसा अधराति प्रमानै। हौं पद्माकर भावती हौं निज भावतै पै अबहीं मुहि जानै॥ तौ अलबेली अकेली डरै किन क्यों डरौं मेरी सहाय के लानै॥ है सखि संग मनोभव सो भट कान लौं बान सरासन तानै॥ २३३॥

पुनर्यथा—कवित्त।

घूंघट की घूमकै सु झूमकै जवाहिर के झिलमिल झालर की भूमि लौं झुलत जात।

कहै पद्माकर सुधाकरमुखी के हीर हारन मैं तारन के तोम से तुलत जात ॥ मन्द मन्द है-कल मतंग लौं चलेई भले भुजन समेत भुज भूषन डुलत जात। घांघरे झकोरन चहूंघां खोर खोरहु मे खूब खसकोई के खजाने से खु-लत जात ॥ २३४ ॥

दोहा।

पग टूपर नूपुर सुभग जनु अनापि सुरसात।
पिय सों तिय आगमन को कही सु अगमन बात॥

परकीया अभिसारिका—कवित्त.

मौलसिरी मंजुल की गुंजन की कुँजन की मोसो घनश्याम कहि काम को कथै गयो। कहै पद्माकर अथाइन को तजि २ गोप गन निज निज गेह के पथै गयो॥ साच मति कीजै ठकुरानी हम जानी चित चंचल तिहारो चढ़ि चाह के रथै गयो। कौन न कृपाकर कृपाकर-मुखी तूं चल बदन कृपा कर कृपाकर अथै गयो॥

दोहा।

चली प्रीति बस मीत पै मीत चल्यो तियचाहि।
भई भेंट अधबीच तहँ जहँ न कोऊ आहि॥

गनिका अभिसारिका—सवैया ।

केसर रंग रँगी सिर ओढ़नी कानन कीन्हे गुलाब कली हौ । भाल गुलाल भरयौ पद्माकर अंगन भूषित भाँति भली हौ ॥ औरन को छ-लती छिन मै तुम जाती न औरन सों जु छली हौ । फाग मैं मोहन को मन लै फगुवा मैं कहा अब लेन चली हौ ॥ २३८ ॥

दोहा ।

सही साँझ तैं सुमुखि तूं सजि सब साज समाज ।
को अस वड़भागी जुँ है चली मनावन काज ॥

दिवा अभिसारिका—कबित्त ।

दिन कै किवार खोलि कौनो अभिसारि पै न जानित री काहू कहाँ जाति चली छल सी । कहै पद्माकर न नाँक री सँकोरे जाहि काँकरी पगन लगै पंकज के दल सी ॥ कामद सो कानन कपूर ऐसी धूरि लगै पट सो पहार नदी लागत है नल सी । घाम चाँदनी सी लगै चंद सो लगत रवि मग मखतूल सो मही हू मखमल सी ॥ २४० ॥

दोहा।

सजि सारँग सारँगनयनि सुनि सारँग बनमांहि।
भर दुपहर हरि पैं चली निरखि मेह की छांह॥

कृष्णा अभिसारिका—सवैया।

सांवरी सारी सखी संग सांवरी सांवरे धारि विभूषन ध्वैके। त्यौं पदमाकर सांवरेई अँगरागनि आंगी रची कुच द्वै कै॥ सांवरी रैन में सांवरी पै घहरै घनघोर घटा छिति छ्वै कै। सांवरी पांमरी की दै खुही बलि सांवरे पै चली सांवरी ह्वै कै॥ २४२॥

दोहा।

कारी निशि कारी घटा कचरति कारे नाग।
कारे कान्हर पै चली अजब लगनि की लाग॥

शुक्ला अभिसारिका—कवित्त।

सजि ब्रजचन्द पै चली यौं मुखचन्द जाको चन्द चांदनी को मुख मन्द सो करत जात। कहै पदमाकर त्यौं सहज सुगंध ही के पुंज बन कुंजन में कंज से भरत जात॥ धरत जहांई जहां पग है सुप्यारी तहां मंजुल मजीठही की

माठ सी ढुरत जात। हारन तें हीरे ढरै सारी के किनारन तें बारन तें मुकता हजारन भरत जात ॥ २४४ ॥

दोहा।

जुवति जुन्हाई सो न कछु और भेद अवरेख ।
तिय आगम पिय जानिगो चटक चांदनी पेख ॥
चलन चहै परदेश कों जा तिय को जब कन्त ।
ताहि प्रवत्स्यत्प्रेयसी कहत सुकवि मतिवन्त ॥

मुग्धा प्रवत्स्यतपतिका—सवैया ।

सेज परी सफरी सी पलोटति ज्यों २ घटा घन की गरजै री । त्यों पद्माकर लाजनि तें न कहै दुलही हिय की हरजै री ॥ आली कछू को कछू उपचार करै पै न पाइ सकै मरजै री । जाहि न ऐसे समै मथुरै यह कोऊ न कान्हर को बरजै री ॥ २४७ ॥

दोहा।

बोलत बोल न बलि बिकल थरथरात सब गात ।
नवजोबन के आगमन सुनि प्रिय गमन प्रभात ॥

मध्या प्रवत्स्यत्प्रेयसी—सवैया

गो-गृहकाज गुवालन के कहै देखिबे को कहूं दूरि के खेरौ। मांगि बिदा लई मोहनी सो पद्‌माकर मोहन हात सबेरौ ॥ फेट गही न गही बहियां न गरौ गहि गोविंद गौन ते फेरौ। गोरी गुलाब * के फूलन को गजरा लै गुपाल की गैल में गेरौ ॥ २४८ ॥

दोहा।

सुनि सखीन-मुख शशिमुखी बलम जाहिंगे दूर।
बूझ्यौ चहति वियोगिनी जिय ज्यावनकी मूरि ॥

प्रौढ़ा प्रवत्स्यत्पतिका—कवित्त।

सौ दिन को मारग तहां कौ बेगि मांगि बिदा प्यारो पद्‌माकर प्रभात राति बीते पर। सो सुनि पियारी पिय-गमन बराइबे कों आंसुन अन्हाई † बैठि आसन सु तीते पर ॥ बालम बिदेसी तुम जात हौ तो जाउ पर सांची

* गुलाब के फूल तें वसंत सूचित कराय गमन बरायबो चहति है।

† आंसू तें न्हाय वर्षा जतायो। वर्षा समय गमन अशुभ है।

कहि जाउ कब ऐहौ भौन रीते पर ? पहर के भीतर कै द्वै पहर भीतर ही तीसरे पहर कैधौं सांझ ही बितीते पर ॥ २५१ ॥

पुनर्यथा—सवैया ।

जात हैं तौ अब जान दैगी छिन में चलिबे को न बात चलैहैं । जौ पद्माकर पौन कै झूंकनि क्वैलिया कूकनि लौ सहि लैहैं ॥ वे उलहे बन बाग बिहारि निहारि निहारि जबै अकुलैहैं । जैहैं न फेरि फिरे घर ऐहैं सु गांव तें बाहर पांउ न दैहैं ॥ २५२ ॥

दोहा ।

असन * चले आंसू चले चले मैन के बान ।
रमन गमन सुनि सुख चले चलत चलैंगे प्रान ॥

परकीया प्रवत्स्यत्प्रेयसी—सवैया

जो उरझार नहीं झरसो मृदु मालती माल वहै मग नाखै † । नेहवती जुवती पद्माकर पानी न पान कछू अभिलाखै ॥ झांकि झरोखे

* असन भोजन ।
† मालती माला नाखि वर्षा को जताय गमनाक्षेपकियो ।

रही कबकी टरकी वह बाल मनैमन भाखै ।
कोऊ न ऐसो हितू हमारो जु परोसिन के पिय
को गहि राखै ॥ २५४ ॥

दोहा ।

ननद चाह सुनि चलन की बरजत क्यों न सुकन्त ।
आवत बन बिरहीन को बैरी बधिक बसंत ॥

गमिका सवैया ।

आंखिहि के अँसुवान हीं सों निज धाम हीं
धाम धरा भरि जैहै । त्यों पद्माकर धीर समी-
रनि जीय धनी कहु क्यों धरि जैहै ॥ जो तजि
मोहि चलोगे कहूं तो हुती बिरहागिनि या
थरि जैहै । जैहै कहा कछु रावरे को हमरे हिय
को तो हरा हरि जैहै ॥ २५६ ॥

दोहा ।

फबत फाग फजिहत बड़ी चलन चहत जदुराइ ।
को फिरि नाच रिझाइबी धुनि धमार की धाइ ॥

आगतपपिका को लच्छण ।

आवत बलम बिदेश तें हरषित होत जु बाम ।
आगतपतिका नाइका ताहि कहत रसधाम ॥

मुग्धा आगतपतिका — कवित्त ।

कान सुनि आगम सुजान प्रानप्रीतम को
आनि सखियान सजी सुंदरि के आस पास ।
कहै पद्माकर सुपन्नन के होज हरे ललित ल-
बालब भरे हैं जल बास बास ॥ गूंदि गेंदे गुलगज
गौहरन गंजगुल गुपत गुलाबी गुल गजरे गुलाब
पास । खासे खसबोजन सुपौन पौनखाने खुले
खस के खजाने खसखाने खूब खास खास॥२५८

दोहा ।

आवत लिन द्विरागमन रमन सुनति यह बानि ।
हरष कृपावन हित भटू रही पौढ़ि पट तानि ॥

मध्या आगतपतिका—सवैया ।

नँदगांउ तें आइगो नंदलला लखि ला-
ड़िली ताहि रिझाय रही । मुख घूंघट घालि
सकै नहिं माइकी माइ के पीछे दुराइ रही ॥
उचकै कुच कोरन की पद्माकर कैसो कछू छ-
बि छाइ रही । ललचाइ रही सकुचाइ रही
सिर नाइ रही मुसक्याइ रही ॥ २६१ ॥

दोहा।

बिछुरि मिलि पिय तीय को निरखत सुमुखिसरूप।
कछु उराहनौ देन कों फरकत अधर अनूप॥

प्रौढ़ा आगतपतिका—कवित्त।

आजु दिन कान्ह आगमन के बधाये सुनि छ'ये मग फूलन सुहाये थल थल के। कहै पद्माकर त्यौं आरती उतारिबे कों थारन मैं दीप हीरा हारन के छलके॥ कंचन के कलस भराये भूरि पन्नन के ताने तुंग तोरन तहाँई झला-झल के। पौर के द्वारे तैं लगाइ केलिमँदिर लौं पद्मिनि पाँउड़े पसारे मखमल के॥२६३॥

दोहा।

आवत कंत बिदेश तें हौं ठानहुं मुद मान।
मानहुँगी जब करहिंगे पुनि न गमन को आन।

परकीया आगतपतिका—सवैया।

एकै चले रस गोरस लै अरु एकै चलै मग फूल बिछावत। त्यौं पद्माकर गावत गीत सु एकै चले उर आनँद छावत॥ यौं नँदनन्द नि-हारिबे को नँदगांउ के लोग चले सब धावत।

आवत कान्ह बनै बन तें बर प्रान परै से परी-
सिन आवत ॥ २६५ ॥

दोहा ।

रमनि रंग औरै भयो गयो बिरह को सूल ।
आयो नैहर सों जु सुनि वहै बैद रसमूल॥२६६॥

गनिका आगतपतिका—सवैया ।

आवत नाह उछाहभरे अवलोकिबे को निज
नाटकशाला । हौं नचि गाइ रिझावहुंगी पद्-
माकर त्यौं रचि रूप रसाला ॥ ० सुक मेरे सु-
मेरे कहै यौं इतै कहि बोलियौ बैन बिशाला ।
कन्त बिदेश रहे हो जिते दिन देहु तिते मुकु-
तान की माला ॥ २६७ ॥

दोहा ।

वे आये ल्याये कहा यह देखन के काज ।
सखिन पठावति शशिमुखी सजत आपनो साज॥
त्रिविध कही ये सब तिया प्रथम उत्तमा मानि।
बहुरि मध्यमा दूसरी तीजी अधमा जानि ॥

उत्तमा को लक्षण—दोहा ।

सुपिय दोष लखि सुनि जुतिय धरै न हियमें रोस।
ताहि उत्तमा कहत हैं सुकबि सबै निरदोस ॥

उत्तमा को उदाहरण—कवित्त ।

पाती लिखी सुमुखि सुजान पिय गोविंद को श्रीयुत सलोने स्याम सुखनि सने रहो । कहै पद्माकर तिहारी छेम छिन २ चाहियतु प्यारे मन मुदित घने रहो ॥ बिनती इती है कै हमेसहू मुहै तौ निज पाइन की पूरो परिचारिका गने रहो । याही में मगन मन मोहन हमारो मन लगनि लगाइ लाल मगन बने रहो ॥२७१॥

दोहा ।

धरति न नाह गुनाह उर लोचन करति न लाल ।
तिय पियकी छतियां लगी बतियां करति रसाल ॥

मध्यमा लक्षण ।

पिय गुनाह चितचाह लखि करै मान सनमान ।
ताही तिय को मध्यमा भाषत सुकवि सुजान ॥

मध्यमा को उदाहरण—कवित्त ।

मन्द २ उर पै अनन्दही के आंसुन की बरसै सुबुँदै मुकुतानही के दानै सो । कहै पद्माकर प्रपंची पंचबान के सुकानन कै मान पै परी त्यौं घोर घानै सो ॥ ताजी चित्रलीन में बिराजी छबि

छाजी सबै राजी रोमराजी करि अमित उठानै सी। सोहैं पेख पी को बिहसौंहैं भये दोऊ दृग सोहैं सुनि भौंहैं गई उतरि कमानै सी ॥२७४॥

पुनर्यथा—कवित्त।

जाके मुख सामुहै भयोई जो चहत मुख लीन्हो सो नवाइ डीठ पगन अवांगी री। बैन सुनिबे को अति व्याकुल हुते जे कान तेऊ मूंदि राखि मजा मनहू न मांगो री॥ झारि डार्यो पुलकि प्रसेदहू निवारि डार्यौ रोक रसनाहूं त्यों भरी न कछू हांगो री। एते पै रह्यो न मान मोहन लटू पै भटू टूक २ ह्वै कै ज्यौं छटूक भई आँगी री ॥ २७५ ॥

दोहा।

रह्यो मान मन के मनहिं सुनत कान्ह के बैन।
बरजि बरजि हारी तऊ रुके न गरजी नैन ॥

अधमा को लक्षण—दोहा।

ज्यौंही ज्यौं पियहित करत त्यौंत्यौं परति सरोस।
ताहि कहत अधमा सुकबि निठुराई की कोस॥

अधमा को उदाहरण—सवैया ।

हौं उरझाइ रिझाइबे कों रसराग कवित्तन की धुनि छाई । त्यों पद्माकर साहस कै कबहूं न विषाद की बात सुनाई ॥ सापने हूं न कियो अपराध सु आपने हाथन सेज बिछाई । प्यौ परि पाइ मनाई जऊ तऊ पापिन कों कछु पीर न आई ॥ २७८ ॥

दोहा ।

मान ठान बैठी हुती सुबस नाह निज हेरि ।
कबहुं जु परवस होहि तौ कहा करेगी फरि ॥

इति नायिकानिरूपणम् ।

अथ नायक निरूपणम्—दोहा ।

सुन्दर गुनमन्दिर युवा युवति विलोकैं जाहि ।
कविता राग रसज्ञ जो नायक कहिये ताहि ॥

अथ नायक का उदाहरण—कवित्त ।

जगत बसीकरन छोहरन गोपिन के तरुन त्रिलोक मैं न तैसी सुन्दराई है । कहै पद्माकर कलानि को कदम्ब अवलम्बन सिंगार को सुजान

सुखदाई है ॥ रसिक सिरोमनि सुराग रतनाकर है सील गुन आगर उजागर बड़ाई है। ठौर ठकुराई को जु ठाकुर ठसकदार नन्द को कन्हाई सो सुनन्द को कन्हाई है ॥ २८१ ॥

दोहा।

दौरे को न बिलोकिबे रसिक रूप अभिराम ।
सब सुखदायक साँचहू लखिबे लायक श्याम ॥

नायक के भेद—दोहा।

त्रिबिध सु नायक पति प्रथम उपपति बैसिक और।
जो बिधि सों व्याह्यो तियन सोई पति सब ठौर॥

पति को उदा०—कबित्त।

मण्डपही में फिरै मेड़रात न जात कहूं तजि गेह को औनो। त्यों पदमाकर तोंहि सराहत बात कहै जु कछू कहूं कौना ॥ ये बड़भागिनी तोसी तुही बलि जो लखि राउरो रूप सलोनो। व्याहही ते भये कान्ह लटू तब ह्वैहै कहा जब होहि गो गौनो ॥ २८४ ॥

दोहा।

आई आलि सु ससिमुखी नखसिख रूप अपार।
दिनदिनतियजोबनबढ़तछिनछिनपियको प्यार॥

सु अनुकूल दच्छिण बहुरि सठ अरु धृष्ट बिचारि।
कहै कबिन प्रति एक के भेद पेखि कै चारि ॥

अनुकूल दच्छिण को लच्छण।

जो परबनिता तैं बिमुख सो ऽनुकूल सुखदानि।
जु बहु तियनको सुखदसम सो दच्छिन गुनखानि॥

अनुकूल को उदा०—सवैया।

एकही सेज पै सोवत हैं पदमाकर दोऊ महा सुखसाने। सापने मैं तिय मान कियो यह देखि पिया अतिही अकुलाने॥ जागि परे पै तऊ यह जानत पौढ़ि रही हमसों रिस ठाने। प्रान-पियारी के पा परि कै करि सौंह गरे को गरे लपटाने॥ २८८॥

दोहा।

मनमोहन तन घन सघन रमण राधिका मोर।
श्रीराधामुखचन्द को गोकुलचन्द चकोर॥२८९॥

दच्छिण को उदा०—कवित्त।

देखि पदमाकर गोविन्द को अनन्दभरी आई सजि साँझही तैं हरखि हिलोरे मैं। ए हरि हमारेई हमारे चलो झूलन कों हेम के हिंडोरन

झुलान की झकोरे मैं ॥ या विध वधून के सुबैन सुन बनमाली मृदु मुसुक्याय कह्यो नेह के निहोरे मैं । काल्हि चलि झूलैंगे तिहारेई तिहारी सौंह आज तुम झूलो ह्यां हमारेई हिंडोरे मैं ॥२९०॥

दोहा ।

निज निज मन के चुनि सबै फूल लेहु इकबार ।
यह कहि कान्ह कदम्ब की हरष हिलाई डार ॥

धृष्ट को लक्षण ।

धरै लाज उर मैं न कछु करै दोष निरसंक ।
टरै न टारै कैसहूं कह्यो धृष्ट सकलंक ॥२९२॥

धृष्ट को उदाहरण—सवैया ।

ठानै मजा अपने मन की उर आनै न रोसहू दोस दिये को । त्यों पदमाकर जोबन के मद पै मद है मधुपान पिये को ॥ राति कहूं रमि आयो घरै उर मानै नहीं अपराध किये को । गारि दै मारि दै टारत भावती भावती होत है हार हिये को ॥ ॥ २९३ ॥

दोहा ।

यदपि न बैन उचारियतु गहि निबारियतु बांह ।
तदपि गरेई परत है गजब गुनाहौ नाह ॥२८४॥

सठ का लक्षण ।

सहित काज मधुरै मधुर बैननि कहै बनाइ ।
उर अन्तर घट कपट मय सो सठ नायक आइ॥२८५

सठ को उदाहरण—सवैया ।

करि कन्द की मन्द दुचन्द भई फिरि दाखन के उर दागती है । पदमाकर स्वादु सुधा तैं सिरै मधु तें महा माधुरी जागती है ॥ गनती कहा येरी अनारन की ये अंगूरन ते अति पागती हैं। तुम बातैं निसोठी कहौ रिस मैं मिसिरी तें मीठी हमैं लागती हैं ॥ २८६ ॥

दोहा ।

हौं न कियो अपराध बलि वृथा तानियत भौंह ।
तुव उरसिज हरि परसि कै करत रावरी सौंह ॥

उपपति औ वैसिक का लक्षण ।

उपपति ताहि बखानहीं जु परवधू की मीत ।
बारबधुन के रसिक सो वैसिक अलज अभीत ॥

उपपति को उदाहरण - सवैया ।

आछे किये कुच कंचुकी मैं घट में नट कैसे बटा करिबे को । मो दृग दूपै किये पद्माकर तो दृग कूट छटा करिबे को ॥ कीजै कहा विधि की बिधि को दियो दारुन लोटपटा करिबे को। मेरो हियो कटिबे को कियो तिय तेरो कटाच्छ कटा करिबे को ॥ २९९ ॥

पुनर्यथा—सवैया ।

ऐसे कढ़े गन गोपिन के तन मानो मनोभव भाड़ से काढ़े । त्यों पद्माकर ग्वालन के डफ बाजि उठे गल गाजत गाढ़े ॥ छाक छकी छल-छाइन मैं छिक पावे न छैल छिनो छबि बाढ़े । केसर लै मुख मींजिबे को रस भींजत से कर मींजत ठाढ़े ॥ ३०० ॥

दोहा ।

जाहिर जाइ सकै न तहँ घरहाइन के त्रास ।
परे रहत नित कान्ह के प्रान परोसिन पास॥३०१॥

वैसिक को उदाहरण—सवैया ।

छोरत हो जु छरा के छिनो छिन छाये

तहँाई उमंग अटा के । त्यौं पद्माकर जे सिस-कीन के सोर घने मुख मोरि मजा के ॥ द्वै धन धाम धनी अब ते मनही मन मानौ समान सुधा के । बारि बिलासिनी तौ के जपै अखरा अखरा नखरा अखरा के ॥ ३०२ ॥

दोहा ।

हेरि हीहरन कांति वह मनि सीकरनि सुभाँति ।
दियौ सौंपि मन ताहि तौ धन कौ कहा बिसाति॥
औरौ तीन प्रकार के नायक भेद बखान ।
मानि सवचन चतुर पुनि क्रियाचतुर पहिचान॥

मानी बचनचतुर और क्रियाचतुर को लक्षण ।

करै जु तिय पै मान पिय मानी कहिये ताहि ।
करै वचन की चातुरी बचन चतुर सो आहि ॥
करै क्रिया सौं चातुरी क्रियाचतुर सो जान ।
इनके उदित उदाहरन क्रम ते कहत बखान ॥

मानी को उदाहरण—सवैया ।

बाल बिहाल परी कबकी दबकी यह प्रीति की रीति निहारी । त्यौं पद्माकर है न तुम्है सुधि कान्हो जो बैरी बसन्त बगारी । तातें मिलो

मनभावती सों बलि ह्यां ते इहा बच मान ह-
मारो । कोकिल की कल बानी सुनै पुनि मान
रहैगो न कान्ह तिहारो ॥ ३०७ ॥

दोहा ।

जगत जुराफ़ा ह्वै जियत तज्यो तेज निज भान ।
रूस रहे तुम पूस में यह धौं कौन सयान ॥
संयुत सुमन सु बेलि सी सेली सी गुनग्राम ।
लसत हवेली सी सुघर निरखि नवेली बाम ॥

बचनचतुर को उदाहरण—सवैया ।

दाऊ न नन्दबबा न जसोमति न्यौते गये कहूं लै सँग भारी । हौंहूं इकै पद्माकर पौरि मैं सूनी परी बखरी निसि कारी ॥ देखै न क्यौं कढ़ि तेरे सु खेत पै धाय गई कुटि गाइ हमारी । ग्वाल सों बोलि गोपाल कह्यो सु गुवालिनि पै मनो मोहिनी डारी ॥ ३१० ॥

दोहा ।

बिजन बाग सकरी गली भयो अँधेरो आइ ।
कोऊ तोहि गहै जु इत तौ फिरि कहा बसाइ॥

क्रियाचतुर को उदाहरण सवैया।

आई सु न्यौति बुलाई भली दिन चारि को जाहि गोपालही भावै। त्यों पद्माकर काहू कह्यो के चलो बलि वेगिही सासु बुलावै। सो सुनि रोकि सकै क्यों तहाँ गुरु लोगन में यह न्यौत बनावै। पाहुनो चाहै चल्यौ जबहीं तबहीं हरि सामुहें छींकत आवै॥ ३१२॥

दोहा।

जल विहार मिस भीर में लै चुभकी इक बार।
दह भीतर मिलि परस्पर दोउ करत विहार॥

प्रोषित को लक्षण।

व्याकुल होइ जो विरह बस बसि विदेश मैं कन्त।
ताही सों प्रोषित कहत जे कोविद बुधिवन्त॥

प्रोषित को उदाहरण कवित्त।

साँझ के सलोने घन सबुज सुरंगन सों कैसे कै अनंग अंग अंगनि सताउतो। कहै पद्माकर झकोर झिल्ली सोरन को मोरन को म-हत न कोऊ मन ल्याउतो॥ काहू विरही की कही मानि लेतो जो पै दई जग मैं दई तो द-

यासागर कहाउतो। पावस बनायो तो न विरह बनाउतो जो विरह बनायो तौ न पावस बनाउतो ॥ ३१५ ॥

दोहा।

तजि बिदेश मजि वेसही निज निकेत मैं जाइ।
कब समेटि भुज भेटवौ भामिनि हिये लगाइ ॥
फिर फिर सोचत पथिक यह मेरो निरखि सनेह।
तज्यो गेह निज गेहपति त्यौं न तजै कहुं देह ॥
विकल बटोही बिरह बस यहै रह्यौ चित चाहि।
मिलै जु कहुँ पारस पर्यो पुरकि मिलौं तौ ताहि।

ऊपर तीन दोहों में तीनो नायक वर्णन कर्यो अर्थात् पति उपपति, बेसिका—अनभिज्ञ लक्षण।

बूझै जो न तियान के ठानै विविध बिलास।
सु अनभिज्ञ नायक कह्यो वहै नायकाऽऽभास ॥

अनभिज्ञ नायक— कवित्त।

नैननही सैन करै बीरी मुख दैन करै लैन करै चुम्बन पसारि प्रेम पाता है। कहै पद्माकर त्यौं चातुरी चरित्र करै चित्त करै मोहैं जो वि-

चित्र रतिगाता है ॥ हाव करै भाव करै विविध विभाव करै बूझै प्यौ न एतै पै अबूझन को भ्राता है। ऐसो परवीनि को कियो जो यह पूरुष तौ बीस बिसै जानौ महामूरुख बिधाता है ॥३२०॥

दोहा ।

करि उपाउ हारी जु मैं सनमुख सैन बताइ ।
समुझत प्यौ न इतेहु पै कहा कीजियतु हाइ ॥
जाहि जबहिँ आलम्बि कै उर उपजत रसभाव।
आलम्बन सु विभाव कहि बरनत सब कविराव॥
आलम्बन शृङ्गार के कहे भेद समुझाइ ।
सकल नायका नायकहु लच्छन लच्छ बनाइ ॥
बरनत आलम्बनहि मैं दरसन चारि प्रकार ।
श्रवण चित्र शुभ स्वप्न मैं पुनि परतच्छ निहारि ॥
इन चारिहु दरसनन के लच्छन नाम प्रमान ।
तिनके कहत उदाहरन समुझहु सबै सुजान ॥

श्रवण दर्शन सवैया ।

राधिका सों कहि आई जु तू सखि साँमरे की मृदु मूरति जैसी । ता छिन तें पदमाकर

ताहि सुहात कछू न बिसूरति वैसी ॥ मानहुं नीर भरी घन की घटा आँखिन में रही आनि उनै सी । ऐसी भई सुनि कान्ह कथा जु बिलोकहिगी तब होइगी कैसी ॥ ३२६ ॥

दोहा ।

सुनत कहानी कान्ह की तीय तजी कुलकान ।
मिलन काल लागी करन दूतिन सों पहिचान॥

अथ चित्र दर्शन सवैया ।

चित्र के मन्दिर तें इक सुन्दरी क्यों निकसै जिन्हे नेह नसा है । त्यों पद्माकर खोलि रही दृग बोलै न बोल अडोल दसा है ॥ भृङ्गीप्रतसंग तें भृङ्गही होत जु पै जग में जड़ कीट महा है। मोहन मीत को चित्र लखें भई चित्रही सो तो बिचित्र कहा है ॥ ३२८ ॥

दोहा ।

हरषिउठतिफिरफिरपरखि फिरपरखतिचखलाइ
मित्र चित्रपट को तिया उर सों लेति लगाइ ॥

अथ स्वप्न दर्शन सवैया।

सूने सँकेत में सोंधे सनी सपने में नई दु-
लही तू मिलाई। हौंहू गयो पद्माकर दौरि सो
भौंहै मरोरति सेज लों आई ॥ या मन को मन
ही में रही जु समेटि तिया लै हिया सों लगाई।
आंखें गई खुलि सीबी सुनै सखी हाय मैं नीवी
न खोलन पाई ॥ ३३० ॥

दोहा।

सुन्दरि सपने में लख्यो निसि मे नन्दकिशोर ।
हात भोर लै दधि चली पूछत सकरी खोर ॥

प्रत्यक्षदर्शन को उदाहरण सवैया।

आई भले हौं चली सखियान मैं पाई गो-
विन्द के रूप की झाँकी । त्यों पद्माकर हार
दियो गृहकाज कहा अरु लाज कहाँ की ॥ है
मख तें सिख लों मृदु माधुरी बाँकिये भौंहैं बि-
लोकनि बाँकी। आज की या छबि देखि भटू
अब देखिबे को न रह्यो कछु बाकी ॥ ३३२ ॥

दोहा ।

हौं लखि आई लखहुंगी लखै न क्यौं ब्रज लोग ।
निसि दिन साचहु साँवरो दृगुन देखिबे जोग ॥

सिद्ध श्री कूर्मवंशावतंस श्री मन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्रीसवाई महाराज जगतसिंहाज्ञया मथुरास्थायि मोहनलालभट्टात्मज कवि पद्माकर विरचिते जगद्विनोदनाम्नि काव्ये शृङ्गारमालम्बन विभावप्रकरणम् ॥ १ ॥

जगदविनोद ।

दूसरा भाग ।

अथ उद्दीपनविभाव लक्षण ।

दोहा ।

जिनहिं बिलोकतही तुरत रस उद्दीपन होत ।
उद्दीपन सु बिभाव है कहत कबिन को गोत ॥
सखा सखी दूती सु-बन उपबन षट्ऋतु पौन ।
उद्दीपनहि बिभाव में बरणत कबि मतिभौन ॥
चन्द चांदनी चन्दनहु पुहुप पराग समेत ।
योंही और सिंगार सब उद्दीपन के हेत ॥ ३ ॥
कहि जु नायक के सबै प्रथमहि बिबिध प्रकार ।
अब बरणत हौं तिनहिं के सचिव सखा जे चार॥
पीठमर्द बिट चेट पुनि बहुरि बिदूषक होइ ।
मोचै मान तियान को पीठमर्द है सोइ ॥ ५ ॥

पीठमर्द को उदाहरण—कबित्त ।

घूमि देखौ धरकि धमारन की धूम देखौ
भूमि देखौ भूमित छवावै छबी छबि कै । कहै

पद्माकर उमंग रंग सींचि देखौ केसरि की कीच जो रह्यो मैं ग्वाल गबिकै ॥ उड़त गुलाल देखौ तानन के ताल देखौ नाचत गोपाल देखौ लैहौ कहा दबि कै । झेलि देखौ झपि सकेलि देखौ ऐसो मुख मेलि देखौ मूठि खेलि देखौ फाग फबि कै ॥ ६ ॥

दोहा ।

हौं गोपाल पै भल चहत तेरोई ब्रजबाल ।
चलति क्यों न नँदलाल पै लै गुलाल रँग लाल ॥
सुबिट बखानत हैं सुकबि चातुर सकल कलान ।
दुहुन मिलावै मैं चतुर बहै चेट उर आन ॥८।

बिट को उदाहरण—सवैया ।

पीतपटी लकुटी पद्माकर मोरपखा लै कहूं गहि नाखी । यों लखि हाल गुवाल को ता छिन बाल सखा सुकला अभिलाखी ॥ कोकिल कोकिल कैसी कुहू कुहू कोमल कोक की कारिका भाखी । हसि रही ब्रजबाल के सामुहे आइ रसाल की मञ्जरी राखी ॥ ९ ॥

दोहा ।

हरि को मीत पढ़ीत इमि गायो विरह बलाय ।
परत कान तजि मान तिय मिली कान्ह सों जाय॥

अथ चेटक को उदाहरण—सवैया ।

साजि सँकेत में साँवरे को मु गयोई जहां हुती ग्वालि सयानी । त्यों पदमाकर बालि कह्यो बलि बैठी कहा इतही अकुलानी ॥ तौलौं न जाइ तहां पहिरे किन जौलौं रिसात न सासु जिठानी । हौं लखि आयो निकुञ्जही में परी काल्हि जु रावरी माल हिरानी ॥ ११ ॥

दोहा ।

उतन ग्वालि तू कित चली ये उनये घनघोर ।
हौं आयो लखि तव घरै बैठत कारो चोर ॥
स्वांग ठानि ठानै जु कछु हांसी बचन बिनोद ।
कह्यो विदूषक सो सखा कबिन मान मद मोद॥

अथ बिदूषक को उदा०—सवैया ।

फाग के द्यौस गोपालन ग्वालिनी कै इक ठानि कियो मिसि काज । त्यों पदमाकर औरि

झमाड़ सु ढोरी सबै हरि पै इक हाऊ ॥ ऐसे समै बड़े भीत बिनोदी सु नेसुक नैन किये डर पाऊ । लै हर मूसर ऊसर ह्वै कहूं आयो तहां बनिकै बलदाऊ ॥ १४ ॥

दोहा ।

कटि हलाय हलकाय कछु अद्भुत ख्याल बनाय ।
अस को जाहिँ न फाग में परगट दियो हँसाय ॥

इति सखा—अथ सखी—दोहा ।

जिन सों नायक नायिका राखैं कछु न दुराव ।
सखी कहावैं ते सुघर साँचो सरल सुभाव ॥१६॥
काज सखिन के चारि ये मण्डन शिक्षादान ।
उपालम्भ परिहास पुनि बरणत सुकवि सुजान ॥
मण्डन तियहि सिँगारिबो शिक्षा बिनय-बिलास।
उपालम्भ सो उरहनो हँसी करब परिहास ॥

मण्डन को उदा०—सवैया ।

मांग सँवारि सिँगारि सुबारनि बेनी गुही जु छबानि लों छावै । त्यों पद्माकर या बिधि भौ-रहू साजि सिंगार जु श्याम को भावै ॥ रीझै सखी

लखि राधिका को रँग जा अँग जो गहिनो पहिरावै । होत यों भूषित भूषण गात ज्यों झाँकत ज्योति जवाहिर पावै ॥ १९ ॥

दोहा ।

कहा करौं जो आँगुरिन अनी घनी चुभि जाय ।
अनियारे चख लखि सखी कजरा देत डराय ॥

अथ शिक्षा—सवैया ।

झाँकति है का झरोखे लगी लग लागिबे को इहाँ झेल नहीं फिर । त्यों पदमाकर तीखे कटाछन की सर कौसर सेल नहीं फिर ॥ नैनन हीं की घला घल कै घन घावन को कछु तेल नहीं फिर । प्रीति पयोनिधि मैं धँसि कै हँसि कै कढ़िबो हँसी खेल नहीं फिर ॥ २१ ॥

दोहा ।

बहत लाज बूड़त सुमन भ्रमत नैन तेहि ठांव ।
नेह-नदी की धार में तू न दीजियो पांव ॥२२॥

अथ उपालम्भ—कवित्त ।

ब्रज बहि जाय ना कहूं यों चाहु आँखिन ते

उमँगि अनोखी घटा बर्षति नेह की। कहै पद्माकर चलावै खान पान को को प्रागन परो है आनि दहसति देह की॥ चाहिए न ऐसी वृषभान की किशोरी तोहिँ देइबो दगा जो ठीक ठाकुर सनेह को। गोकुल की कुल को न गैल को गोपाले सुधि गोरस को रस को न गौवन न गेह की ॥ २३ ॥

दोहा।

कौन भाँति आये निरखि तुम तिहिँ नन्दकिशोर।
भरभराति भामिनि परी घनघराति घनघोर ॥

अथ परिहास उदा०—स०।

आई भले द्रुत चाल तूं चातुर आतुर मोहन के मन भाई। सौतिन के सर को पद्माकर पाई कहाँ धौं इती चतुराई ॥ मैं न सिखाई सिखाई स मैनहिं यों कहि रैनि की बात जताई। ऊपर ग्वालि गोपाल तरे सु हरें हँसि यों तसवीर दिखाई ॥ २५ ॥

दोहा।

को तेरो यह साँवरो यों बूझ्यो सखि आइ ।
मुख ते कही न बात कछु रही समुखि मुख नाय॥

अथ दूती लक्षण—दोहा।

दूतपने में ही सदा जो तिय परम प्रवीन ।
उत्तम मध्यम अधम हैं सो दूती बिधि तीन ॥
हरे सोच उचरै बचन मधुर मधुर हित मानि ।
सो उत्तम दूती कही रस ग्रन्थन में जानि॥२८॥

अथ उत्तमा दूती को उदा०—कवित्त।

गोकुल की गलिन गलीन यह फैली बात कान्है नन्दरानी वृषभानु भौन ब्याहती। कहै पद्माकर यहांई त्यों तिहारो चलै ब्याह को चलन यहै सांवरो सराहती॥ सोचति कहा ही कहा करिहैं चवाइन ये आनँद की अवली न काहे अवगाहती। प्यारी उपपति तें सुहोत अनुकूल तुम प्यारी परकीया ते स्वकीया होन चाहती॥

दोहा।

काल्हि कलिन्दी के निकट निरखि रहेही जाहि।
आई खेलन फाग वह तुमहीं सों चित चाहि॥

कछुक मधुर कछु २ परुष कहै बचन जो आय॥
ताही को कवि कहत हैं मध्यम दूती गाय ॥

मध्यम दूती को उदा०—सवैया।

बैन सुधा से सुधा सी हँसी बसुधा में सुधा की सटा करती हौ। त्यों पद्माकर बारहि बार सुबार बगारि लटा करती हौ॥ बीर बिचारे बटोहिन पै बिन काजही तौ यों छटा करती हौ। बिज्जु छटा सी अटा पै चढ़ी सु कटाछनि घालि कटा करती हौ॥ ३२॥

दोहा।

कुंजभवन लौं भावतै कैसे सकहिँ सु आय।
जावक रँग भारनि भटू मग में धरति न पांय॥
कै पिय सों कै तियहि सों कहै परुषही बैन।
अधमा दूती कहत हैं ताही सों मति ऐन॥३४॥

अधमा को उदा०—सवैया।

ऐहै न फेर गई जो निसा तन यौवन है घन की परछाहीं। त्यों पद्माकर क्यों न मिलै उठि यों निबहैगो न नेह सदाही॥ कौन सयानि

जो कान्ह सुजान सों ठान गुमान रही मनमाहीं।
एक जु कंज-कली न खिली तो कहा कहूं भौंर
को ठौर है नाहीं ? ॥ ३५ ॥

दोहा।

के गुमान गुण रूप के तें न ठान गुन मान ।
मनमोहन चित चढ़ि रहीं तोसी किती न आन॥

दूती के कार्य्य।

द्वै दूती के काज ये बिरहा निवेदन एक ।
संघट्टन दूजो कह्यो सुकविन सहित विवेक॥३७॥
बिरहबिथानि सुनाइबो बिरह निवेदन जानि ।
दोउन को जु मिलाइबो सो संघट्टन मानि॥३८॥

अथ बिरह निवेदन को उदाहरण—कवित्त।

आई तजि हौं तो ताहि तरनितनूजा तीर
ताकि ताकि तारापति तरफति ताती सी। कहै
पद्माकर घरीकही में घनश्याम काम तो कत-
लवाज कुंजन ह्वै काती सी ॥ याही छिन वाही
सों न मोहन मिलौगे जोपै लगनि लगाइ एती
अगिनि अवाती सी। रावरी दुहाई तो बुझाई
ना बुझैगी फेर नेहभरी नागरी की देह दिया
बाती सी ॥ ३९ ॥

दोहा।

को जिवावती आजु लों बाढ़े बिरह बलाय।
होती जु पै न तोहि सी ताको नेक सहाय॥४०॥

उदाहरण—कवित्त।

तासन की गिलमें गलीचा मखतूलन के झरपै झुमाऊ रही झूमि रंग हारी मैं। कहै पद्माकर सुदीपमणि मालिनि की लालन की सेज फूल जालन समारी मैं॥ जैसे तैसे नित छल यल सों छबीली वह छिनक छबीले को मिलाय दई प्यारी मैं। छूटि भाजी करतें सु करके बिचित्र गति चित्र कैसी पूतरी न पाई चित्रसारी मैं॥ ४१॥

गोरी को जु गोपाल को होरी के मिस ल्याय।
बिजन सांकरी खोरि में दोऊ दिये मिलाय॥
आपुहि अपनो दूतपन करै जु अपने काज।
ताहि स्वयंदूती कहत ग्रन्थन में कविराज॥४२॥

अथ स्वयंदूती को उदाहरण—कबित।

हंसि कहूं काढ़ि मालो गयो गई ताहि म-

नावन सासु उताली। त्यों पद्माकर न्हान नदी जे हुती सजनी संग नाचनवाली॥ मंजु महा-छबिकी कबकी यह नीकी निकुंज परी सब खाली। हौं इह बाग की मालिनि हौं इत आये भले तुम हो बनमाली॥ ४४॥

दोहा।

मोही सों छिन भेट ले जौलों मिलै न बाम।
शीतभीत तेरो हियो मेरो हियो हमाम॥ ४५॥

षट्ऋत वर्णन बसन्त कवित्त।

कूलनमें केलिमें कछारन में कुंजन में क्यारि-नमें कलिन कलीन किलकंत है। कहै पद्मा-कर परागन में पानहूं में पानन में पीक में प-लासन पतंग हैं॥ हार में दिमान में दुनी में देस देसन में देखो दीप दीपन में दीपत दिगंत है। बीथिन में ब्रजमें नवेलिन में बेलिनमें बननमें बागन में बगरो बसंत है॥ ४६॥

कवित्त।

और भांति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर और डौर भौंरन में बौरन के ह्वै गये। कहै

पद्माकर सु औरै भांति गलिमान छलिया छबीले छैल औरै छबि छ्वै गये ॥ और भांति विहंग समाज में अवाज होत ऐसे ऋतुराज के न आज दिन ह्वै गये। औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग औरै तन औरै मन औरै बन ह्वै गये ॥ ४७ ॥

पात बिन कीन्हें ऐसी भांति गन बेलिन के परत न चीन्हें जे ये लरजत लुंज हैं। कहै पद्माकर बिसासी या बसन्त के सु ऐसे उतपात गात गोपिन के भुंज हैं ॥ ऊधौ यह सूधौ सो सँदेसो कहि दीजो भले हरि सों हमारे ह्यां न फूले बन कुंज हैं। किंसुक गुलाब कचनार औ अनारन की डारन पै डोलत अँगारन के पुंज हैं ॥ ४८ ॥

सवैया।

ये ब्रजचन्द्र चलो किन वा ब्रज लूकैं बसन्त की ऊकन लागी। त्यों पद्माकर पेखो पलासन पावक सी मनो फूकन लागी ॥ वे ब्रजवारी

विचारी बधू बनवारी हिये लौं मुह्कन लागी ॥ कारी कुरूप कसाइनै ये सु कुहू कुहू कोलिया कूकन लागी ॥ ४८ ॥

कवित्त ।

फहरैं फुहार नीर नहर नदी सी बहैं छहरैं छबीन छाम छीटिन की छाटी हैं। कहै पद्माकर त्यों जेठ की जलाकें तहां पावैं क्यों प्रवेश वेस वेलिन की वाटी हैं ॥ बारहू दरीन बीच बारहू तरफ तैसो बरफ बिछाई तापे सीतल सुपाटी हैं। गजक अँगूर को अंगूर सों उचौहैं कुच आसव अँगूर को अँगूरही की टाटी हैं॥

पावस—कवित्त ।

मल्लिकन मंजुल मलिंद मतवारे मिले मंद मंद मारुत मुहीम मनसा की है । कहै पद्माकर त्यों नदन नदीन नित नागर नवेलिन की नजर नसा की है ॥ दौरत दरेरो देत दादुर सु दुंदै दीह दामिनी दमंकत दिसान मै दसा की है । बद्दलनि बुन्दनि बिलोक बगुलान बाग बंगलान बेलिन बहार बरषा की है ॥ ५१ ॥

कवित्त ।

चंचला चमांकें चहूँओरन तें चाह भरी चरज गई थी फेर चरजन लागो री । कहै पद्माकर लवंगन की लोनी लता लरज गई थी फेर लरजन लागो री ॥ कैसे धरौं धीर बीर त्रिविध समीरैं तन तरज गई थी फेर तरजन लागो री । घुमड़ घमंड घटा घन को घनेरो अबै गरज गई थी फेर गरजन लागो री ॥ ५२ ॥

कवित्त ।

बरसत मेह मेह सरसत अंग अंग झरसत देह जैसे जरत जवासो है । कहै पद्माकर कलिंदी के कदम्बन पै मधुपन कीन्हो आइ महत मवासो है ॥ ऊधो यह ऊधम जताइ दीजो मोहन को ब्रज को सुवासो भयो अगिन अवासो है । पातकी पपीहा जलपान को न प्यासो काहू बिथित बियोगिनी के प्रानन को प्यासो है ॥५३॥

शरद—कवित्त ।

तालन पैं ताल पैं तमालन पैं मालन पैं वृन्दावन बीथिन बहार बन्सी बट पै । कहै प-

द्माकर अखण्ड रासमंडल पै मंडित उमंडि महा कालिंदी के तट पै ॥ छिति पर छान पर छाजत छतान पर ललित लतान पर लाडिली के लट पै । आई भली छाई यह शरद जुन्हाई जिहि पाई छवि आजुही कन्हाई के मुकुट पै ॥

कबित्त ।

खनक चुरीन की त्यों ठनक मृदंगन की रुनुक झुनुक सुर नूपुर के जाल को । कहै पद्माकर त्यों बांसुरी की धुनि मिलि रह्यो बँधि सरस सनाको एक ताल को ॥ देखतै बनत पै न कहत बनैरी कछू विविध विलास यों हुलास यह ख्याल को । चन्द छबिरास चांदनी को परकास राधिका को मंद हँास रासमंडल गोपाल को ॥ ५५ ॥

हेमन्त ।

अगर की धूप मृगमद को सुगंध वर बसन विसाल जाल अंग ढांकियतु है । कहै पद्माकर सु पौनको न गौन जहां ऐसे भौन उमँगि उमंगि

छाकियतु है ॥ भोग औ सँयोग हित सुरत हि मन्तहीं में एते और सुखद सुहाय बाकियतु है। तानकी तरंग तरुणापन तरणि-तेज तेल तूल तरुणि तमोल ताकियतु है ॥ ५६ ॥

कवित्त।

गुलगुली गिलमें गलीचा है गुनीजन हैं चांदनी है चिक है चिरागन की माला है। कहै पद्माकर त्यों गजक गिजा है सजी सेज है सुराही है सुरा हे और प्याला है ॥ शिशिर के पाला को न व्यापत कसाला तिन्हें जिनके अधीन एते उदित ममाला है। तान तुकताला है बिनोद के रसाला है सुबाला हैं दुशाला है बिशाला चित्रशाला है ॥ ५७ ॥

इतिश्री कूर्मबंशावतंस श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्रीसवाई महाराज जगतसिंहाज्ञया कविपद्माकरबिरचितजगद्विनोदनामकाव्ये आलंबनबिभावप्रकरणम् ॥ २ ॥

अथ अनुभाव—दोहा।

जिनहीं ते रतिभाव को चित में अनुभव होत।
ते अनुभव शृंगार के बरणत हैं कविगोत॥ १॥
सात्विक भाव स्वभाव धृत आनँद अंग विकास।
इनहीं ते रति भाव को परगट होत विलास॥

अथ अनुभाव को उदाहरण—कवित्त।

गोरस को लूटिबो न कूटिबो छरा को गनै टूटिबो गनै न कछू मोतिन के माल को। कहै पद्माकर गुवालिनि गुनीली हेरि हरषे हँसै यों करै झूठे झूठ ख्याल को। हां करति ना करति नेह की निशा करति सांकरी गली में रंग राखति रसाल को। टोवा दधिदान को सुकैसे ताहिँ भावत है जाहि मन भायो झार झगरो गोपाल को॥ ३॥

दोहा।

मृदु मुसकाय उठाय भुज छन घूंघुट उलटारि।
को धनि ऐसो जाहि तू इकटक रही निहारि॥
स्तम्भ स्वेद रोमांच कहि बहुरि कहत स्वरभंग।
कम्प बरण वैबर्ण्य पुनि आंसू प्रलय प्रसंग॥ ५॥

अन्तरगत अनुमान में आठहु सात्विक भाव ।
जृम्भा नवम बखानहीं जे कवीन के राव ॥ ६ ॥
हरष लाज भय आदिते जबै अंग थकि जात ।
स्तम्भ कहत तासों सबै रसग्रंथनि सरसात ॥ ७ ॥

अथ स्तम्भ—सवैया ।

या अनुराग को फाग लखो जहँ रागती राग किशोर किशोरी । त्यों पद्माकर घाली घली फिर लालही लाल गुलाल की झोरी । जैसी कि तैसी रही पिचकी कर काहू न केसरि रंग में बोरी । गोरिन के रँग भीजगो सांवरो सांवरे के रंग भीजी सुगोरी ॥ ८ ॥

दोहा ।

पियहिपरखि तिय थकि रही बूझेउ सखिननिहार।
चलतिक्यों न क्योंचलहु मग परत न पग रँगभार॥

रोष लाज उर हरष श्रम दूनहीं ते जो होत ।
अंग २ जाहिर सलिल स्वेद कहत कवि गोत ॥

स्वेद को उदाहरण—कवित्त ।

ऐरी बलबीर के अहीरन की भीरन में सि-

मिटि समीरन अँबीर को अटा भयो। कहै पद्माकर मनोज मन मौजनही मैन के छटा में पुनि प्रेम को पटा भयो। नेही नँदलाल को गुलाल की चलाचल में राजै तन तपनी जघन की घटा भयो। चोरै चखचोटिन चलाक चित्त चोरी भयो लूटि गई लाज कुलकानि को कटा भयो॥ ११॥

दोहा।

यों श्रम-सीकर सुमुख ते परत कुचन पर बेश।
उदित चन्द्र मुकताकतनि पूजत मनहुँ महेश॥
शीत भीति हरषादि तें उठै रोम समुदाय।
ताहि कहत रोमांच हैं सुकबिन के समुदाय॥

अथ रोमांच—सवैया।

कैधौं डरी तू खरी जलजन्तु ते कै अंगभार सिवार भयो है। कै नखते सिख लौं पदमाकर जाहिरे भार शृंगार भयो है॥ कैधौं कछू तोहिं शीतबिकार है ताही को या उदगार भयो है। कैधौं सुवारि बिहारहि में तनु तेरो कदम्ब को हार भयो है॥ १४॥

दोहा ।

पुलकित गात अन्हात यों अगी खरी छवि देत ।
उठे अंकुरे प्रेम के मनहु हिम के खेत ॥ १५ ॥
हरष भीत मद क्रोध तें बचन भांतिही और ।
होत जहां स्वरभंग को बरणत कवि सिरमौर ॥

अथ स्वरभंग—सवैया ।

जात हुतो निज गोकुल को हरि आयो तहां लखि कै मग सूना । तासों कह्यौ पदमाकर यों अरे सांवरे बावरे तैं हमै छू ना । आज धौं कैसी भई सजनी उत वा विध बोल कढ्योई कहूं ना । आनि लगायो हियो सों हियो भरि आयो गरो कहि आयो कछू ना ॥ १७ ॥

दोहा ।

हौं जानत जो नाह तुम बोलत अध-अखरान ।
संग लगे कहुँ और के करि आये मदपान ॥ १८ ॥
हरषहि ते कै कोप ते कै भ्रम भय ते गात ।
थरथरात तासों कहत कम्प सुमति सरसात ॥

अथ कंप—सवैया ।

साजि सिंगारनि सेज पै पारि भई मिसही

मिस ओट जिठानी । त्यों पद्माकर आइगो कन्त इकन्त जबै निज तंत में जानो ॥ सो सखि सुन्दरि सुन्दर सेज ते यों सरकी थिरकी थह-रानी । बात के लागे नहीं ठहरात है ज्यों जल-जात के पात पै पानी ॥ २० ॥

दोहा ।

थरथरात उर कर काँपत फरकात अधर सुरंग ।
फरकि पीउ पलकनि प्रकट पीकलीक को ढंग ॥

मोहित ते के क्रोधतें के भयही ते जान ।
बरण होत जहँ और बिधि सो बैवर्ण्य बखान ॥

सवैया ।

सापनेहूँ न लख्यो निशिमें रतिभौन ते गौन कहूं निज पी को । त्यों पद्माकर सौति संजो-गन रोग भयो अनभावतो जीको ॥ हारन सों हहरात हियो मुकता सियरात सु बेसरही को । भावते के उर लागी जऊ तऊ भावती को मुख ह्वै गयो फीको ॥ २३ ॥

दोहा।

कहि न सकत ककुलाज ते अकथ आपनी बात।
ज्योंज्यों निशि नियरात है त्योंत्यों तिय पियरात॥
हरष रोष नक शोक भय धूमादिक ते होत।
प्रगट नीर अँखियान में अश्रु कहत कविगोत॥

अश्रुको उदाहरण—कवित्त।

भेद बिन जाने एती बेदन बिसाहिबे को
आज हौं गईही बाट बंशीबटवारे की। कहै
पद्माकर लटू ह्वै लोट पोट भई चित्तमें चुभी
जो चोट चाय चटवारे की॥ बावरी लौं बूझति
बिलोकित कहा तू बीर जाने कहा कोऊ पीर
प्रेम हटवारे की। उमड़ि उमड़ि बहै बरखे सु-
आँखिन ह्वै घट में बसी जो घटा पीतपट वारे
को॥ २६॥ दोहा।

आंखिनते आंसू उमड़ि परत कुचन पर आन।
जनु गिरीशके शीसपर डारत भष मुकतान॥
तन मनकी न सम्हार जहँ रहै जीवमन गोय।
सो सिंगाररस में प्रलय बरणत कवि सबकोय॥

प्रलय को उदाहरण—सवैया ।

ये नँदगांव ते आये इहां उत आई सुता वह कौनहूं ग्वाल की । त्यों पदमाकर होत जुरा-जुरी दोउन फाग करी इह ख्याल की ॥ डीठ चली उनकी इनपै इनकी उनपै चली मूठि उताल की । डीठसी डीठ लगी उनको इनकै लगी मूठि सी मूठ गुलालकी ॥ २८ ॥

दोहा ।

दै चखचोट अँगोट मग तजी युवति बनमाहिं ।
खरी बिकल कब की परी सुधि शरीरकी नाहिं ॥
पियबिछोह सम्मोह कै आलसही अवगाहि ।
छिनछिन बदन बिकासिवो जृम्भा कहिये ताहि॥

जृम्भा को उदाहरण—सवैया ।

आरस सों रससों पदमाकर चौंकि परेचख चुम्बनके किये । पीकभरी पलकैं झलकैं अलकैं झलकैं छवि छूटि छटा लिये ॥ सो सुख भाखि सकै अब को रिसकै कसकै मसकै छतिया छिये । राति की जागी प्रभात उठी अँगरात जँभात लजात लगी हिये ॥ ३२ ॥

दोहा ।

दरदर दौरति सदमदुति समसुगन्ध सरसाति ।
लखत क्यों न आलसभरी परी तिया जमुहाति ॥

इति सात्विकभाववर्णनम्—दोहा ।

अनुभावहि में जानिये लीलादिक जे हाव ।
ते सँयोग शृंगार में बरणत सब कविराव ॥३४॥

हाव लक्षण—दोहा ।

प्रगट स्वभाव तियानके निज सिँगार के काज ।
हाव जानिये ते सबै यों भाषत कविराज ॥३५॥
लीला प्रथम बिलास विय पुनि बिच्छित्ति बखान ।
बिभ्रम किलकिंचितबहुरि मोट्टाइति पुनिजान ॥
बिब्बोकहु पुनि बिहितगनि बहुरि कुट्टमित गाव ।
रसग्रँथन में ये दसहु हाव कहत कबिराव ॥
पिय तिय को तिय पीउ को धरै जु भूषण चीर ।
लीला हाव बखानहीं ताही को कवि धीर ॥

अथ लीलाहाव को उदाहरण—कवित्त ।

रूप रचि गोपी को गोबिन्द गो तहाँई
जहाँ कान्ह बनि बैठी कोऊ गोप की कुमारी

है। कहै पद्माकर यों उलट कहे को कहा कसकै कन्हैया कर मसकै सु प्यारी है॥ नारी तें न होत नर नर तें न होत नारी विधि की करेहूं कहूं काहू ना निहारी है। काम करता की करतूत या निहारी जहां नारी नर होत नर होत लख्यो नारी है॥ ३९॥

पुनर्यथा—सवैया।

ये इत घूंघट घालि चलैं उत बाजत बांसुरी की धुनि खोलैं। ज्यों पद्माकर ये इते गोरस लै निकसैं यों चुकावत मोलें॥ प्रेम के पंथ सु प्रीत की पैठ में पैठतही है दशा यह जोलैं। राधामयी भई श्याम की सूरत श्याममयी भई राधिका डोलैं॥ ४०॥

॥ दोहा॥

तिय बैठी पिय को पहिरि भूषण वसन विशाल।
समुझिपरत नहिं सखिनको कोतियकोनँदलाल॥
जो तिय पियहि रिझावई प्रगट करै बहु भाव।
सुकवि विचार बखानहीं सो विलास निधि हाव॥

अथ विलास हाव वर्णन—कवित्त ।

शोभित सुमनवारी सुमना सुमनवारी कौन हूं सुमनवारी को नहिं निहारी है । कहै पद्माकर त्यों बांधनू बसनवारी वा ब्रजबसनवारी ह्यो हरनहारी है ॥ सुबरनवारी रूप सुबरन वारी सजै सुबरनवारी काम कर की सम्हारी है । सीकरनवारी सेद-सीकरनवारी रति सी-करनवारी सो बसीकरन वारी है ॥ ४३ ॥

पुनर्यथा—सवैया ।

आई हो खेलन फाग इहां वृषभानपुरा तें सखी सँग लीने । त्यों पद्माकर गावती गीत रिझावती भाव बताय नवीने ॥ कंचन की पिचकी कर में लिये केसरि के रँग सों अँग भीने । छोटी सी छाती छुटी अलकैं अति बैस की छोटी बड़ी परबीने ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

समुझि श्याम को सामुहे कर ते बार बगार ।
मनमोहन-मन हरन को लगी करन शृङ्गार ॥

तनक सिँगारहि में जहां तरुणि महा छबि देत।
सोई वीच्छितिहाव को बरणत बुद्धिनिकेत ॥

अथ बिच्छित बर्णन—सवैया।

मानो मयङ्कहि के पर्यङ्क निशंक लसै सुत
बङ्क मही को। त्यों पद्माकर जागि रह्यो जनु
भाग हिये अनुराग जु पी को॥ भूषण भार शृङ्गा-
रन सों सजि सौतिन को जु करै मुख फीको।
ज्योति को जाल विशाल महा तिय भाल पै
लाल गुलाल को टीको॥ ४७॥

॥ दोहा ॥

जनु मलिन्द अरबिन्द बिच बस्यो चाहि मकरन्द।
इमि इक मृगमद बिन्दु सों किये सुबस ब्रजचन्द॥
होत काज कछु को कछू हरबराय जिहि ठौर।
बिभ्रम तासों कहत हैं हाव सबै सिरमौर॥

सवैया—बिभ्रम।

बछरै खरी प्यावै गऊ तिहि को पद्माकर
को मन लावत है। तिय जानि गौ रैया गही
बनमाल सु ऐचे लला इच्यो छावत है॥ उलटी
कर दोहनी मोहनी को अँगुरी थन जानि कै

दावत है । दुहिबो औ दुहाइबो दोउन को सखि देखतही बनि आवत है ॥ ५० ॥

दोहा ।

पहिरि कण्ठ बिच किङ्किणी कस्यो कमर बिच हार
हरबराय देखन लगो कब ते नन्दकुमार ॥५१॥
होत जहां इकबारही त्रास हास रस रोष ।
तासों किलकिञ्चित कहत हाव सबे निर्दोष ॥

किलकिञ्चित—सवैया ।

फागुन में मधुपान समै पद्माकर आइगे श्याम सँघाती । अञ्चल ऐंचि उँचाय भुजा भरै भूमि गुलाल की ख्याल सुहाती ॥ झूठिहु दै झझकाय तहां तिय झाँका झुकी झझकी मद-माती । रूसि रही घरी अधिक लौं तिय झारत अंग निहारत छाती ॥ ५२ ॥

दोहा ।

चढ़त भौंह धरकत हियो हरषत मुख मुसक्यात ।
मदछाकी तियको जु पिय छबिछकि परसत गात॥
जहँ अंगन की छवि सरस बरनन चलन चितौन ।
ललित हाव ताको कहत जे कवि कविता भौन॥

अथ ललित हाव—कवित्त ।

सजि ब्रजचन्द पै चली यों मुखचन्द जाको चन्द चांदनी को मुख मन्द सो करत जात। कहै पद्माकर त्यों सहज सुगन्धही के पुंज बन कुंजन में कंज से भरत जात ॥ धरत जहांई जहाँ पग है पियारी तहाँ मंजुल मजीठही के माठ से ढ-रत जात। बारन तें हीरा सेत सारी की कि-नारन तें हारन तें मुकता हजारन झरत जात॥

दोहा ।

सजिसिँगार सुकुमार तिय कुटिल भृटगन दराज।
लखहुनाहआवतचली तुमहिं मिलन तकि आज॥
सुनत भावते की कथा भाव प्रगट जहँ होत ।
मोट्टायित तासों कहैं हाव कविन के गोत ॥

अथ मोट्टायितहाव को उदाहरण सवैया ।

रूप दुहूं को दुहून सुन्यो सु रहैं तब ते मानों संग सदाहीं। ध्यान में दोऊ दुहून लखैं हरखैं अँग अंग अनंग उछाहीं ॥ मोहि रहे अब जो यों दुहू पद्माकर और कछू सुधि नाहीं । मोहन

को मन मोहनौ में बस्यो मोहनी को मन मो-
हन माहीं ॥ ५८ ॥

दोहा।

वसीकरन जब तें सुन्यो श्याम तिहारो नाम।
दृगनि मूंदि मोहित भई पुलकि पसीजत बाम ॥
करै निरादर ईठ को निज गुमान गहि बाम।
कहत हाव बिब्बोक बहु जे कबि मति अभिराम ॥

अथ बिब्बोक हाव को उ०—सवैया।

केसर रंग महावर से सरसै रस रंग अनंग
चमू के। धूम धमारन को पद्माकर छाय अकास
अबीर के मूके ॥ फाग यों लाड़िली को तिहि में
तुम्हें लाज न लागत गोप कहूं के। छैल भये छ-
तियां छिरकौ फिरौ कामरी ओढ़े गुलाल के
टूके ॥ ६२ ॥

दोहा।

रही देखि दृग दै कहा तुहिं न लाज कछु कूत।
मैं बेटी वृषभान की तू अहीर को पूत ॥ ६३ ॥
लाजनि बोलि सकै नहीं पियहि मिलेहू नारि।
विहृत हाव तासों सबै कविजन कहत बिचारि ॥

अथ विहृत हाव को उ०—सवैया।

सुन्दरि को मणिमन्दिर में लखि आये गोविन्द बनै बड़ भागे। आनन ओप सुधाकर सी पद्माकर जोबन ज्योति के जागे॥ औचक ऐंचत अञ्चल के पुलकी अँग अंगहि यों अनुरागे। मैन के राज में बोलि सकी न भटू ब्रजराज सों लाज के आगे॥ ६५॥

दोहा।

यह न बात आको कछू लहि यौवन परगास।
लाजहि ते चुप ह्वै रहति जो तू पिय के पास॥
तन मर्दत पिय के तिया दरसावत झुठ रोष।
याहि कुट्टमित कहत हैं भाव सुकवि निर्दोष॥

अथ कुट्टमित हाव वर्णन—कवित्त।

अञ्चल के ऐंचे चल करती दृगंचल की चंचला तें चंचल चलै न भजि द्वारे को। कहै पद्माकर परै सी चौंक चुंबन में छलनि छपावै कुच कुंभनि किनारे को॥ छाती के छुवे पै परै राती सी रिसाय गलबाहीं के किये पै नाहिं

नाहिं ये उचारे को। ही करत सीतल तमासे तुंग ती करत सी-करति रति में बसीकरत प्यारे को ॥ ६८ ॥

दोहा।

कर ऐंचत आवत इँची तिय आपुहि पिय ओर।
भूठिहुं रूसि रहै छिनक छुवत छरा को छोर ॥
दै जुड़ि ठाई नाह सँग प्रगटै विविध विलास।
कहत ग्यारहीं हाव सो हेला नाम प्रकास॥७०॥

अथ हेला हाव वर्णन—सवैया।

फाग के भीर अभीरन में गहि गोविन्दै लै गइ भीतर गोरी। भाई करी मन की पद्माकर ऊपर नाय अबीर की भोरी ॥ छीन पितम्बर कम्मर तैं सुबिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी। नैन नचाइ कही मुसकाय लला फिर आइयो खेलन होरी ॥ ७१ ॥

दोहा।

हर बिरंचि नारद निगम जाको लहत न पार।
ता हरि को गहि गोपिका गरबि गुहावत बार ॥

ठानि क्रिया कछु तिय पुरुष बोधन करै जु भाव।
रस ग्रंथन में कहत हैं तासों बोधक हाव॥ ७३॥

बोधक हाव वर्णन—सवैया।

दौज अटान चढ़े पद्माकर देखें दुहू को दुवो छवि छाई। त्यों ब्रजबाल गोपाल तहां बनमाल तमालहि को दरसाई॥ चन्द्रमुखी चतुराई करी तब ऐसी कछू अपने मन भाई। चंचल ऐंचि उरोजन तें नँदलाल को मालती-माल दिखाई॥ ७४

दोहा।

निरखि रहे निधि बन तरफ नागर नन्दकुमार।
तोरि हीर को हार तिय लगी बगारन बार॥

इति श्री कूर्मवंशावतंस श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्री सवाई महाराज जगतसिंहाज्ञया मथुरास्थाने मोहनलाल भट्टात्मज कवि पद्माकर विरचित जगद्विनोदनामकाव्य अनुभाव प्रकरणम्।

अथ संचारी भाव—दोहा।

थाई भावन को जिते अभिमुख रहैं सिताव।
जे नव रस में संचरै ते संचारी भाव ॥ १ ॥

थाई भावन में रहत या बिधि प्रगट बिलात।
ज्यों तरंग दरियाव में उठिउठि तितहि समात॥

थिर ह्वै थाई भाव तब परिपूरण रस होत।
थिर न रहत रसरूप लों संचारिन को गोत॥

थाई संचारिकन को है इतनोई भेद।
संचारिन के कहत हैं तेंतिस नाम निबेद॥

कवित्त।

कहि निरबेद ग्लानि शंका त्यों असूया श्रम मद धृत आलस विषाद मति मानिये। चिन्ता मोह सुपन बिबोध स्मृति अमरख गर्ब उतसुकता सु अवहित ठानिये ॥ दीनता हरख ब्रीड़ा उ-ग्रता सु निद्रा व्याधि मरण अपस्मार आवेगहु आनिये। त्रास उन्माद पुनि जड़ता चपलताई तेंतिसौ बितर्क नाम याही विधि जानिये ॥५॥

दोहा।

या विधि संचारी सबै बरणत हैं कवि लोग ।
जो जेहि रस में संचरैं ते तहँ कहिबे योग ॥६॥
डर उपजै कछु खेद लहि बिपति ईरष ज्ञान ।
ताही ते निज निदरिबो सो निरबेद बखान ॥
स्वति उसास अरु दीनता बिबरण अश्रु निपात ।
निरवेदहु ते होत है ये सुभाव निज गात ॥८॥

निर्वेद सवैया।

यों मन लालची लालच में लगि लोभ तरंगन में अवगाह्यो । त्यों पद्माकर देह के गेह के नेह के काज न काहि सराह्यो ॥ पाप किये पै न पातकीपावन जानि के राम को प्रेम निबाह्यो । चाह्यो भयो न कछू कबहूँ यमराजहू सों बृथा बैर बिसाह्यो ॥ ९ ॥

दोहा।

भयो न कोऊ होइगो मो समान मतिमन्द ।
तजे न अबलों विषय बिष भजे न दशरथनन्द॥
भूखहिं ते कि पियास तें कै रतिश्रम ते अंग ।
बिह्वल होत गलानि सों कम्पादिक स्वरभंग ॥

ग्लानि को उदा०—सवैया।

आजु लखी मृगनैनी मनोहर बेनी छुटी छ-हरै छबि छाई। टूटे हरा हियरा पै परे पद्माकर लीक सी लंक लुनाई॥ कै रति केलि स-केलि सुखै कलि केलि के भौन ते बाहिर आई। राजि रही रति आँखिन में मन में धौं कहा तन में शिथिलाई॥ १२॥

दोहा।

शिथिल गात काँपत हियो बोलत बनत न बैन।
करी खरी बिपरीत कहुं कहत रँगीले नैन॥
कै अपनी दुर्नीति कै दुवन क्रूरता मानि।
आवै उर में शोच अति सो शंका पहिचानि॥

अथ शङ्का—कवित्त।

मोहि लखि सोवत बिथोरि गो सुबेनी बनी तोरिगो हियो को हरा छोरिगो सुगैया को। कहै पद्माकर त्यों घोरिगो घनेरो दुख बोरिगो बि-सासी आज लाजही की नैया को॥ अहित अ-नैसो ऐसो कौन उपहास यहै सोचत खरी मैं परी जोवत जुन्हैया को। बूझैंगी चवैया तब कैहौं

कहा दैया हूत पारिगो को मैया मेरी सेज पै कन्हैया को ॥ १५ ॥

दोहा ।

लगै न कहुं व्रज गलिन मैं आवत जात कलंक ।
निरखि चौथ को चांद यह सोचत सुमुखि सशंक॥
सहि न सकै सुख और को यहै असूया जान ।
क्रोध गर्व दुख दुष्टता ये सुभाव अनुमान ॥१७॥

अथ असूया को उदा०—कवित्त ।

आवत उसासी दुख लगै और हाँसी सुनि दासी उर लाय कहो को नहिं दहा कियो । कहै पद्माकर हमारे जान ऊधो उन तात को न मात को न भ्रात को कहा कियो ॥ कांकालिनि कूबरी कलंकिनि कुरूप तैसी चेटकनि चेरी ताकी चित्त को चहा कियो । राधिका की कहवत कहि दीजो मोहन सों रसिक-शिरोमणि कहाय धौं कहा कियो ॥ १८ ॥

दोहा ।

जैसे को तैसो मिलै तबहीं जुरत सनेह ।
ज्यों त्रिभंग तन श्याम को कुटिल कूबरी देह ॥

धन यौवन रूपादि तें कै मदादि के पान ।
प्रगट होत मद भाव तहँ औरै गति बतरान ॥

मद को उदाहरण—सवैया ।

पूस निशा मैं सुबारुणी लै बनि बैठे दुहूं मद के मतवाले । त्यों पद्माकर झूमैं झुकैं घन घूमि रचे रस रंग रसाले ॥ सीत को जीति अभीत भये सु गनै न सखी कछू शाल दुशाले । छाक छको छबिही को पिये मद नैनन के किये प्रेम के प्याले ॥ २१ ॥

दोहा ।

धनमद यौवनमद महा प्रभुता को मद पाय ।
तापर मद को मद जिन्हें को तेहि सकै सिखाय॥
अति रति अति गति ते जहाँ सुअतिखेद सरसाय।
सों श्रम तहाँ सुभाव ये खेद उसास मनाय ॥

अथ श्रम को उदा॰—सवैया ।

कै रतिरंग थकी थिर ह्वै परयंक में प्यारी परी सुख पाय कै । त्यों पद्माकर स्वेद के बुंद रहे मुकताहल से तन छाय कै ॥ बिन्दु रचे मेहँदी के लसे कर तापर यों रह्यो आनन आय

कै। इन्दु मनौं अरबिन्द पै राजत इन्द्रबधून की बृन्द बिछाय कै ॥ २४ ॥

दोहा।

श्रम जलकन टलकन प्रगट पलकन थकित उसास
करी खरी बिपरीत रति परी बिसासी पास ॥
साहस ज्ञान सुसंग तैं धरै धीरता चित्त।
ताही सों धृति कहत हैं सुकवि सबै नित नित्त॥

अथ धृति को उदा०—सवैया।

रे मन साहसी साहस राखु सुसाहस सों सब जेर फिरैंगे। ज्यों पदमाकर या सुख में दुख त्यों दुख में सुख सेर फिरैंगे॥ वैसही बेणु बजावत श्याम सु नाम हमारहु टेर फिरैंगे। एक दिना नहिं एक दिना कबहूं फिर वै दिन फेर फिरैंगे॥ २७॥

पुनर्यथा—सवैया।

या जग जीवन को है यहै फल जो छल छाड़ि भजै रघुराई। शोधि कै सन्त महन्तनहूं पदमाकर बात यहै ठहराई॥ ह्वै रहै होनी प्रयास

बिना अनहानी न ह्वै सकै कोटि उपाइ। जो बिधि भाल में लोक लिखी सो बढ़ाई बढ़ै न घटै न घटाई ॥ २८ ॥

दोहा।

बनचर बन-चर गगनचर अजगर नगर निकाय।
पद्माकर तिन सबन की खबर लेत रघुराय ॥
जागरणादिक ते जहां जो उपजत अलसानि।
ताही को आलस कहत जे कोविद रसखानि ॥

आलस को उदा० - कबित्त।

गोकुल में गोपिन गोविन्द संग खेली फाग राति भरि प्रात समै ऐसी छबि छलकैं। देहैं भरी आलस कपोल रस रोरी भरे नींदभरे नयन कछूक झपैं झलकैं॥ लाली भरे अधर बहाली भरे मुख-बर कवि पद्माकर बिलोकै कौन सलकैं। भाग भरे लाल औ सुहाग भरे सब अंग पीक-भरी पलकैं अबीर भरी अलकैं॥ ३१ ॥

॥ दोह ॥

निसि जागी लागी हियें प्रीति उमंगत प्रात।
उठि न सकत आलसबलित सहज सलोने गात॥

करै न कछु उद्योग जहँ उपजै अतिही सोच ।
ताहि बिषाद बखानहीं जे कबि सदा अपोच ॥

अथ विषाद वर्णन—कवित्त ।

सोच न हमारे कछू त्याग मनमोहन के तन को न सोच जो पै योंही जर जाय है। कहै पदमाकर न शोच अब एहू यह आइहै तो आनिहै न आइ है न आइ है ॥ योग को न सोच अरु भोग को न सोच कछू येही बड़ो सोच सो तो सबनि सुहाइ है। कूबरी के कूबर में बेध्यो है त्रिभंग ता त्रिभंग को त्रिभंगी लाल कैसे सुरझाइ है ॥ ३४ ॥

पुनर्यथा कवित्त ।

एकै संग धाये नन्दलाल औ गुलाल दोऊ दृगनि गये जु भरि आनँद मढ़ै नहीं। धोय धोय हारी पदमाकर तिहारी सौंह अब तो उपाय एकौ चित्त पै चढ़ै नहीं॥ कैसी करौं कहाँ जाउँ कासों कहौं कौन सुनै कोऊ तो निकासौ जासों दरद बढ़ै नहीं। येरी मेरी बीर जैसे तैसे इन

आँखिन तें कढ़िगो अबीर पै अहीर को कढ़ै नहीं ॥ ३५ ॥

दोहा ।

अब न धीर धारत बनत सुरत बिसारी कन्त ।
पिक पापी पीकन लगे बगर्यौ बधिक बसन्त ॥
नीति निगम आगमन ते उपजै भलो बिचार ।
ताही को मति कहत हैं सब ग्रन्थन को सार ॥

मति को उदाहरण—सवैया ।

बादहि बाद बदी कै बकै मति बोर दै बंज बिषै बिषही को । मानि लै या पदमाकर की कही जो हित चाहत आपने जी को ॥ शम्भु के जीव को जीवनमूरि सदा सुखदायक है सबही को । रामहि राम कहै रसना कस ना तु भजे रसनाम सही को ॥ ३६ ॥

दोहा ।

पाछे परन कुसंग के पदमाकर यहि डीठ ।
परधन खात कुपेट ज्यों पिटत बिचारी पीठ ॥
जहँा कौनहूं बात की चित में चिन्ता होय ।
चिन्ता ताकों कहत हैं कवि कोविद सब कोय ॥

चिन्ता को उदाहरण कवित्त ।

झिलत झकोर रहै जोबन को जोर रहै समद मरोर रहै सोर रहै तब सों । कहै पद्माकर तकैयन के मेह रहै मेह रहै नैननि न मेह रहै दब सों ॥ बाजत सुबैन रहै उनमद मैन रहै चित में न चैन रहै चातकी के रब सों । गेह में न नाथ रहै हारे ब्रजनाथ रहै कब लों मन हाथ रहै साथ रहै सब सों ॥ ४२ ॥

दोहा ।

कोमल कंज मृणाल पै कियो कलानिधि वास ।
कबको ध्यान रह्यो जु धरि मित्रमिलन की आस ॥
आपुहि अपनी देह को ज्ञान जबै नहिं होय ।
विरह दुःख चिन्ता जनित मोह कहावत सोय ॥

मोह को उदाहरण—सवैया ।

दोउन को सुधि है न कछू बुधि वाही बलाइ में बूड़ि बही है । त्यों पद्माकर दीन मिलाय क्यों चंग चवायन को उमही है ॥ आजुहि को वा दिखादिख में दशा दोउन की नहिं

जात कही है। मोहन मोहि रह्यो कब को कब की वह मोहनी मोहि रही है ॥ ४५ ॥

दोहा।

सटपटाति कब को हँसी दीह द्दगन में मेह।
सुब्रजबाल मोही परत निरमोही के नेह ॥४६॥
सुपन स्वप्न को देखिबो जगिबो वहै बिबोध ।
सुमिरन बीती बात को सुम्रति भाव सब शोध ॥

स्वप्न को उदाहरण—सवैया।

काँपि रहै छिन सोवतहूं कछु भाषिबो मो अनुसारि रही है। त्यों पद्माकर रंच रुमंचनि स्वेद के बुन्दनि धारि रही है॥ वेष दिखादिखी कै सुख में तन की तनकों न सम्हार रही है॥ जानति हौं सखि सापने में नँदलाल को नारि निहारि रही है॥ ४८॥

दोहा।

क्योंकरि झूठी मानिये सखि सपने की बात।
जुहरि हर्यो सोवत हियो सो न पाइयत प्रात ॥

बिबोध को उदाहरण—कबित्त।

अधखुली कंचुकी उरोज अध आधे खुले अध

खुले बैस नख रेखन की झलकैं। कहै पद्माकर नवीन अधनीवी खुली अधखुले छहरि छरा के चोर छलकैं॥ भोर जगि प्यारी अध ऊरध इते की ओर भाषी झिखि झिरकि उघारि अध पलकैं। आँखें अधखुलीं अधखुली खिरकी है खुली अध खुले आनन पै अधखुली अलकैं॥ ५० ॥

दोहा।

अनुरागी लागी हिये जागी बड़े प्रभात ।
ललित नैन बेनी छुटी छाती पर छहरात ॥११॥

स्मृति को उदाहरण—सवैया।

कंचन आभा कदम्ब तरे करि कोऊ गई तिय तीज तयारी। ह्वाँ हू गई पद्माकर त्यों चलि औचक आइगो कुंजविहारी॥ हरि हिंडारे चढ़ाय लियो कियो कौतुक सो न कह्यो परै भारी। फूलन वारो पियारी निकुंज को भूलन है नव भूलनवारो ॥ ५२ ॥

दोहा।

करी जु श्री तुम वा दिना वाके सँग बतरान ।
वहै सुमिरि फिरि २ तिया राखति अपने प्रान॥

जहाँ जु अमरख होत लखि दूजे को अभिमान।
अमरख ताको कहत हैं जे कबि सदा सुजान॥

अमरख वर्णन—कवित्त।

जैसो तै न मोसों कहूं नेकहूं डरात हुतो ऐसो अब हौंहूं तोसों नेकहूं न डरिहौं। कहै पदमाकर प्रचण्ड जो परैगो तो उमण्ड करि तोसों भुजदण्ड ठोंकि लरिहौं॥ चलो चलु चलो चलु बिचल न बीचही तें कीच बीच नीच तो कुटुंब की कचरिहौं। ऐरे दगादार मेरे पातक अपार तोहिं गंगा के कछार में पछारि छार करिहौं॥

दोहा।

गरब सुअंजनहीं बिना कंजन को हरि लेत।
खंजनमदभंजन अरथ अंजन अँखियन देत॥
बल विद्या रूपादि को कीजे जहाँ गुमान।
गरब कहत सब ताहि को जे कबि सुमतिसुजान॥

गरब को वर्णन—कवित्त।

बानी के गुमान कल कोकिल कहानी कहा बानी की सुबानी जाहि आवत भनै नहीं। कहै पदमाकर गोराई के गुमान कुच कुम्भन पै कि-

सरि की कंचुकी ठनै नहीं ॥ रूप के गुमान तिल-उत्तमा न आनै उर आनन निकाई पाइ चन्द्र को रनै नहीं ॥ मृदुता गुमान मखतूलहू न मानै कछु गुन के गुमान गुनगौरि को गनै नहीं ॥

दोहा ।

गुल पर गालिब कमल है कमलन पै गुलाब ।
गालिब गहब गुलाब पै मोतन सुरभि सुभाव ॥
जहाँ हितू के मिलनहित चाह रहति हियमाहिं ।
उतसुकता ताको कहत सब ग्रन्थन में चाहि ॥

उतसुकता वर्णन—कवित्त ।

ताकिये तितै तितै कुसुँभ सौ चुवोई परै प्यारी परबीन पाउँ धरति जितै जितै । कहै पद्-माकर सुपीन ते उताली बनमाली पै चली यों बाल बासर बितै बितै ॥ बारही के भारन उतारि देत आभरन हीरन के हार देति हिलिन हितै हितै । चांदनी के चौसर चहूंघा चौक चांदनी में चांदनी सी आई चन्द्र चांदनी चितै चितै ॥

दोहा।

सजि विभूषण बसन सब सुपिय मिलन की हौंस।
सह्यौ परति नहिं कैसहूं रह्यौ अधघरी द्यौस ॥
जो जहँ करि कछु चातुरी दशा दुरावै आय ।
ताहीं कौं अवहित्थ यह भाव कहत कबिराय ॥

अवहित्थ को वर्णन—सवैया।

भोर जगी जमुनाजल धार में धाय धँसी जल-केलि की माती । त्यों पद्माकर पैंग चलै उछलै जब तुंग तरंग बिघाती ॥ टूटे हरा छरा छूटे सबै सरबोर भई अँगिया रँगराती । को कहतो यह मेरी दशा गहतो न गोबिन्द तो मैं बहि जाती ॥ ६४ ॥

दोहा।

निरखतही हरि हरष कै रहे सु आँसू छाय ।
बूझत अलि केवल कह्यो लग्यो धूमहीं धाय ॥
अतिदुख ते बिरहादि तैं परति जबहि जो दीन।
ताहि दीनता कहत हैं जे कवित्त-रसलीन ॥

दीनता को उदा०—सवैया।

कै गिनती सी हुती बिनती दिन तीनक लौं

बहु बार सुनाई । त्यों पद्माकर मोहमया करि तोहिं दया न दुखीन की आई ॥ मेरो हरा हर-हार भयो अब ताहि उतारि उन्हैं न दिखाई । ल्याई न तू कबहूं बनमाल गोपाल की वा पहिरी पहिराई ॥ ६७ ॥

दोहा ।

मुख मलीन तन छीन छबि परी सेज पर दीन ।
लेत क्यों न सुधि साँवरे नेही निपट नवीन ॥
जहाँ कौनहूं बात तें उर उपजत आनन्द ।
प्रकटे पुलक प्रसेद ते कहत हरष कविब्रन्द ॥

हर्ष को उदा० · सवैया ।

जगजीवन को फल जानि पस्यो धनि नैननि को ठहरैयतु है । पद्माकर त्यों हुलसै पुलकै तन सिन्धु सुधा के अन्हैयतु है ॥ मन पैरत सो रस के नद में अति आनँद में मिलि जैयतु है । अब ऊँचे उरोज लखे तिय के सुरराज के राज सों पैयतु है ॥ ७० ॥

दोहा।

तुमहिं विलोकि विलोकि ये हुलसि रहे यों गात।
आँगी मैं न समात उर उर में मुद न समात ॥
जहाँ कौनहू हेत तें उर उपजत अति लाज।
व्रीड़ा ताकों कहत हैं सुकविन के सिरताज ॥

व्रीड़ा को उदा० — कवित्त।

कालिह परों फिर साजबी स्यान सु आजु तौ नैन सों नैन मिला लै। त्यों पद्माकर प्रीति प्रतीति में नीति की रीति महा उर सालै ॥ ये दिन यौवन के तौ हुतै सुन लाज हुती तु करैगी कहा लै। नेक तौ देखन दै मुखचन्द सों चन्द्र-मुखी मति घूंघुट घालै ॥ ७३ ॥

दोहा।

प्रथम समागम की कथा बूझी सखिन जु आय।
मुख नवाय सकुचाय तिय रही सु घूंघट नाय ॥
निरदैपन सो उग्रता कहत सुमति सब कोय।
शयन कहावत सोइबो वहै सु निद्रा होय ॥७५॥

उग्रता को उदाहरण — कवित्त।

सिन्धु के सपूत सुत सिन्धुतनया के बन्धु म-

न्दिर अमन्द सुभ सुन्दर सुधाई के। कहै पदमा-
कर गिरीश के बसे हौ सीस तारन के ईस कुल-
कारन कन्हाई के॥ हालही के बिरह बिचारी
ब्रजबालही पै ज्वाल से जगावत जुआल सी जु-
न्हाई के। येरे मतिमन्द चन्द आवत न तोहिं
लाज ह्वै के द्विजराज काज करत कसाई के॥

दोहा।

कहा कहौं सखि काम को हिय निरदैपन आज।
तन जारत पारत बिपति अपति उजारत लाज॥

निद्रा को उदाहरण—कवित्त॥

चहचही चुभकै चुभी है चौंक चुम्बन की
लहलही लांबी लटैं लपटी सु लंक पर। कहै
पदमाकर मजानि मरगजी मंजु मसकी सु आंगी
है उरोजन के अंक पर॥ सोई सर सार यों सु-
गन्धनि समोई स्वेद सीतल सलोने लोने बदन
मयंक पर। किन्नरी नरी है कै छरी है छविदार
परी टूटि सी परी है कै परी है परयंक पर॥

दोहा।

नन्दनँदन नव नागरी लखि सोवत निरमूल ।
उर उथरै उरजन निरखि रह्यो सु आनन फूल॥
विरह विवस कामादि तै तन सन्तापित हाय ।
ताही को सब कवि कहत व्याधि कहावत सोय॥

व्याधि को उदाहरण—कवित्त।

दूरही ते देखत विथा मैं वा वियोगिनि की भाई भले भाजि यहां लाज मढ़ि आवैगी । कहै पद्माकर सुनो हो घनश्याम जाहि चेतत कहूं जो एक आहि कढ़ि आवैगी ॥ सर सरितान को न सूखत लगैगो देर येती कछू जुलमिन ज्वाल बढ़ि आवैगी । ताके तन ताप को कहौं मैं कहा बात मेरे गातहि छुवो तौ तुम्हैं ताप चढ़ि आवैगी ॥ ८१ ॥

॥ दोहा ॥

काब की अजब बजार मैं परी बाम तन काम ।
तिन कोऊ मत लीजियो चन्द्रोदय को नाम ॥
प्राण त्यागि कहिये मरन सो न बरणिबे योग ।
वर्णत सूर सतीन को सुयश हेत कवि लोग ॥

मरण को उदा०—सवैया।

जानकी को सुनि आरत नाद सु जानि दशानन की कुलहाई। त्यों पदमाकर नीच निशाचर आइ अकाश में आड्यो तहांई॥ रावण ऐसे महारिपु सों अति युद्ध कियो अपने बलताई। सोहत श्रीरघुराज के काज पै जीव तजै तो जटायु की नांई॥ ८४॥

पुनर्यथा कवित्त।

पाली पैज पन की प्रवेश करि पावक मों पौन से सिताब सह गौन को गती भई। कहै पदमाकर पताका प्रेम पूरण की प्रकट पतिब्रत की सौगुनी रती भई॥ भूमिहू अकाशहू पतालहू सराहैं सब जाको यश गावत पवित्र मो मती भई। सुनत पयान श्रीप्रताप को पुरन्दर पै धन्य पटरानी जोधपुर में सती भई॥ ८५॥

दोहा।

हने राम दससीस के दसौ सीस भुज बीस।
लै जटायु की नजरि जनु उड़े गीध नभ सीस॥

सह दुःखादिक ते जहाँ होत कम्प भूपात ।
अपस्मार सो फेनमुख श्वासादिक सरसात ॥

अपस्मार को उदा०—सवैया ।

जा छिन तें सुन साँवरे रावरे लागे कटाच्छ कछू अनिआरे । त्यों पद्माकर ता छिन ते तिय सों अँग अंग न जात सम्हारे ॥ ह्वै हिय हायल घायल सी घन घूमि गिरी परी प्रेम तिहारे । नैन गये फिर फेन बहै मुख चैन रह्यो नहिं मैन के मारे ॥ ८८ ॥

दोहा ।

लखि विहाल एकै कहत भई कहूँ भयभीत ।
छकै कहत मिरगी लगी लगी न जानत प्रीत ॥
अति डर तें अति नेह तें जु उठि चालियतु बेग ।
ताही कों सब कहत हैं संचारी आवेग ॥ ९० ॥

अथ आवेग वर्णन—क० ।

आई संग आलिन के ननद पठाई नीठ सोहत सोहाई सीस ईंगुरी सुपट की । कहै पद्माकर गँभीर यमुना के तीर लागी घट भरन नवेली नेह अटकी ॥ ताही समै मोहन सु बाँ-

रुरी बजाई तामें मधुर मलार गाई और बंशी-
बट की। तान लगे लटकी रही न सुधि घूंघुटकी
घाट की न औघट की न बाट की न घट की॥

॥ दोहा ॥

सुनि आहट पियपगनिकी भभरि भजी यों नारि।
कहुं कंकन कहुं किंकिनी कहूं सु नूपुर डारि ॥
जहाँ कौनहूं अहित ते उपजत कछु भय आय।
ताही को नित त्रास कहि बरनत हैं कविराय॥

अथ त्रास को उदाहरण—स०।

ए ब्रजचन्द्र गोबिन्द गोपाल सुनो न क्यों
केते कलाम किये मैं त्यों पद्माकर आनँद के
नद हो नँदनन्दन जानि लिये मैं॥ माखनचोरी
के खोरिन ह्वै चले भाजि कछू भय मानि जिये
मैं। दूरिहो दौरि दुरे जो चहो तो दुरो किन
मेरे अँधेरे हिये मैं॥ ६४ ॥

दोहा।

सिसिर सीत भयभीत कछु मुपरि प्रीति के पाय।
आपुहि ते तजि मान तिय मिली प्रीतमैं जाय॥
अविचारित आचरन जो सो उनमाद बखान।
व्यर्थ बचन रोदन हँसी ये स्वभाव तहँ जान॥

उन्माद को उदा०—कवित्त।

आपहिं आप पै रूसि रही कबहूं पुनि आपुहिं आप मनावै। त्यों पद्माकर तालि तमालनि भेटिबे को कबहूँ उठि धावै॥ जो हरि रावरो चित्र लखै तौ कहूं कबहूं हँसि हेरि बुलावै। व्याकुल बाल सुआलिन सों कह्यो चाहै कछू तौ कछू कहि आवै॥ ८७॥

दोहा।

छिन रोवति छिन हँसि उठति छिन बोलति छिन मौन
छिन छिन पर छीनी परति भई दशा धौं कौन॥
गमन ज्ञान आचरण को रहै न जहँ सामर्थ।
हित अनहित देखै सुनै जड़ता कहत समर्थ॥

जड़ता को उदा०—कवित्त।

आज बरसाने की नवेली अलबेली वधू मोहन विलोकिबे को लाज काज लै रही। छज्जा छज्जा झाँकती झरोखनि झरोखनि ह्वै चित्रसारी चित्रसारी चन्द्र सम ह्वै रही॥ कहै पद्माकर त्यों निकस्यो गोबिन्द ताहि जहां तहां इकटक ताकि घरी ह्वै रही। छज्जावारी छकी

सो उझको सो झरोखावारो चित्र कैसो लिखो चित्रसारी वारो ह्वै रहो ॥ १०० ॥

दोहा ।

हलैं दुहूं न चलैं दुहूं दुहुन बिसरिगे गेह ।
इकटक दुहुंनि दुहूं लखैं अटकि अटपटे नेह ॥
जहँ अति अनुरागादि ते थिरता कछू रहै न ।
तित चित चाहै आचरण वहै चपलता ऐन ॥

चपलता को उदा०—स० ।

कौतुक एक लख्यो हरि ह्यां पदमाकर यों तुम्हैं जाहिर को मैं। कोऊ बड़े घर को ठकुराइनि ठाढ़ी न घात रहै छिन को मैं॥ झांकति है कबहूं झँझरीन झरोखनि त्यों सिरकी सिरकी मैं। झांकतिही खिरको में फिरे थिरको थिरको खिरको खिरको मैं ॥ ३ ॥

दोहा ।

चकरी लौं सँकरी गलिन छिन आवत छिन जात
परी प्रेम के फन्द में बधू बितावत रात ॥ ४ ॥
उर उपजत सन्देह जहँ कोजे कछू विचार ।
ताहि वितर्क विचारहीं जे कवि सुमति उदार॥

बितर्क को उदा०—कवित्त ।

द्यौस गुण गौरि के सु गिरिजा गोसांइन को आवत यहांहो अति आनँद इते रहै । कहै पद-माकर प्रतापसिंह महाराज देखो देखिबे को दिव्य देवता तिते रहै ॥ शैल तजि बैल तजि फैल तजि गैलन में हेरत उमा को यों उमापति हिते रहै । गौरिन में कौन धौं हमारी गुण गौरि कहै शम्भु घरी चारक लौं चकित चिते रहै ॥ ६ ॥

पुनर्यथा कवित ।

वेऊ आये द्वारे हौं हुती जो अगवारे और द्वारे अगवारे कोऊ तौ न तिहि काल में । कहै पद-माकर वे हरखि निरखि रहे त्योंहीं रही हरषि निरखि नँदलाल में ॥ माहिं तो न जान्यो गयो मेरी आली मेरा मन मोहन के जादू धौं पस्यो है कौन ख्याल में । भूल्यो भौंह भाल में चुभ्यो कै टेढ़ी चाल में छक्यो कै छबिजाल में कै बौंध्यो बनमाल में ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

किधौं सु अवपक आप में मानहुं मिलो मलिन्द।
किधौं तनक ह्वै तम रह्यो कै ठोढ़ी को बिन्द॥

इति श्री कूर्मवंशावतंस श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्रीसवाई महाराज जगतसिंहाज्ञया कवि पद्माकर विरचित जगद्विनोद नामकाव्ये संचारीभावप्रकरणम् ॥ ४ ॥

अथ स्थायीभाव—दोहा।

रस अनुकूल विकार जो उर उपजत है आय।
थाई भाव बखानहीं तिनहीं को कविराय ॥१॥
है सब भावन में सिरे टरत न कोटि उपाव।
है परिपूरण होत रस तेई थाई भाव ॥ २ ॥
रति इक हास जु शोक पुनि बहुरि क्रोध उतसाह
भय गलानि आचरज निरवेद कहत कवि नाह॥
नव रस के नौई इते थाई भाव प्रमान।
तिनके लक्षण लक्ष सब या विधि कहत सुजान॥
सुप्रिय चाह ते होत जो सुमन अपूरब प्रीति।
ताही को रति कहत हैं रसग्रंथनि की रीति ॥

रति को उदाहरण—कवित्त ।

सजन लगी है कहूं कबहूं सिंगारन को त-जन लगी है कहूं ऐमे बसवारी को । चखन लगी है कछू चाह पद्माकर त्यों लखन लगी है मंजु मूरति मुरारी को ॥ सुन्दर गोबिन्द गुण गनन लगी है कछू सुनन लगी है बात बाँकुरेबिहारी को । पगन लगी है लगी लगन हिये मों नेकु लगन लगी है कछू पी को प्राणप्यारी को ॥६॥

दोहा ।

कान्ह तिहारे मान को अति आतप यह आय ।
तिय-उर-अंकुर प्रेम को जाइ न कहुं कुम्हिलाय॥
बचन रूप को रचन तें कछु उर लहै बिकास ।
ताते परमित जो हँसनि वहै जु कहियतु हाँस॥

अथ हांस को वर्णन पुनर्यथा—सवैया ।

चन्द्रकला चुनि चूनरी चारु दई पहिराय सुनाय सु होरी । वेंदी बिशाखा रची पद्माकर अंजन आँजि समाजि कै रोरी ॥ लागी जबै ल-लिता पहिरावन कान्ह को कंचुकी केसर बोरी ।

हेरि हरे मुसकाइ रही अँचरा मुख दे वृषभान-
किशोरी ॥ ६ ॥

दोहा ।

विवश न ब्रजवनितान के सखि मोहन मृदुकाय ।
चीर चोरि सुकदम्ब पै कछुक रहे मुसकाय ॥
अहित लाभहित हानि ते कछु जु हिये दुख होत
शोक सुथायी भाव है कहत कविन को गोत ॥

शोक को उदाहरण—कवित्त ।

मोहिं न सोच इतो तन प्राण को जाय रहै कि लहै लघुताई । येहु न सोच घनो पदमाकर साहिबी जो पै सुकण्ठही पाई ॥ सोच इहै इक बालबधू बिन देहिगो अंगद को युवराई । यों बच बालिबधू के सुने करुणाकर को करुणा कछु आई ॥ १२ ॥

दोहा ।

काम-बाम को खसम की भसम लगावत अंग ।
त्रिनयन के नैननि जम्यो कछु करुणा को रंग ॥
रिपुकृत अपमानादि ते परमित चित्त विकार ।
जु प्रतिकूल हिय हरष को वहै क्रोध निरधार ॥

क्रोध को उदाहरण—कवित्त ।

नद्दत विहद्द नृप राम दल बद्दल में ऐसो एक हौंही दुष्ट दानवदलन हौं। कहै पद्माकर चहै तो चहुं चक्रन को चीर डारों पल में पलैया पैजपन हौं॥ दशरथलाल ह्वै कराल कछु लाल परिभाषत भयोई नेकु रावनै न गनहौं। रीतो करों लंकगढ़ इन्द्रहि अभीतो करौं जीतौं इन्द्रजीतौं आजु तो मैं लच्छमन हौं॥ १५॥

दोहा ।

फारों बच्छ अच्छ को जो लगि मैं हनुमान।
तौलौं पलक न लाइहौं कछुक अरुण अँखियान॥
लखिउद्भटप्रतिभट जु कछु जगजगातचितचाव।
सहरष सौरनबीर को उतसाहस थिर भाव॥

उत्साह को उदाहरण - कवित्त ।

इत कपि रीछ उत राच्छसनहीं को चमू डङ्का देत बङ्का गढ लंका ते कढ़ै लगी। कहै पद्माकर उमण्ड जगही के हित चित में कछूक चोप चाप को चढ़ै लगी॥ बाननि के बाहिबे को कर

में कमान कसि धाई धूरधान आसमान में मढ़ै लगी। देखती बनी है दुहूँ दल की चढ़ाचढ़ी में राम दृगहू पै नेक लाली जो चढ़ै लगी ॥

दोहा।

मेघनाद को लखि लखन हरषि धनुष चढ़ाय।
दुखित बिभीषन दवि रह्यो कछु फूले रघुराय॥
बिकृत भयंकर के डरन जो कछु चित अकुलात
सो भय थायी भाव है वाकु सशंक जहँ गात॥

भय को उदाहरण—कवित्त।

चितै चितै चारो ओर चौंकि चौंकि परै त्योंही जहाँ तहाँ जब तब खटकत पात है। भाजन सो चाहत गँवार ग्वालिनी के कछू डरन डराने से उठाने रोम गात है॥ कहै पद्माकर सु देखि दसा मोहन की शेसहु महेसहु सुरेशहु सिहात है। एक पाय भीत एक पाय मीत काँधे धरे एक हाथ छीको एक हाथ दधि खात है॥२१॥

दोहा।

तीन पैग पुहुमी दई प्रथमहिं परम पुनीत।
बहुरिबढ़तलखिबामनहिं भे बलि कछुक सभीत॥

जहँघिनायचितचौजलखि सुमिरि परस मनमांह।
उपजत जो कछु घिन यहै ग्लानि कहत कविनांह॥

याही को नाम जुगुप्सा जानिये।

ग्लानि को उदाहरण—कवित्त।

आवत गलानि जो बखान करौं ज्यादा यह मादा मल मूत और मज्जा की सलीती है। कहै पद्माकर जरा तो जागि भीजी तब छीजी दिन रैन जैसे रैनुहीं को भीती है॥ सीतापति राम के सनेहबस बीती जो पै तौ तौ दिव्य देह यम-यातना तै जीती है। रीती रामनाम तें रही जो बिन काम तौ या खारिज खराब हाल खाल को खलीती है॥ २४॥

॥ दोहा॥

लखि विरूप शूरपनखैं सरुधिर चरबि चुवात।
सिय हिय में घिन की लता भई सु है है पात॥
दरस परस सुनि सुमिरि जहँ कानहुँ अजबचरित्र
होइ जु चित बिस्मित कछू सो आचरज पवित्र॥

याही को विस्मय थायीभाव जानिये।

अचरज को उदा०—सवैया ।

देखत क्यों न अपूरब इन्दु में है अरबिन्द रहे गहि लाली । त्यों पद्माकर कीरबधू इक मोती चुगै मनों ह्वै मतवाली ॥ ऊपर ते तम छाय रह्यो रबि की द्युति ते न द्वै खुलि ख्याली । यों सुनि बैन सखी के बिचित्र भये चित चक्रित से बनमाली ॥ २७ ॥

दोहा ।

नवकृत पुल लखि सिन्धु में भये चकित सुरराव ।
रामपाद्नत भे सबहिं सुमिरि अगस्त्य प्रभाव ॥
बिफल श्रमादिक ते जु कछु उर उपजत पछिताव
सद्गति हित निर्बेद सों समरस को थिर भाव ॥

निर्वेद को उदा०—सवैया ।

ह्वै थिर मन्दिर में न रह्यो गिरि कन्दर में न तप्यो तप जाई । राज रिझाये न कै कविता रघुराज कथा न यथामति गाई ॥ यों पछितात कछू पद्माकर कासों कहौं निज मूरखताई । स्वारथहूं न कियौ परमारथ योंहीं अकारथ बैस बिताई ॥ ३० ॥

पुनर्यथा सवैया ।

भोग में रोग वियोग सँयोग में योग में काय कलेश कमायो । त्यों पद्माकर बेद पुराण पढ्यो पढ़िकै बहु बाद बढ़ायो ॥ दौर्यो दुरास में दास भयो पै कहूं बिसराम को धाम न पायो । कायो गमायो सु ऐसेही जीवन हाय मैं राम को नाम न गायो ॥ ३१ ॥

दोहा ।

पद्माकर ह्यौं निज कथा कासों कहौं बखान ।
जाहि लखौं ताहै परी अपनी अपनीं आन॥३२॥

इति श्री कूर्मवंशावतंस श्रीमन्महाराजाधिराज राजेन्द्र श्री सवाईमहाराज जगतसिंहाज्ञया मथुरास्थाने मोहनलालभट्टात्मज कविपद्माकर विरचित जगद्विनोदनामकाव्ये स्थायीभावप्रकरणम् ॥ ५ ॥

अथ रसनिरूपण वर्णन—दोहा ।

मिलि बिभाव अनुभाव पुनि संचारिन के बृन्द ।
परिपूरण थिर भाव यों सुर स्वरूप आनन्द ॥

ज्यों पय पाय विकार कछु ह्वै दधि होत अनूप ।
तैसेही थिर भाव को वरणत कवि रसरूप ॥२॥
सो रस है नव भांति को प्रथम कहत शृङ्गार ।
हास्य करुणा पुनि रौद्र गनि वीर सुचारि प्रकार॥
बहुरि भयानक जानिये पुनि बीभत्स बखानि ।
अद्भुत अष्टम नवम पुनि सांत सुरस उर आनि॥

अथ शृङ्गाररस वर्णन ।

जाको थायी भाव रति सो शृङ्गार सु होत ।
मिलि बिभाव अनुभाव पुनि संचारिन के गोत ॥
रति कहियतु जो मनलगनि प्रीति अपर परजाय।
थायीभाव शृङ्गार के भल भाषत कविराय॥
परिपूरण थिर भाव रति सो शृङ्गार रस जान ।
रसिकन को प्यारी सदा कविजन कियो बखान॥
आलम्बन शृंगार के तियनायक निरधार ।
उद्दीपन सब सखि सखा बनबागादि बिहार ॥
हावभाव मुसकानि मृदु झमि औरहु जु विनोद ।
है अनुभाव शृंगार नव कविजन कहत प्रमोद ॥
उन्मादिक संचरत तहँ संचारी है भाव ।
कृष्ण देवता श्याम रँग सो शृँगार रसराव ॥

सो शृंगार है भाँति को दम्पति मिलन सँयोग।
अटक जहां कछु मिलन की सो शृङ्गार वियोग॥

संयोग शृङ्गार को वर्णन पुनर्यथा छप्पै।

कल कुण्डल दुहुं डुलत खुलत अलकावलि बिपुलित। खेद सीकरन मुदित तनक तिलकावलि सुललित॥ सुरत मध्य मति लसत हरष हुलसत चख चंचल। कवि पद्माकर छकित झपित झपि रहत दृगंचल॥ इमि नित विपरीत सुरति समै अस तिय सुख साधक जु सव। हरि हर विरंचि पुर उरगपुर सुरपुर लै कह काज अब॥ १२॥

दोहा।

तियपिय के पियतीय के नखशिख साजि शृङ्गार।
करि बदली तन मनहुं को दम्पति करत विहार॥
जहँ वियोय पिय तीय को दुखदायक अति होत।
विप्रलम्भ शृङ्गार सो कहत कविन को गोत॥

वियोग शृङ्गार को वर्णन पुनर्यथा—सवैया।

शुभ शीतल मन्द सुगन्ध समीर कछू छल छन्द से छ्वै गये हैं। पदमाकर चांदनी चन्दहू के कछू

ओरहि डौरन च्वै गये हैं ॥ मनमोहन सों बिछुरे इतही बनिकै न अबै दिन द्वै गये हैं। सखि वे हम वे तुम वेई बने पै कछू के कछू मन ह्वै गये हैं ॥ १५ ॥

पुनर्यथा सवैया।

धीर समीर सुतीर ते तीछन ईछन कैसहु ना सहती मैं। त्यों पद्माकर चांदनी चन्द चितै चहुंओरन चौंकती जो मैं ॥ छाय बिछाय पुरैन के पातन लेटती चन्दन की चवकी मैं। नीच कहा बिरहा करता सखि होती कहूं जो पै मीच मुठी मैं ॥ १६ ॥

ऐसी न देखी सुनी सजनी घनी बाढ़त जात बियोग की बाधा। त्यों पद्माकर मोहन को तब ते कल है न कहूं पल आधा॥ लाल गुलाल घलाघल मैं दृग ठोकर दै गई रूप अगाधा। कै गई कै गई चेटक सी मन लै गई लै गई लै गई राधा ॥ १७ ॥

दोहा ।

अटकि रहे कित कामरत नागर नन्दकिशोर ।
करहुं कहा पीकन लगे पिक पापी चहुंओर ॥
त्रिविध बियोग शृङ्गार यह इक पूरब अनुराग ।
बरणत मान प्रवास पुनि निरखि नेह की लाग॥
होत मिलन ते प्रथमही व्याकुलता उर आनि ।
सो पूरब अनुराग है बरणत कवि रसखानि ॥

पूर्वानुराग को उदा० पुनर्यथा—कवित्त ।

जैसो छवि श्याम की पगी है तेरी आँखिन में ऐसी छवि तेरी श्याम-आँखिन पगी रहै। कहै पद्माकर ज्यों तान में पगी है त्योंही तेरी मुसकानि कान्ह प्राण में पगी रहै॥ धीर धर धीर धर कीरतिकिशोरी भई लगन इतै उतै बराबर जगी रहै। जैसो रट तोहिं लागी माधवै की राधे वैसी राधे राधे राधे रट माधवै लगी रहै ॥२१॥

मोहिं तजि मोहनै मिल्यो है मन मेरो दौरि नैनहू मिले हैं देखि देखि साँवरो शरीर। कहै पद्माकर त्यों तान मय कान भये हौं तो रही

थकि थकि भूलो सो भ्रमो सो बौर ॥ ये तो निर-दई दई इनको दया न दई ऐसी दशा भई मेरो कैसे धरौं तन धीर । होतो मनहूं के मन नैनन के नैन जो पै कानन के कान तो पै जानतो पराई पीर ॥ २२ ॥

मधुर मधुर मुख मुरली बजाय धुनि धमकि धमारन की धाम धाम कै गयो । कहै पद्माकर त्यों अगर अबीरन को करिकै घलाघली छला-छली चितै गयो ॥ को है वह ग्वालिनी गुवालन के संग में अनंग छबिवारो रसरंग में भिजै गयो । द्वै गयो सनेह फिर छ्वै गयो छरा को छोर फगुवा न दै गयो हमारो मन लै गयो ॥ २२ ॥

दोहा ।

ज्यों ज्यों बर्षत घोर घन घन घमण्ड गरुवाइ ।
त्यों त्यों परति प्रचण्ड अति नई लगनकी लाइ॥
सूचक पिय अपराध को इङ्गित कहिये मान ।
त्रिविध मान सो मानिये लघु मध्यम गुरु आन॥
परतिय दरशन दोष तें करै जु तिय कछु रोष ।
सु लघु मान पहिचानिये होत ख्यालही तोष ॥

लघुमान वर्णन—कवित्त ।

वाही के रँगी है रँग वाही के पगी है मग वाही के लगी है सँग आनँद अगाधा को । कहै पद्माकर न चाह तजि नेकु दृग तारन ते न्यारो कियो एक पल आधा को ॥ ताहू पै गोपाल कछु ऐसे ख्याल खेलत हैं मान मोरिबे को दे-खिबे करि साधा को । काहू पै चलाइ चष प्र-थम खिझावैं फेरि बांसुरी बजाइ कै रिझाय लेत राधा को ॥ २७ ॥

दोहा ।

ये हैं जिन सुख वे दिये करति क्यों न हिय होस
ते सब अबहिं भुलाइयतु तनिक दृगन के दोस॥
और तिया के नाम कहुं पियमुख ते कढ़िजाय।
होत मान मध्यम मिटै सौंहनि किये बनाय ॥

मध्यम मान वर्णन कवित्त ।

बैसही लौं थोरी पै न भोरी है किशोरी यह याकी चित चाह राह और की मझैयो जिन । कहै पद्माकर सुजान रूपखान आगे आन बान आन की सुआन कै लगैयो जिन ॥ जैसे अब तैसे

साधि सोहनि मनाइ ल्याई तुम इक मेरी बात
येतो विसरैयो जिन। आजु की घरी ते ऐसे
भूलिहौ भलेहौ श्याम ललिता को लैकै नाम
बांसुरी बजैयो जिन ॥ ३० ॥

दोहा ।

आनिआनि तिय नाम लै तुमहिं बुलावत श्याम।
लैन कह्यों नहिं नाह को निज तिय को जो नाम
आनितियारत पीउ लखि होत मान गुरु आइ।
पाइ परें भूषण भरें छूटत कहूं बराइ ॥ ३२ ॥

अथ गुरुमान वर्णन कवित्त ।

नीकी को अनैसी पुनि जैसी होइ तैसी तऊ
यौवन की मूर तें न दूर भागियतु है। कहै पद्-
माकर उजागर गोविंद जो पै चूकि गे कहूं तो
एतो रोष रागियतु है ? ॥ प्रम रन हाय लै जगाय
लै हिये सों हित पाइलै पहिरि चलु प्रेम पागि-
यतु है। येरी मृगनैनी तेरी पाइ लगि बेनी पाइ
पाइ लगि तेरे फेर पाइ लागियतु है ॥ ३३ ॥

दोहा।

निरखि नेकु नीको बनो या कहि नंदकुमार ।
सुभुज मेलि मेल्यो गरे गजमोतिन को हार ॥
पिय जु होइ परदेश में सो प्रवास उर आन ।
जाते होत बधून को अति संताप निदान ॥३५॥
सो प्रवास है भांति को इक भविष्य इक भूत ॥
तिनके कहत उदाहरण रसग्रंथन के सूत ।

भविष्यत प्रवास को उदाहरण—सवैया।

औसर कौन कहा समयो कहा काज विवाद ये कौन सी पावन। त्यों पद्माकर धीर समीर उसीर भयो तपि के तन तावन॥ चैत की चांदनी चारु लखि चरचा चलिबेकी लगे जु चलावन। कैसी भई तुम्हें गंग की गैल में गोत मंलारन के लगे गावन॥ ३७॥

दोहा।

रमनगमन सुनि ससिमुखी भई दिवस को चन्द।
परखि प्रेम पूरण प्रगट निरखि रहे नँदनंद ॥

नये प्रवास को उदाहरण—सवैया।

कान्ह पगे कुबजा के कलोलनि डोलनि छोड़

दई हर भांती। माधुरी मूरति देखे बिना पद्माकर लागे न भूमि सोहाती॥ का कहिये उनसों सजनी यह बात है आपने भाग समाती। दोष बसंत को दीजै कहा उलहै न करील की डारन पाती॥ ३९॥

पुनर्यथा कवित्त।

रैन दिन नैनन ते बहती न नीर कहा करती अनंग की उमंग भर आपती। कहै पद्माकर त्यों राग बाग बन कैसो तैसो तन ताय ताय तारापति तापती॥ कीन्हा जो वियोग तो सँयोगहू न देतो दई देतो जो सँयोग तो वियोगहि न थापती। होता जो न प्रथम सँयोग सुख वैसो वह ऐसो अब तो न या वियोग दुख व्यापती॥४०॥

दोहा।

सुनत सँदेश विदेश तजि मिलते आय तुरंत।
समुझो परत सखान्त जहँ तहँ प्रगव्यो न बसंत॥
इक वियोग शृङ्गार में इती अवस्था थाप।
अभिलाषा गुणकथन पुनि पुनि उद्वेग प्रलाप॥

चिंतादिक जे षट कहो बिरह अवस्था जानि ।
संचारी भावन बिषे हों आयहुँ जु बखानि ॥
तातै इत वर्णत न मैं अभिलाषादिक चार ।
तिनके लच्छण लच्छ सब हों भाषत निरधार ॥
तियअरु पिय जो मिलनकी करैं बिबिध चितचाह।
ताही को अभिलाष कहि बरणत हैं कबिनाह ॥

अभिलाष को उदाहरण कवित्त ।

ऐसी मति हाति अब ऐसो करौं आली बन-माली के शृंगारि मे शृंगारिबाई करिये । कहै पद्माकर समाज तजि काज तजि लाज को ज-हाज तजि डारिबाई करिये ॥ घरी घरी पल पल छिन छिन रैन दिन नैनन की आरती उ-तारिबाई करिये । इंदु ते अधिक अरविन्द तें अं-धिक ऐसो आनन गोविंद को निहारबोई करिये॥

दोहा ।

पिय आगम ते प्रथमही करि बैठी तिय मान ।
कब धौं आइ मनाइहैं यही रही धरि ध्यान ॥
करै बिरह में जो जहां पियगुण गुणन बखान ।
ताही को गुणकथन कहि बरणत सुकबि सुजान॥

गुणकथन को उदाहरण—कवित्त।

हौंहूं गई जान तित आइगो कहूं ते कान्ह आनि बनितानहूं को झपकि झलौ गयो। कहै पद्माकर अनंग की उमंगनि सों अंग अंग मेरे भरि नेह को छलौ गयो॥ ठानि ब्रज ठाकुर ठगोरिन की ठेलाठेल मेला के मझार हित हेला के भलौ गयो। काहू कूं छला छ्वै छिगुनी छ्वै छग छोरन छ्वै छलिया छबीलो छैल छाती छ्वै चलौ गयो॥ ४९॥

पुनर्यथा - सवैया।

चोरन गोरिन में मिलिकै इते आई ही हाल गुवाल कहां की। को न बिलोकि रह्यो पदमाकर वा तिय की अवलोकनि बांकी॥ बीर अबीर की धुंधुरि में कछु फेर सों कै मुख फेरि कै झांकी। कै गई काटि करेजनि के कतरे कतरे पतरे करिहां की॥ ५०॥

दोहा।

गुणवारे गोपाल के करि गुणगणनि बखान।
इक अवधिहि के आसरे राखति राधा प्रान॥

बिरहबिथा अकुलाइ उर त्यों पुनि कछु न सुहाय।
चित न लगत कहूँ कैसहूं सो उद्वेग बनाय ॥

उद्वेग को उदाहरण—कवित्त ।

घर ना सुहात ना सुहात बन बाहिरहूं बाग ना सुहात जे खुशाल खुशबोही सों । कहै पद्माकर घनेरे धन धाम त्योंहीं चन्द ना सुहात चांदनीहूं जोग जोही सों ॥ सांझ ना सुहात ना सुहात दिन मांझ कछू व्यापी यह बात सो बखानत हौं तोही सों । राति ना सुहात ना सुहात परभात आली जब मन लागि जात काहू निरमोही सों ॥ ५३ ॥

दोहा ।

ह्वै उदास अति राधिका ऊंची लेति उसास ।
सुनि मनमोहन कान्ह को कुटिल कूबरी पास ॥
बिरही जन जहँ कहत कछु निरखि निरर्थक बैन ।
ताकों कहत प्रलाप हैं कवि कविता के ऐन ॥

प्रलाप को उदाहरण—कवित्त ।

आम को कहत अमिली है अमिली को आम आकही अनारन को आँकिबो करति है । कहै

पद्माकर तमालन को ताल कहै तालनि त-माल कहि ताकिबो करति है ॥ कान्है कान्ह कहूं कुहि कदली कदम्बनि को भेटि परिरम्भन में छाकिबो करति है। सांवरे जू रावरे यों बिरह बिकानी बाल बन बन बावरी लौं ताकिबो करति है ॥ ५६ ॥

प्रानन के प्यारे तन ताप के हरणहारे नन्द के दुलारे ब्रजवारे उमहत हैं। कहै पदमाकर उरूजे उर अन्तर यों अन्तर चहेंहूं जे न अन्तर चहत हैं ॥ नैननि बसे हैं अंग अंग हुलसे हैं रोम रोमनि रसे हैं निकसे हैं को कहत हैं। ऊधो व गोबिन्द कोऊ और मथुरा में यहां मेरे ता गोबिन्द मोहि मोहि में रहत हैं। ५७ ॥

॥ दोहा ॥

निरखतघनघनश्यामकहि भेंट नउठति जु बाम।
विकल बीचही करत जनु करि कमनैती काम॥
दशा वियोगहि की कहत जु है मूरछा नाम।
जहँ न रहत सुधि कौनहू कहा शीत कह घाम॥

मूर्छा को उदाहरण – कवित्त ।

ऐहो नन्दलाल ऐसी व्याकुल परी है बाल
हालही चलौ तो चलौ जोरी जुरि जायगी ।
कहै पदमाकर नहीं तो ये झकोरै लगैं ओरे लौं
अचाक बिन घोरे घुरि जायगी ॥ भीरे उप-
चारन घनेरे घनसारन को देखतही देखौ
दामिनी लौं दुरि जायगी । तौहीं लग चैन
जौलौं चेती है न चन्दमुखी चेतैगी कहूं तौ
चांदनी में चुरि जायगी ॥ ६० ॥

दोहा ।

तौहीं तौ भल अवधि लौं रहै जु तिय निरमूल ।
नहिं तौ क्योंकरि जियहिगो निरखी शूल सि फूल॥

इति शृंगाररस वर्णन ।

अथ हास्य रस वर्णन दोहा ।

थाई जाको हास है वहै हास्य रस जानि ॥
तहँ कुरूप कूदब कहब कछु विभाव तै मानि ॥
भेद मध्य अरु ऊंच स्वर हँसिबोई अनुभाव ॥
हरष चपलता औरहू तहँ संचारी भाव ॥ ६३ ॥

श्वेत रंग रस हास्य को देव प्रथम पति जासु।
ताको कहत उदाहरण सुनत जो आवै हास॥

हास्य रसको उदाहरण—कवित्त।

हँसिर भाजैं देखि दूलह दिगम्बर को पाहुनी जे आवैं हिमाचल के उछाह में। कहै पद्माकर सु काहू सों कहै को कहा जोई जहां देखै सो हँसेई तहां राह में॥ मगन भयेऊ हँसे नगन महेश ठाढ़े और हँसे एऊ हँसहँसके उमाह में। सीस पर गंगा हँसै भुजनि भुजंगा हँसै हांसही को दंगा भया नंगा के विवाह में॥

दोहा।

कर मूमर नाचत नगन लखि हलधर को स्वांग।
हँसि हँसि गोपी फिर हँसै मनहुं पिये सो भांग॥

अथ करुणा रस लक्षण—दोहा।

आलम्बन प्रियको मरण उद्दीपन दाहादि॥
थाई जाको शोक जहँ वहै करुणा रस यादि॥
रोदति महिपति नादि जहं बरणत कवि अनुभाव
निर्वेदादिक जानिये तहँ संचारी भाव॥ ६८॥
चित्र कबूतर के बरण बरुण देवता जान।
या विधिको या करुणारस बरणत कवि कविताान॥

करुणा रस को उदाहरण—कवित्त ।

आंसुन अन्हाय हाय हाय कै कहत सब औधपुरबासी के कहा यों दुःख दाहिये । कहै पद्माकर जलूस युवराजी को सु ऐसो धनी है न जाय जाके सीस बाहिये ॥ सुत के पयान दशरथ ने तजे जो प्रान बाढ्यो शोकसिंधु सो कहां लौं अवगाहिये मूढ़ मंथरा के कहे बन को जु भेजे राम ऐसी यह बात कैकेई को तो न चाहिये ॥ ७० ॥

दोहा ।

राम भरतमुख मरण सुनि दशरथ के बनमांह ।
महि परिभे रोदत उचरि हा पितु हा नरनाह ॥

अथ रौद्ररस थाई वर्णन दोहा ।

थाई जाको क्रोध अति वहै रौद्र रस नाम ।
आलम्बन रिपु रिपु उमड उद्दीपन तिहि ठाम ॥
भृकुटिभंग अति अरुणाई अधर दसन अनुभाव ।
गरव चपलता औरहू तहँ संचारी भाव ॥ ७१ ॥
रक्त रंग रस रौद्र को रुद्र देवता जान ।
ताको कहत उदाहरण सुनहु सुमति दै कान ॥

अथ रौद्ररस वर्णन—कवित्त ।

बारि टारि डारौं कुम्भकर्णहिं बिदारि डारौं मारौं मेघनादै आज यों बल अनन्त हौं । कहै पदमाकर त्रिकूटही को ढाहि डारौं डारत करेई यातुधानन को अन्त हौं ॥ अच्छहि निरच्छ कपि रुच्छ ह्वै उचारौं इमि तोसे तिच्छ तुच्छन को कछु वै न गन्त हौं । जारि डारौं लंकहि उजारि डारौं उपबन फारि डारौं रावण को तौ मैं हनुमन्त हौं ॥ ७५ ॥

दोहा ।

अधम चब्ब गहि गब्ब अति चहि रावण को काल ।
दृग कराल मुख लाल करि दौरेउ दशरथलाल ॥
जा रस को उत्साह शुभ है इक थाई भाव ।
सुरस बीर है चारि विधि कहत सबै कविराव ॥
युद्ध बीर इक नाम है दया बीर बिय नाम ।
दान बीर तीजो सुपुनि धर्म बीर अभिराम ॥
युद्ध बीर को जानिये आलम्बन रिपु जोर ।
उद्दीपन ताको तबहि पुनि सेना को मोर ॥७६॥

अँग फरकन दृग अरुणाई इत्यादिक अनुभाव।
गरव असूया उग्रता तहँ संचारी भाव ॥ ८० ॥
इन्द्र देवता बीर को कुन्दन बरण बिशाल।
ताको कहत उदाहरण मुनि जन होत खुशाल ॥

अथ बीर रस बर्णन—कबित्त।

सोहै अत्र ओढ़े जे न छोड़े सीस संगर की लंगर लँगूर उच्च ओज के अतङ्का में। कहै पद्माकर त्यों हुंकरत फुंकरत फैलत फलात फाल बाँधत फलंका में ॥ आगे रघुबीर कै समीर के तनै के संग तारी दै तड़ाक तड़ातड़ के तमंका में। संका दै दसानन को हंका दै सुबंका बीर डंका दै बिजै को कपि कूदि पर्‌यो लंका में ॥

पुनर्यथा कबित्त।

जाही ओर सार परै घार घन ताही ओर जोर जंग जालिम को जाहिर दिखात है। कहै पद्माकर अरीन को अवाई पर साहब सवाई की ललाई लहरात है ॥ परिघ प्रचण्ड चमू हरषित हाथी पर देखत बनत सिंह माधव को गात है। उद्धत प्रसिद्ध युद्ध जीतिहो के सौदा छित रौदा ठनकारि तन हौदा में न मात है ॥८३॥

दोहा ।

धनुषचढ़ावत भे तबहिं लखि रिपु कृत उतपात ।
हुलसि गात रघुनाथ को बखतर में न समात ॥

अथ दयावीर को वर्णन—दोहा ।

दया वीर में दीन दुख बरणत आदि बिभाव ।
दूरि करब दुख मृदु कहब इत्यादिक अनुभाव ॥
सुधृत चपलता औरहूं तहँ संचारी भाव ।
दया वीर बरणत सबै याही बिधि कबिराव ॥

अथ दयावीर को उदा० – सवैया ।

पापी अजामिल पार कियो जेहि नाम लियो सुतही को नरायन । ज्यों पद्माकर लात लगे पर विप्रहु के पग चौगुने चायन ॥ को अस दीन दयाल भयो दशरत्थ के लाल से सूध सुभायन । दौरे गयन्द उबारिबे को प्रभु बाहन छोड़ि उबाहने पायन ॥ ८७ ॥

दोहा ।

मिले सुदामा सों जु करि समाधान सनमान ।
पग पलोटि मग श्रम हरेउ ये प्रभु दयानिधान ॥

अथ दान वीर वर्णन दोहा।

दान समय को ज्ञान पुनि याचक तीरथ गौन।
दान वीर के कहत हैं ये विभाव मति भौन ॥
तृण समान लेखत सुधन इत्यादिक अनुभाव।
व्रीड़ा हरषादिक गनौ तहँ संचारी भाव ॥९०॥

दानवीर को उदा०—कवित्त।

बकसि वितुण्ड दिये झुण्डन के झुण्ड रिपु मुण्डन की मालिका दई ज्यों त्रिपुरारी को। कहै पदमाकर करोरन को कोष दिये षोड़सहू दीन्हें महादान अधिकारी को ॥ ग्राम दिये धाम दिये अमित अराम दिये अन्न जल दीने जगती के जीवधारी को। दाता जयसिंह दोय बाते तो न दीनो कहूं वैरिन को पीठि और डीठि पर-नारी को ॥ ९१ ॥

पुनर्यथा कवित्त।

सम्पति सुमेर की कुवेर की जु पावै ताहि तुरत लुटावत विलम्ब उर धारै ना। कहै पद-माकर सुहेम मय हाथिन के हलके हजारन के वितर उचारै ना। गंजगज बकस महीप रघुनाथ

राव याहि गज धोखे कहूं काहू देइ डारै ना।
याही डर गिरिजा गजानन को गोइ रही गि-
रति गरे तें निज गोद तें उतारै ना॥ ९२॥

दोहा।

दै डारे जनु भिच्छुकनि नहिं रावणहिं सुलंक।
प्रथम मिल्यो याते प्रभुहि सुविभीषण ह्वै रंक॥

अथ धर्मबीर वर्णन—दोहा।

धर्म बीर को कवि कहत ये बिभाव उर आन।
बेद सुस्मृति शीलन सदा पुनिपुनि सुनब पुरान॥
बेद विहित श्रम बचन बपु औरहु है अनुभाव।
धृति आदिक बरणत सुकबि तहं संचारी भाव॥

धर्मबीर को उदा॰—कवित्त।

तृण को समान धनधान राज त्याग करि
पाल्यो पितु वचन जो जानत जनैया है। कहै
पद्माकर बिवेकही को बानों बीच साँचो सत्य
बीर धीर धीरज धरैया है॥ सुस्मृति पुराण वेद
आगम कह्यो जो पन्थ आचरत सोई शुद्ध करम
करैया है। मोदमतिमन्दर पुरन्दर मही को धन्य
धरम धुरन्धर हमारो रघुरैया है॥ ९६॥

दोहा ।

धारि जटा बलकल भरत गन्यो न दुख तजि राज
भे पूजत प्रभु पादुकन परम धरम के काज ॥

अथ भयानक वर्णन दोहा ।

जाको थाई भाव भय वहै भयानक जान ।
लखन भयंकर गजब कछु ते विभाव उर आन ॥
कम्पादिक अनुभाव तहँ संचारी मोहादि ।
कालदेव कौला बरण सुभयानक रस यादि ॥

भयानक को उदा० पुनर्यथा कबित्त ।

झलकत आवे झुण्ड झिलम झलानि झप्यो तमकत आवें तेग वाही औ सिलाही है। कहै पद्माकर त्यों दुन्दुभी धुकार सुनि अक बक बोलै यों गनीम औ गुनाही है ॥ माधव को लाल कालहू तें विकराल दल साजि धायो ये दई दई धौं कहा चाही है । कौन को कलेऊ धौं करैया भयो काल अरु कापे यों परैया भयो मजब दुलाही है॥ १०० ॥

पुनर्यथा कबित्त ।

ज्वाला की जलन सी जलाक जंग जालन

की जोर की जमा है जोम जुलुम जिलाहे की। कहै पदमाकर सु रहियो बचाये अग जालिम जगत सिंह रंग अवगाहे की ॥ दौरि दावा दारन पै हार सी दिवाकर की दामिनी दमंकनि दलेल दिग दाहे की। काल की कुटुम्बिन कला है कुलि कालिका की कहर की कुन्तकी नजरि कछवाहे की ॥ १ ॥

छप्पै।

भुवन धुन्धुरित धूलि धूलि धुन्धुरित सु धूमहु। पदमाकर परतच्छ स्वच्छ लखि परत न भूमहु ॥ भग्गत अरि परि पग्ग मग्ग लग्गत अँग अंगनि। तहँ प्रताप पृथिपाल ख्याल खिलत खुलि खग्गनि ॥ तहँ तबहिं तोपि तुंगनि तड़पि तंतड़ान तेगनि तड़कि। धुकि धड़ धड़ धड़ धड़ धड़ा धड़ धड़ धड़ात तबा धड़कि ॥ २ ॥

दोहा।

एक ओर अजगरहि लखि एक ओर मृगराजु।
विकल बटोही बीचही परो मूरछा खाजु ॥ ३ ॥

अथ बीभत्सरस बर्नन दोहा।

थाई जासु गलान है सो बीभत्स गनाव ।
पीब मेद मज्जा रुधिर दुर्गन्धादि बिभाव ॥ ४ ॥
नाक मूंदिबो कम्प तन रोम उठब अनुभाव ।
मोह असूया मूरछादिक संचारी भाव ॥ ५ ॥
महाकाल सुर नील रँग सु बिभत्स रस जानि ।
ताको कहत उदाहरण रस ग्रन्थनि उर आनि ॥

अथ बीभत्स को उदा०—छप्पय ।

पढ़त मन्त्र अरु यन्त्र अन्त्र लीलत भूमि जुग्गिनि । मनहुं निलत मदमत्त गरुड़ तिय अरुड़ उरुग्गिनि ॥ हरबरात हरषात प्रथम परसत पलपंगत । जहँ प्रताप जिति जंग रंग अँग अंग उमंगत ॥ जहँ पद्माकर उत्तपति अति रन रक्त नद्दिय बहत । चख चकित चित्त चरबीन चुभि चकाचकाइ चण्डी रहत ॥ ७ ॥

दोहा ।

रिपु अन्त्रन की कुंडली करि जुग्गिनि जु चबाति
पीबहि में पागी मनो युवति जलेबी खाति ॥

अथ अद्भुत रस बर्नन दोहा

जाको थाई आचरिज सो अद्भुत रस गाव ।
असंभवित जेते चरित तिनको लखत बिभाव ॥
बचन बिचल बोलनि कँपनि रोमउठनि अनुभाव।
बितरक शंका मोह ये तहँ संचारी भाव ॥१०॥
जासु देवता चतुर मुख रंग बखानत पीत ।
सो अद्भुत रस जानिये सकल रसन को मीत ॥

अद्भुत रस को उदा०—कबित्त ।

अधम अजान एक चढ़िकै बिमान भाष्यौ पूछत हौं गंगा तोहिं परि परि पाइहौं। कहै पद्माकर क्रुपा करि बतावै सांचो देखे अति अद्भुत रावरे सुभाइ हौं ॥ तेरे गुण गानहूं की महिमा महान मैया कानकान नाइ कै जहान मध्य छाइ हौं। एक मुख गाये ताकै पंच मुख पाये अब पंच मुख गाइहौं तौ केते मुख पाइहौं ॥

पुनर्यथा कबित ।

गोपी ग्वाल माली जुरे आपुस में कहैं आली कोऊ यसुदा के औतार्यो इन्द्रजाली है । कहै पद्माकर करै को यों उताली जापै रहन न

पावै कहूं एको फन खाली है ॥ देखे देवताली भई विधि कै खुशाली कूदि किलकत काली हेरि हँसत कपाली है। जनम को चाली येरी अद्भुत दै ख्याली आजु काली की फनाली पै नचत बनमाली है ॥ १३ ॥

मुरली बजाइ तान गाइ मुसकाय मन्द लटकि लटकि माई नृत्य मैं निरत है। कहै पद्माकर गोबिन्द के उछाह अहि-विष को प्रवाह प्रति मुख ह्वै भिरत है ॥ ऐसो फैल परत फुसकारही ते मैं मानो तारन को वृन्द फूतकारण गिरत है। कोप करि जौलौं एक फन फुफकावै काली तौलौं बनमाली सोऊ फन पै फिरत है॥

सात दिन सात राति करि उतपात महा मारुत भकोरै तरु तोरै दीह दुख में। कहै पद्माकर करी त्यों धूम धारनहूं एते पै न कान्ह कहूं आयो रोष रुख में ॥ छोरि छिगुनी के छत्र ऐसो गिरि छाइ राख्यो ताके तरे गाय गोप गोपी खरी सुख में। देखि देखि मेघन की सेन

अकुलानी रह्यो सिन्धु में न पानी अरु पानी इन्दु मुख में ॥ १५ ॥

दोहा ।

घन वर्षत कर पर धर्यो गिरि गिरिधर निरशंक
अजब गोपसुत चरित लखि सुरपति भयो सशंक॥

अथ शान्तरस वर्णन—दोहा ।

सुरस शान्त निर्वेद है जाको थाई भाव ।
सतसंगति गुरु तपोवन मृतक समान विभाव ॥
प्रथम रुमांचादिक तहां भाषत कवि अनुभाव ।
धृति मति हरषादिक कहे सुभ संचारी भाव ॥
शुद्ध शुक्ल रँग देवता नारायण है जान ।
ताको कहत उदाहरण सुनहु सुमति दै कान्ह ॥

शान्ति रस को उदाहरण—सवैया ।

बैठि सदा सतसंगहि में विष मानि विषै रस कीर्त्ति सदाहीं । त्यों पद्माकर झूठ जितो जग जानि सुज्ञानहिं के अवगाहीं ॥ नाक की नोक में डीठि दिये नित चाहै न चीज कहूं चित चाहीं । सन्तत सन्त शिरोमणि है धन है धन वे जन वैपरवाहीं ॥ २० ॥

दोहा ।

बनबितान रविशशिदिये फलभख सलिलप्रवाह।
अवनि सेज पंखा पवन अब न कछू परवाह ॥
सब हित तें बिरकत रहत कछू न शंका त्रास ।
विहितकरत सुनहितसमुझि शिशुवत जे हरिदास॥

इति नवरस निरूपणम्—दोहा ।

जगतसिंह नृप हुकुम तें पद्माकर लहि मोद ।
रसिकन के वश करन को कीन्हों जगतविनोद॥

इति श्री कूर्मवंशावतंस श्री महाराजराजेन्द्र श्रीसवाई महाराजजगतसिंहाज्ञया कविपद्माकरविरचितजगत्विनोदनामकाव्येषष्टमोऽध्याय:

॥ समाप्तः ॥

काव्य के ग्रन्थ ।

पुलकशतक और तिलशतक	/)	अलङ्कारदर्पण	/)
अङ्गदर्पण	/)	अङ्गरत्नाकर	/)
अन्योक्तिकल्पद्रुम	।/)	अङ्गादर्श	।)
अष्टयाम	/)	अलंकारमञ्जरी	।)
इश्कनामा	/)	उपदेशपंचाशिका	)॥
उपालम्भशतक	/)	ऊधोपदेश	।/)
वृन्दावनशतक	/)	कवित्तवर्णावलि	॥)
कुण्डलिया	/)॥	केशोदासकृत नखशिख	/)
केशोमाहात्म्य भाषा	।)	कविकुलकण्ठाभरण	/)

काशीकविसमाज का प्रथम वार्षिकोत्सव /)

काशी कविसमाज के प्रथम वार्षिकोत्सव की समस्या पूर्तियां /)

काशी कविसमाज की समस्यापूर्तियां प्रथम भाग ॥)
दूसरा भाग ॥) तीसरा भाग ॥) चौथा भाग ॥)
पांचवां भाग २॥) कुल ५)

काशी कविमण्डल की समस्यापूर्तियां प्रथम भाग ॥)
तथा दूसरा भाग ।)

कलियुगपचीसी और काशीमेलाबतीसी /)

कर्णाभरण (प्रसिद्ध अलंकार का ग्रन्थ है गोविन्दकविकृत) /)

कविकीर्तिकलानिधि	/)	काव्यनिर्णय	॥)
घनाक्षरी-नियमरत्नाकर	।)	चरणचन्द्रिका	/)
चेतचन्द्रिका	।/)	भाषा सत्यनारायण	/)
छन्दोमञ्जरी	॥)	छन्दरत्नावली	[illegible]
जगद्विनोद	॥)	जुगलरसमाधुरी	/॥
जञ्जीरा	/)	ददरीक्षेत्र माहात्म्य	/)
देवयानी	/)	भाषाभूषण	/)
दीपप्रकाश	/)	दृष्टान्ततरङ्गिणी	/)
नारायणप्रकाश	१॥)	नखसिख	/)
नीतिकुण्डल	/)	पदमावत	१॥)
प्रेममाधुरी	/)	प्रतापमोदतरङ्गिणी	/)
प्रियाप्रीतमविलास	।)	पावसपचासा	/)
प्रबोधपचासा	/)	पद्माभरण	/)
प्रातःस्तुतिपाठ	/)	पजनेसप्रकाश	।)
फागचरित्र	।/)	बजरंगबत्तीसी	/)
बलभद्रकविकृत नखसिख	/)	बामामनरञ्जन	।)
बुढ़ियाबखान	/)	बीरोल्लास	।)
बिरहदिवाकर	/)	बसन्तमञ्जरी	/)
बसन्तविकाश	/)	बिहारीसतसई	१॥)
हरदेवविनोदसतसई	।)	बद्रीनाथयात्रा	//)॥
बदमाशदर्पण	/॥	बरवै नायिकाभेद	/)
बलवीरपचासा	/)	बिरहा	/)

भाषाभूषण	=)	रामरसायन अयोध्याकाण्ड	१)
भवानीविलास	।=)	रसिकविनोद	=)
भक्तिविलास	=)	रामकलेवा	=)
भ्रमरगीत	-)	रसकुसुमाकर	५॥)
मनरञ्जनसंग्रह	।=)	रसप्रबोध	।=)
मनोहरप्रकाश	१॥)	रहस्योत्सव	=)
मनोजमंजरीचारोभाग	१=)	रघुनाथशतक	=)
मानसरहस्य	।)	राजनीति	=)
महेश्वरचन्द्रचन्द्रिका	१॥)	राधासुधाशतक	=)
महेश्वरविनोद	१)	रागमाला	=)
रुक्मिणीपरिणय	१॥)	लक्ष्मीविलास	।=)
भावविलास	।=)	रामरसायनआरण्यकाण्ड	॥)
भावरसामृत	।)	रससिन्धुप्रकाश	॥)
हिततरङ्गिणी	=)	रसिकरञ्जन रामायण	१)
भड़ौआसंग्रहचारोभाग	॥=)	रतनहजारा	॥)
मनरञ्जनप्रकाश	।)	रसराज	।)
मनोविनोद	=)	रसकौमदी	॥)
मानसविनोद	।)	रावणेश्वरकल्पतरु	१)
महेश्वरसुधाकर	॥)	रामचन्द्र नाम शतक	-॥
महेश्वरविलास	१)	रसविलास	।)
रामचन्द्रभूषण	॥=)	लोकोक्तिरसकौमुदी	।=)
रामरसायन बालकाण्ड	१)	ललितललाम	॥)

लक्ष्मणशतक	=)	विक्टोरियारानी	=)
वाणीभूषण	≡)	विज्ञानमार्त्तण्ड	।)
विज्ञानबोध	≡)	बृहद्व्यंग्यार्थचन्द्रिका	।=)
व्यङ्ग्यार्थकौमुदी	।)	शिवाशिवशतक	=)
शिवचरितामृत	१॥)	शिशुरामायण	।)
शिकारशतक	=)	शृङ्गारसतसई	।)
शृङ्गारलतिका	।=)	शृङ्गारनिर्णय	।=)
शृङ्गारसुधाकर	२॥)	शृङ्गारदर्पण	॥)
शकुन्तला उपाख्यान	।)	श्यामाता	।)
श्यामासरोजनी	।)	षट्ऋतुवर्णन	=)
सुन्दरशृङ्गार	।)	सुजानरसखान	≡)
सिखमनोरञ्जन	१)	सुन्दरीसिन्दूर	=)
सुन्दरीसुपन्थ	=)	सुन्दरीसर्वस्व	२)
स्नेहलीला	=)	सुन्दरकाण्ड	-)
किष्किन्धाकाण्ड	=)॥	सङ्कटमोचन	-॥
सुन्दरीविलास	।≡)	सुधानिधि	॥)
सुधासर प्रथम भाग	॥)	सूररामायण	।=)
साहित्यरत्नाकर	=)	सुजानसागर	॥)
हिंडोला	।)	हम्मीरहठ	।)
हनुमन्नाटक	१।)	हनुमानछबीसी	=)

मैनेजर।

भारतजीवन प्रेस बनारस सिटी।